

नायकत्व के लिए शिक्षार्थी बनना

"आत्मा को सोखना और दूसरों को अभिशिक्त करना।"

मार्क और पैटी विर्कलर

नायकत्व के लिए शिक्षार्थी बनना

"आत्मा को सोखना और दूसरों को अभिशिक्त करना।"

यह छोटी पुस्तक, दोनों लेखकों के मिली जुली मेहनत का नतीजा है। मिल जुल कर पढ़ाई कर इन विषयों और विचारों को प्रगट किया गया है। जो अनुभव बताए गए हैं वह दोनों को लिए सामान्य है। सर्वनाम "मैं" का प्रयोग हम दोनों के विचारों की एकता बताता है।

मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखा गया
प्रतिलिप्यधिकार १९९५

मसीही नायकत्व विश्वविध्यालय
द्वारा प्रकाशित

विषय

परिचय	शिक्षार्थी के प्रारम्भिक दिनों के मेरे अनुभव
अध्याय एक	वे लोग जिनकी आत्माएँ मैंने पाईं
अध्याय दो	आत्मिक दोस्तों के लिए भूख
अध्याय तीन	दोस्तों, उपदेशकों, शिक्षकों, चेले: इन में क्या भेद हैं?
अध्याय चार	चेले बनाने का कारण
अध्याय पाँच	परमेश्वर को अति आवश्यक चेले के रूप में पहचानना
अध्याय छः	चेले और शिक्षार्थी के विशिष्ट लक्षण
अध्याय सात	पहचानना की आपके शिक्षक कौन थे
अध्याय आठ	पहचानना की आप कहाँ हैं
अध्याय नौ	पहचानना की आगे परमेश्वर आपको कहाँ लेजाना चाहता है
अध्याय दस	वह उपदेशक, शिक्षक और चेले कौन हैं जिन्हें परमेश्वर आपको देना चाहता है
अध्याय ग्याराह	प्रवेश करना और रोचक चेलेपन का रिश्ता
अध्याय बाराह	अच्छा चेला बनना
परिशिष्ट अ	शिक्षकों और चेलों के लिए एक नमूना कार्यक्रम

परिचय :

शिक्षार्थी के प्रारम्भिक दिनों के मेरे अनुभव

मैं एक दुग्धशाला में पला बड़ा हुआ हूँ, जहाँ पर मेरे माता पिता ने जीवन के हर क्षेत्र की शिक्षा मुझे दी, जिस में मेरे जीवन के आत्मिक व्यवसाय और भावमय पहलू भी शामिल है।

सप्ताह के अन्त में जो पैसे मिलते थे उससे मुझे मेहनत करने की खुशी का आभास होता था। मैंने वह सब हुनर सीखे जिनके लिए मैं जीवन भर उन का आभारी रहूँगा। मुझे वह दोपहर याद है जब मेरे पिता मुझे और मेरे भाई को लेकर घास के ढेरे पर लेकर गए जहाँ हमें घास काटने वाले यंत्र को ठीक करना था जो कई वर्षों के उपयोग के कारण टूट गया था। उन्होंने सीडी, आरी, काठ कबाड और कीलें लाने में हमारी मदद करी और फिर हमें बनाने की विधि समझा कर स्वयं रिसी और काम में लग गए। जब मैं सीडी पर चढ़ कर एक फट्टे को आरी से काटने लगा तो मेरे मन में यह विचार आया की, "मुझे जो समय लग रहा है उससे कई गुणा कम समय में पिताजी इस कार्य को झट से कर सकते थे।" परन्तु वे हमें एक कार्य सिखा रहे थे। वे हम पर नज़र रखे हुए थे पर हमें कार्य करने दे रहे थे। मैं कई नए कार्य सीख रहा था जिस के लिए मैं उनका बहुत आभारी हूँ।

वे शिक्षक (जो हमें शिक्षा देते हैं), हमारे जीवन में कई रूप में आते हैं। वे हमें आत्मिकता में निर्देश देते हैं, व्यवसाय से सम्बंधित कार्यों में शिक्षा प्रधान करते हैं और वे हमें निजी कौशल में भी शिक्षा प्रधान करते हैं और साथ ही साथ हमें मन को शांत रखने की शिक्षा भी देते हैं।

हर व्यक्ति चाहता है की कोई उन्हें शिक्षा दे (जैसे महान शिक्षक और सिध्दांत सिखाने वाले)। सिध्दांत सिखाने वाले हमारे दोस्त होते हैं जो हमारे जीवन के लिए अपना समय देते हैं। परेशानी और मुसीबत, बदलाव और उन्नती के समय हम इन लोगों की ओर मुड़ते हैं। वे हमारे जीवन में शिक्षा की गती की तीव्रता को बढ़ाते हैं और कुछ सामान्य गलतीयाँ, जिन्हें हम साधारण रूप में कर सकते हैं, करने से रोकने में हमारी मदद करते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ की जब आप अपने बीते हुए जीवन पर दृष्टि डालेंगे तो आप कुछ ऐसे शिक्षकों को याद करेंगे जिन्होंने आप के जीवन में कई रूप में लागत

लगाई है। जो मुझे याद आते हैं वे हैं, सहपाठी, पादरी, अध्यापक, उपदेशक और आत्मिक सलाहकार जिन्हें मेरे जीवन में मुझे अच्छी बातें बताईं।

यीशु ने बाराह चेलों की सेवा महान शिक्षक के रूप में की। वह उन के साथ साथ चला, उनके साथ बात चीत की और जैसे चाहते थे की वे (चेले) अपना जीवन बिताएँ, वैसे उन्होंने खुद अपना जीवन जी कर दिखाया। प्रशिक्षण देने के बाद उन्होंने उनसे प्रश्न किया, ताकी उनके शिक्षा का स्तर उन्हें पता चल सके और फिर अधिक सपष्टता से बताया की वे अपनी समस्याओं का समाधान कैसे कर सकते हैं। हम यूहन्ना ६:५,६ में पढ़ते हैं:।

यीशु शिक्षा देने में और चेले बनाने में माहिर थे और यह हमें एक स्तर और नमूना प्रधान करता है इस अधभुत विषय को पढ़ने के लिए।

चेले बनाना (या शिक्षा प्रधान करना) एक तीव्र तरीका है शिक्षा प्राप्त करने का और यीशु ने यही विधी अपनाई थी। हम अपने जीवन में इन अनुभवों को अपना कर अच्छा करेंगे। चलीए हम उत्सुक्ता से आगे बढ़ते हैं, यह खोजने के लिए की हम शिष्य बनते हुए शिष्य कैसे बनाते हैं।

निजी प्रयोग अभ्यास के लिए :

शिक्षा उस समय पूर्ण होती है जब हम परमेश्वर के साथ बात चीतकरते हैं और स्वयं अपने साथ भी। इस प्रकार का निजी सामना इब्रानी शिक्षा का करीका है, परन्तु यूनानी ने केवल बिखरी सूचना प्रधान करी। आप को इब्रानी शिक्षा का तरीका अपनाने की सलाह दी जाती है। अपने पास एक लिखने के लिए पुस्तक रखीए और हर अध्याय के बाद जो निजी प्रयाग प्रश्नावली दी गयी है उसे लिख लीजीए। जैसे आप इस पुस्तक पर कार्य करते हैं, उसी प्रकार आप उन्नती करते जाएं। आप के जीवन की राह में आप दोस्तों, शिक्षकों और गुरुओं से आशीषित हों।

अध्याय एक

वे लोग जिनकी आत्माएँ मैंने पाईं

मेरे जीवन में ऐसे लोग भरे हुए हैं, जिन्होंने मेरे जीवन पर गहरा पिरभाव डाला है और मुझे पराक्रमी तौर से बदल दिया है। मैंने उनमें एक उपहार या एक आत्मा देखी है (ढंग, प्रेरणा, या चरित्र चिन्ह) जिसके लिए मैं भूखा था, इस कारण मैंने बहुत समय इन के साथ बिताया ताकी वह सब मुझ में समा जाए।

यह शिक्षार्थी के रिश्ते का अन्तर भाग है: आत्मा को पा कर दूसरों को अभिषिक्त करना। उदहारण के लिए, चेलों ने यीशु में एक आत्मा और एक अभिषेक देखी जिसकी वे इच्छा रखते थे। डेढ़ साल के करीब उसके साथ बिताने के बाद, उसे कार्य करते हुए देखते हुए और उसके साथ अभ्यास करते हुए, उन्होंने वही अभिषेक और वही आत्मा को पाया। तब वे स्वयं जाकर याशु की तरहा प्रचार करने लगे। उसने उन्हें वही आत्मा और अभिषेक दिया जो उसके पास था। जब मैं दूसरों का शिक्षार्थी बनता हूँ तो यही पाने की आशा रखता हूँ।

मैंने यह प्रगटन कई तरह से पाया: शिक्षित करने वालों के साथ रह कर, उनके शिक्षा के टेपों को सुन कर, उनको प्रचार करते हुए देखते हुए, उनकी पुस्तकों को पढ़ कर, और उनके साथ प्रचार करते हुए। मैं आपके साथ कुछ कहानीयों को बाँटना चाहता हूँ जो मेरे जीवन में मेरे साथ घटी हैं और जो यह बताती हैं की यह मेरे साथ किस प्रकार हुआ।

एक पुस्तक के माध्यम से प्रारम्भिक शिक्षा :

मेरे मुक्ति पाने के तुरन्त बाद, १५ वर्ष की आयु में मैंने ३०० - ४०० पन्ने की एक पुस्तक पढ़ी जिसका नाम था, **द ऐपौस्टल (चेला)**। यह पौलुस चेले के जीवन पर एक उपन्यास था, और उसने मुझे आकर्षित किया और मेरी विध्व्युत शक्ति ने यह निर्णय लिया की मुझे उसीकी करहा बनना है। एक मुख्य वाक्य जो मुझे अधिक पसन्द आया और जो कई वर्षों तक मेरा आदर्श वाक्य बना रहा वह है, "जिस कसी शहर में पौलुस ने प्रवेश किया, वहां या तो उध्दार आ जाता था या उपद्रव मच जाता था।" मैं चाहता था की मेरे बारे में भी यही कहा जाए। और ऐसा हुआ, कई वर्षों तक। परन्तु, सामान्य रूप से उध्दार से अधिक उपद्रव होता था, जिसके कारण मैं इतना घायल हो गया था की पंद्राह वर्षों के बाद मुझे मेरा आदर्श वाक्य बदलना पड़ा, इस समय यूहन्ना चेले से: "छोटे बच्चो, एक दूसरे से प्रेम करो।" यह अब तक, ४३ वर्ष की आयु में भी मेरा आदर्श वाक्य है।

अभिमान और पक्षपात के साथ प्रारम्भिक शिक्षार्थी जीवन। :

सनातनी और सिद्धान्ति गिरजाघर को छोड़, मैंने आत्मा (ढंग) और निवारक, अभिमान और वह सब जो अपनी जाति से नहीं निकल रहा था, उसे त्यागने की शिक्षा को चुना। खास तौर से मैंने अनेय भाषा बोलने वालों और उदारचित को तुच्छ माना। यह उलटा शिक्षार्थित्व था, परन्तु यह भी शिक्षार्थित्व ही था। इस आग में तेल डालने का काम किया मसिही पक्षपातहीन कला कालेज के मेरे एक प्रध्यापक ने। कक्षा में वे सदा चमत्कारी चेष्टा की डरावनी बातें बताया करते थे। उनके व्यंग पर मुझे खुशी होती थी।

कालेज में शिक्षार्थी बना :

एक और प्रध्यापक जिसने मेरे जीवन पर गहरी छाप छोड़ी वे थे प्रध्यापक ऐण्डरसन। वे हमें "मसीह का जीवन" पढ़ाया करते थे, परन्तु वे असल रूप में उनकी आत्मा (ढंग) के बारे में बताया करते थे। उन्होंने मुझे परमेश्वर के नम्र और प्रज्वलित प्रेम के बारे में बताया, जिस के कारण उसे जानने की एक जिगयासा पैदा हुई। जब मैं और मेरी पत्नि इस अधेड़ सज्जन के बारे में सोचते हैं तो हम अच्छी यादों में लौट जाते हैं। उन्होंने अपनी आत्मा हमारे अंदर भर दी और हमें सर्वदा के लिए बदल दिया।

यही बात मेरी पत्नि के पिता, लाईली हडसन, ने भी करी। उनका आदर्श वाक्य था, "जितना तुमसे हो सकता है, हर व्यक्ति के साथ शान्तिपूर्वक रहो"। इस बात ने मेरे तत्त्वरूपी व्यवहार में नमी लाई, क्योंकि जैसे की मैं आपको बता चुका हूँ की मेरा पहले लक्ष्य था, उपद्रव या उध्दार। स्मुख आगमन से मैं संतुष्ट होता था। अब, मैं एक विभिन्न आत्मा पा रहा था, एक शान्ति बनाने वाले की आत्मा। और लाईली ने इस आत्मा को माना और इसके बारे में बताया। हम दोनों ने जो साथ में समय बिताया है, उसमें उन्होंने मुझे पूर्ण रूप से बदल डाला है।

प्रचार करते हुए शिक्षार्थी बनना :

फिर बारी आई मेरे पहले पादरी की, रेवर्नड राय स्ट्रौब, एक वैसली के पादरी, जिनके नेत्रत्व में मैंने काम किया। उन्होंने भेड़ों के प्रति नम्र प्रेम और बिना विवाद के प्रचार के महत्व के बारे में मुझे बताया। तीन वर्षों तक मैं उन के नेत्रत्व में काम करता रहा और हम दोनों में कभी भी किसी प्रकार की फूट नहीं आई, केवल अधभुत उन्नती और अधभुत अनुभव। प्रचार में प्रवेश के लिए कितना सुहाना परिचय! मैं हमेशा उन वर्षों को सुन्दर यादों की तरह देखता हूँ।

जब मैं और पैटी कुछ और लोगों के स्पर्क में आए तो मैं फिर से बदलने लगा। उन में पहली थीं, जूडी औस्टीन, एक अध्यापिका जिन के नेत्रत्व में पैटी काम करती थी। वे पहली चमत्कारणी थी जिनके साथ मेरा रिश्ता था। वे हमें अपने घर बुलातीं और अधभुत भोजन परोस्तीं थी। (यह सच में कालेज के भोजनालय के भोजन से अच्छे थे।) उन में जीवन की चिंगारीयां थीं। मैंने उन के जैसे जीवन से भरपूर या परमेश्वर को स्मर्पित व्यक्ती को नहीं देखा। वे चंगाई और चमत्कार और मुक्ती की कहानीयां जो बताती थीं वह बिलकुल ही अविश्वासनीय थीं। मेरा उनके साथ मुख दर मुख वार्तालाप ने मेरी पिछली शिक्षाओं और ढंगों को झिंझोडके रख दिया था। वे इतनी अच्छी और प्यारी और मसीह की तरह और ताकतपूर्ण कैसे हो सकती थीं? मुझे जो ऐसे लोगों के बारे में शिक्षा दी गया थी उसके हिसाब से ऐसा नहीं हो सकता था।

मैं एक मुख्य सच्चाई सीख रहा था :

निजी मुठभेड सप्ताह में हर एक दिन की शिक्षा को मात दे देती है। और यह दैवीप्रकाश अब मेरे पढाई के तरीके में प्रवेश करता है, चाहे वह मेरे स्वयं द्वारा किसी नये विषय को सीखना हो, या मैं अध्यापक के रूप में किसी और को शिक्षा दे रहा हूँ। यूनानी तरीके से सीखने का मतलब है की भिखरी हुई सूचना प्राप्त करना। इब्रानी करीका है निजी मुठभेड। मैं यूनानी से इब्रानी में बदल गया हूँ और दूसरों को भी यही करने के लिए कहता हूँ। पवित्रशास्त्र में भी इब्रानी तरीके सिखाये गये हैं और उदहारण दिये गये हैं। पश्चिम में मसीहत का पटरी से उतरे रहने का एक मुख्य कारण, शिक्षा की ओर गलत तरीके का झुकाव है। उन्होंने इब्रानी जो बाईबल का करीका है, उसे अपनाने के बदले यूनानी करीके को अपनाया है।

निजी मुठभेड के इस अनुभव ने मेरे अंदर एक दृढ प्रेरणा को उज्जागर किया की कभी भी, दूसरे लोगों के कहने पर, अपने मन में, किसी व्यक्ति, समूह या जाति के लिए, बुरे विचार न लाऊँ। मुझे स्वयं लोगों से मिल कर उनसे बात करनी है, क्योंकि अधिकतर कियों में वे उतने बुरे नहीं होते जितना की उनके बारे में बताया जाता है। जो मुझे प्रारम्भ में उलटी शिक्षा मिली थी, उसके साथ अनुभवी शिक्षा को मिलाने से मेरे जीवन पर एक कभी न खत्म होने वाला दृढ विश्वास उत्पन्न होता है जो एक गहरी छाप छोड जाता है। सनातनी मसीहत जिस में मैं बढा हुआ हूँ, उससे मेरा यह नया विचार एक दम ही अलग है। मैं दूसरों के बारे में बुरी शिक्षा या कहानीयां नहीं सुन सकता। मैं उनसे मिलकर उन्हें इसमें से बाहर निकालता हूँ और

ढूँढता हूँ की असल में वे कौन हैं और उन्होंने जीवन की सच्चाई और बहुमूल्यता के बारे में क्या जाना है। इस करीके ने कई नए उपहारों को खोज निकाला है जो मेरे उपदेशों और रीतियों से अलग हैं और मेरे जीवन की राह में चलते हुए मेरी आत्मिकता को बढ़ाया है।

निषेध किये गये का अन्वेषण करना :

अब मैं बदल रहा था। मैं चमत्कारी चेष्टा को खोजने लगा था। मैं एक चमत्कार से भरपूर गिरजाघर गया और अराधना करते चेहरों को ध्यान से देखने लगा, क्योंकि मुझे सिखाया गया था की वहाँ असंतुलित, अस्थिर व्यक्ति होते हैं। परन्तु, जो मुझे नज़र आया वह, प्रेम, खुशी, शांती और जीवशक्ति थी। अविश्वासनीय, यह कैसे हो सकता था? क्या मेरी शिक्षा पूरी तरह से गलत थी? मैं चमत्कारी शिक्षकों को ढूँढने लगा, जो मुझे आत्मा के करीकों के बारे में बता सकते थे। कैसट देने वाले पुस्तकालय में कई हज़ारों शिक्षा के टेप मिल गए। मैंने हज़ारों को सुना। कुछ शिक्षक जो मेरे तरीके और जो मेरे विचारों से मेल खाते थे, उनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैं एक विश्लेषण सम्बंधि खोजी/शिक्षक था। इस कारण मैं दूसरे विश्लेषण सम्बंधि शिक्षकों से प्रेम करने लगा। उस समय मेरे मुख्य शिक्षक डैरिक प्रिंस थे। मैंने उनके लगभग ४५० कैसट सुनें और जो भी मैं उनसे सीख सकता था उसे नैंने पूर्ण रूप से सोक लिया। उन्होंने मुझे बुनयादी चमत्कारी अध्यात्मविध्या प्रधान करीं। और मुझे विश्वास है की मैंने कुछ और भी साखा, चाहे मैंने कई वर्षों तक इसके बारे में कुछ नहीं कहा। वह एक सिध्दांत है जिसे मैं २० वर्षों से जी रहा हूँ।

शिक्षार्थी बनने की मुख्य चाबी है शिक्षा :

जब मैं किसी व्यक्ति को मिलता हूँ, जिस में वह आत्मा या अभिषेक या समझ है, जिसकी मुझे इच्छा है, तो मैं उस व्यक्ति को सोक लेता हूँ जब तक मुझे उसकी आत्मा, उपहार या अभिषेक नहीं मिल जाता। मैं चाहता हूँ की वह मुझ में ऐसे समा जाए की ऐसा लगे की वह जितना उसकी है उतनी मेरी भी हो। मैं विश्वास करता हूँ की शिक्षार्थी जीवन के कठिन विषय में ऐसा ही होता है। हमें दूसरों की आत्मा और अभिषेक मिलता है। यदि हो सका तो मैं उसके निजी प्रचार के तैहत बैठता हूँ (मुझे भाई प्रिंस के निजी प्रचार के तैहत कुछ समय तक बैठने का अवकाश प्राप्त हुआ)। मैं उन के टेप सुनता हूँ और हर पुस्तक जो वे लिखते हैं उनको पढ़ता हूँ। जो मुझे पसन्द आती है उन मुख्य पुस्तकों और टेपों को बार बार पढ़ता और सुनता हूँ। मेरा सीखने का तरीका लिखने का द्वारा है। जब तक मैं लिख नहीं लेता वह मेरे शब्द नहीं लगते। इस कारण मैं किताबों में मुख्य वाक्यों के नाचे लकीरें खेंचता हूँ, विषयों को लिख लेता हूँ और अपने स्वयं के सारांश लिख लेता हूँ, जिन्हें मैं तब तक प्रयोग में लाता हूँ और पढ़ता हूँ, जब तक वे मेरा अंश नहीं बन जाते। तब मैं बढ़त और उन्नती का अगला कदम उठाता हूँ, जो परमेश्वर मुझे बताता है। मैं इस करीके को बीस वर्षों से प्रयोग में ला रहा हूँ और इस से बहुत फायदा हुआ है।

अब मैं एक अनोखा मिश्रण हूँ, उनका जिन्होंने अपने आप को मेरे साथ मिला दिया, इन के साथ उस अनोखे व्यक्तित्व का जो परमेश्वर ने मुझे दिया है, और यह सब मुझे उस जीवन की थाली में परोसा गया है, जो परमेश्वर ने मेरे सामने रखी है। इसका नतीजा यह हुआ की दुनिया भर की सैर करते हुए, मैंने लगभग पचास पुस्तकें लिख डालीं हैं और पिछले दस वर्षों से इस ग्रह के लगभग हर बड़े गिरजाघर में प्रचार कर चुका हूँ।

गलतीयों २:२० के दैवी प्रकाशन में शिक्षार्थी :

उन वर्षों में न केवल डैरिक प्रिंस ने मुझे प्रभावित किया और मेरे जीवन को पूर्ण रीप से बदल डाला, परन्तु मैल्कम स्मिथ ने बी मुझ पर इसी करहा का प्रभाव डाला। वे इस समय में मेरे दूसरे प्रभवशाली शिक्षक थे। मैंने उनके लगभग १५० टेपों को सुना और मुझे पता चला की उन में दैवी प्रकाशन बकाने की क्षमता है, जिसकी मुझे भी इच्छा थी। उन से मैंने साखा की वचनों और पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों द्वारा, कहानीयों को जोड़ते हुए, इसे कैसे किया जा सकता है। मैंने जाना की दैवी प्रकाशन

केवल आत्मा से आता है और मैं सच्चाई से आत्मा की गहराई को खोजने लगा। मुझे यह भी आभास हुआ की भाई स्मित का गहरा दैवी प्रकाशन था की मसीह हमारा जीवन है और अब हम नहीं हैं जो जीवन बिता रहे हैं। मैंने उन्हें सह उपदेश देते हुए बार बार सुना। मैं इस दैवी प्रकाशन ज्ञान को भी पा लेना चाहता था। जिस गिरजाघर में मैं पादरी था, वहाँ पर मैंने भाई स्मित को उपदेश देने के लिए आमन्त्रित किया और इस तरह मैं उन से निजी तौर से मिल कर बात चीत कर सका। उन्होंने मुझे बताया की जिन्होंने उन्हें इस दैवी प्रकाशन की शिक्षा दी है, वे नौरमैन ग्रब हैं। सो मैंने नौरमैन ग्रब द्वारा लिखित हर पुस्तक खरीद ली और बार बार पढ़ने लगा। "गौड अनलिमीटोड इन डेली लिविंग" (प्रती दिन के जीवन में असीमित परमेश्वर) पुस्तक को बार बार पढ़ कर, उस पर प्रार्थना करने के बाद, आखिरकार मुझे दैवी प्रकाशन मिल गया और मेरे जीवन में बत्तीयां जल उठीं। मैंने तुरन्त इस दैवी प्रकाशन को अपने शब्दों में डालना प्रारम्भ कर दिया और उस में जीने लगा और उसके विषय में प्रचार करने लगा। अब तक मैंने इसी "मसीही जीवन" के दैवी प्रकाशन के बारे में दो पुस्तकों में लिखा है: "अबाइडिंग इन क्राईस्ट" (मसीह में बने रहना), पहली पुस्तक है और दैवी प्रकाशन का अध्यात्म विध्या सम्बन्धी अधिक अनुवाद और "नैचुरली सुपरनैचुरल" (स्वभाव मे आलौकिक)। यह अधिक प्रयागिक, बहता अनुवाद है, जो वर्षों बाद लिखा गया है।

सीखने की एक और चाबी :

पुराने नियम में, परमेश्वर ने आज्ञा दी थी की, जब इस्राएल में, कोई नया राजा, राजगद्दी पर बैठे, तो उसका पहला कर्तव्य था की वह बाईबल की पहली पाँच पुस्तकों को स्वयं लिखे (व्यवस्थाविवरण १७:१८)। परमेश्वर जानता है की जब हम लिखते हैं तो हम उन बातों को देखते हैं, जिन्हें हम ने पहले कभी नहीं देखा। मैंने इस सिद्धांत के २५ वर्षों से प्रयोग करता आया हूँ।

जिन लोगों के बारे में पढ़ रहा हूँ, उन की सच्चाईयों को लिखने का एक और कारण यह है की मैं हर व्यक्ति जो हर बात को कहता है, मैं उस से सहमत नहीं होता, केवल पवित्रशास्त्र को छोड़ कर। इस कारण, मैं उन भागों को अलग करना चाहता हूँ, जिन से मैं सहमत हूँ और उन्हें उस राती से पेश करना चाहता हूँ, जो मेरा हृदय और दिमाग स्वीकार करता है। इसका यह अर्थ नहीं की मैं सच्चा हूँ और वे सब झुठे हैं। नहीं, इसका अरथ यह है की जिस उम्र का मैं हूँ और मेरे स्वभाव और अनुभव जो परमेश्वर ने मुझे दिया है, यह सब से अच्छा और साफ करीका है सच को बताने का, क्योंकि मैं हमेशा बढ रहा हूँ और बदल रहा हूँ, और

क्योंकी हमारे मन की ज्योती अधिक चमकीली होती दाती है जब तक की सूर्योदय ना हो और सवेरे का तारा हमारे मनो में उग ना जाए (२ पतरस १:१९), मैं हमेशा बदलता रहूँगा औक मेरी पुस्तकें भी बदलती रहेंगी। मैं एक काले काँच के द्वारा देखता हूँ, इसलिए मैं यह ऐलान नहीं करऊँगा की मेरे पास सब सच है, परन्तु यह की मेरे इस सीमित जीवन में इतनी सच्चाई ही मैं ढूँढ पाया हूँ। इसका यह अर्थ है की वे सच्चे हैं। मैं उन को नहीं आंक सकता। परमेश्वर आँकेगा। मैं केवल उनकी आत्मा और अभिषेक से बह पाता हूँ जो मैं मेरे जीवन के इस समय में सम्भाल सकता हूँ।

शिक्षित होने का यह अर्थ नहीं की हर क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सहमत हो जाए मैं समझता हूँ की मुझे साफ कर देना चाहिए क्योंकि वहां कई धर्म खोजी हैं जो मेरे शिक्षकों से, जिन्होंने मुझे सिखाया है, उन से खुश नहीं हैं। क्योंकि कोई व्यक्ति मुझे शिक्षा देने वाला बना, तो इसका यह अर्थ नहीं की मैं जो वह कहे उसे सच मान लूँ और ना ही इस का अर्थ यह है की उन्होंने मुझे सिखाया है वही मैं दूसरों को भी सिखाऊँ। इस का अर्थ यह है की मैंने उस व्यक्ति के मन, अभिषेक और ज्ञान से कुछ लिए हैं जिन्हें मैं अपने जीवन में अपनाना चाहता हूँ। चाहे मैं, मैलकम स्मित और नौरमैन ग्रब की शुक्षा की हर बात से सहमत नहीं हूँ, परन्तु फिर भी उन लोगों का मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव है। मैलकम स्मित का कई बार मेरे गिरजाघर आकर उपदेश देने से आशिषित हुआ और इस करहा उन्होंने किताबों, कैसटों और व्यक्तिगत रूप से मुझ को शिक्षा दी - मेरे ख्याल से एक लुभाने वहमी संधि।

जीतने की आत्मा पाने के लिए शिक्षार्थी होना :

अर्ण बैकस्टर एक और व्यक्ति था जिसने अपनी आत्मा मुझे दी। एलिम बाईहल इंस्टिट्यूट में मैंने उन्हें उपदेश देते सुना था। उन्होंने मुझे सिखाया की परमेश्वर की आत्मा से, विश्वास के साथ राष्ट्रों को मसीह के लिए कैसे जीता जा सकता है। इस से पूर्व मैंने कभी इतना शक्तिशाली उपदेश नहीं सुना था और कई वर्षों बाद इस बात की गहरी समझ मेरे पास आई गैरी नार्थ और डेविड किलटन के उपदेशों से, जिन्होंने पुनर निर्माण के बारे में बताया।

मैं पुनर निर्माण करने वाला नहीं हूँ। परन्तु, राष्ट्रों को चेला बनाने के लिए विश्वास का होना अवश्यक है, जो मैंने उन से सीखा और एक समझ है की बाईहल को किस तरह समझाया जाएकी वह विश्वास के उस स्तर को बढ़ावा दें जो उन्होंने मुझे दिया था। अर्ल पौलक भी राज्य की इंजील का संदेश इसी तरह सुनाते हैं। भाई पौलक इस बात पर अधिक दबाव डालते हैं की यह पवित्रात्मा की शक्ति से

होता है बजाए पुनर निर्माण के जो पवित्रशास्त्र के सिध्दामत की ताकत की ओर झुकता है। मैं दोनों से ही सहमत नहीं हूँ, फिर भी उन्होंने मुझे आत्मा और समझ प्रधान करी, जो मैं समझता हूँ की मुख्य है। मैंने वीपरीत आत्माओं से सतर्क रहना भी सीखा है, जो हो सकता है की उन में हो और मैं नहीं चाहता की वह मुझे मिल जाए। इन शिक्षकों को, जो उन के विपरित जाता है, तो उन पर आक्रमन करना बहुत आसान होता है। मैं सतर्क हूँ की उस तरह की आत्मा मुझ में न हो, क्योंकि यह वही अलगाव की आत्मा है जिस में मुझे शिक्षित किया गया है, जब मैं ने पहली बार मुक्ति पाई थी और तब से मैं इस से झुटकारा पाना चाहता था। मैं इसे वापस नहीं लेना चाहता।

अचानक मुलाकातों की लडीयों के माध्यम से परमेश्वर हमें शिक्षा देना चाहता है :

तब मेरे शिक्षार्थी जीवन ने एक नया मोड़ लिया। परमेश्वर, गिरजाघर में, डीतरी चागाई को आगे ला रहा था और पादरी होने के नाते मेरी दिलचस्पी खी क्योंकि जीवन ने मुझे यह सीखाया की पादरी होने के नाते जो उपदेश के यंत्र का प्रयोग मैं करता था, वह हर एक की अवश्यताओं के लिए काफी नहीं थे। मुझे और "शक्ति यंत्रों" की आवश्यकता थी। इस कारण, मैं भूखा था और खोज रहा था। इस किस्से में जो अध्यापकों की कतार लग गई थी, वह बहुत उलढनवाली और अदभुत है, क्योंकि परमेश्वर ने इतने दैवी मुकाबलों को जोडा है की मैं हैरान हो गया हूँ।

इस की शुरुआत हुई, मेरे इस बात के निर्णय से (या परमेश्वर मुझे प्रोत्साहित कर रहा हो) की मैं, हैरिस विलकौक्स की, बरजन, उध्दार तम्बू सभाओं में उपस्थित हूँ। हमारी भाई हैरिस से पहलि सुलाकात एक निलामि करने वाले के प में हुई थी, जब वे मेरे ससुरजी के खेतों के यंत्र की निलामि करने आए थे। जब मैं तम्बू के पीछे मेज पर रखि पुस्तकों को देख रहा था, तो मेरी दृष्टि माईकल स्कैनलान, जो एक कैथोलिक पादरी है, उनके व्दारा अंदरूणि चंगाई पर लिखी एक पुस्तक पर पडी। मैंने उसे पढा और वह बहुत लाभदायक निकली और मुझे उससे मदद मिली, तो मैंने उन्हें फोन कर के आमणत्तर किया की वे मेरे गिरजाघर आकर भीतरी चंगाई पर उपदेश दें। वे अगले दो या तीन वरेषों तक व्यस्त थे, परन्तु उन्होंने पादरी डैनिस और मैट लिन से संपर्क करने को कहा, जो उस समय न्यू यार्क शहर में अगले दो सप्ताह में भीतरी चंगाई पर सभा करने वाले थे। मैंने न्यू यार्क से संपर्क किया और आखरी पल में अपने और पैटी के लिए सभा में शामिल होने के लिए दो सीटें बुक कर लीं। हम इस कैथोलिक रिट्रीट सेंटर, बहुत उत्सुक्ता के साथ पहुचे। हम इससे पहले कभी किसी रोमन कैथोलिक पादरीयों के उपदेश को सिनने नहीं बैठे थे। हम दोनों ही थोडे घबराये हुए थे क्योंकि हमें रोमन कैथोलिक चर्च की बुराईयों के बारे में शिक्षा दी गयी थी।

परन्तु पादरी डैनिस और मैट की आत्मा, उपहार और अभिषेक को देख कर हम दंग हो गये। उनके जैसे प्यारे और मसीही व्यक्तियों से हम पहले कभी भी, कहीं भी नहीं मिले थे। उनके मुख्य शब्द थे, प्रेम और यीशु। इन्होंने मेरे कैथोलिक की बुराईयों के विचारों को पूर्ण रूप से रौंद दिया था और मैंने जाना की कैथोलिक होते हुए भी परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं। उस सप्ताह ने हमें इतना थका दिया था की हम बीच में ही छोड़ कर जाना चाहते थे, परन्तु फिर भी हम ठहरे रहे और वे बातें जिन्हें मैं पहले स्वीकार नहीं करता था, अब वर्षों बाद उन्हें स्वीकार करने लगा हूँ।

उदहारण के लिए, चीजों पर छिड़कने के लिए हमें पवित्र पानी दिया गया। मैंने अपना अस्वीकार कर दिया। अब मैं समझता हूँ की यदि पौलुस चंगाई के अभिषेक के लिए पवित्र रुमाल का प्रयोग कर सकते थे तो, हम यकीनन चंगाई के पानी का प्रयोग कर सकते हैं। यह बिलकुल वही सिद्धांत है - दैवी शक्ति को निर्जीव वस्तु में डाला गया है और उस के द्वारा उस तक वह पहुँचति है जो उसे छू लेता है।

उस सप्ताह हमारे जीवन अटलता से हदल गये। पहला, परमेश्वर ने मेरी अध्यात्मविध्या सम्बंधी डिब्बों की किनारियों को उड़ा दिया और मुझे बताया की कैथोलिक गिरजाघर में भी उसके बच्चे हैं। दूसरा, पादरी डैनिस और मैट हमें परमेश्वर के साथ गहरे अनुभवों और मुकाबलों में ले गये, जो पवित्रात्मा की शक्ति से मिलता है और इस से पहले कभी ऐसे अनुभव मेरे जीवन में नहीं हुए थे। तीसरा, मुझे नृत्य के इतने सुन्दर भावों के माध्यम से, आराधना के बारे में पता चला, जो मैं प्रोटेस्टैण्टीजम में आज तक नहीं देख पाया। और चौथा, मैंने पादरी डैनिस और मैट की हर एक पुस्तक खरीद ली और उन्हें घर ले गया, पढ़ा और उन में से कई सप्ताह तक उपदेश देने लगा। यह मुझे भीतरी चंगाई पर उत्तेजित प्रचार की ओर ले गए।

और सबसे अदभुत, उन किताबों में हर पन्ने के नाचे दी गयी टिप्पणीयाँ मुझे एक एपिस्कोपैलियन पादरी के पास ले गयीं जिन्हें परमेश्वर के अनुभव का पूरा आभास था और वे इस बात को, दार्शनिक, अध्यात्मविध्या, मानसिक बुद्धि, मानस शास्त्र और अभ्यासिक स्वरूपों से बता सकते थे। क्या अदभुत जुगलबन्धी है। मैं परमेश्वर की आवगज सुनने के लिए व्याकुल था और इस पादरी लिस के साथ मिलकर, उस वर्ष मुझे कई तरीके बताए। ये बहुत थका देने वाले तरीके थे। यह एपिस्कोपैलियन पादरी, मेरे विचार में (जिस विचार से मैं बड़ा हुआ हूँ और जो मैं हूँ) यह कोई प्रचारक नहीं है। मुझे मौका मिला की मैं निजी तौर से उन्हें सुन सका,

जब वे बफैल्लो आए थे और एक सप्ताह का प्रशिक्षण दिया था। वहाँ, उनके और मेरे बीच के भेद, दर्द पूर्वक दिखने लगे, और चाहे उन्होंने मेरे जीवन की सबसे मुख्य चाबी मुझे दी थी (परमेश्वर की आवाज सुनने और दर्शन पाने के क्षेत्र में), फिर भी आज तक मुझे हम दोनों के बीच आत्माविध्या सम्बंधि दूरीयों का अनुभव होता है। परन्तु, मैंने उनकी कम से कम पंद्राह किताबें पढ़ी हैं, कु को तो कई बार पढ़ा है। मैं अपने किताबों की शैल्फ तक गया और इस पादरी की वह किताब उठा ली जिस ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला था। मैंने उसे जकड लिया और कई प्यारी यादें आने लगीं और एक इच्छा हुई की मैं उसे फिर से पढ़ूँ, क्योंकि उसे आखरी बार पढ़े पंद्राह वर्ष हो चुके थे। मुझे यकीन है की जब मैं उसे दुबारा पढ़ूँगा तो कुछ नई बातें मेरे दिमाग में आएंगी।

शिक्षा पाने में सबसे बड़ा खतरा :

मैं यह सब कुछ झिझक के साथ लिख रहा हूँ, क्योंकि मुझे पता है की कई लोग इस सूचना से परिक्षा में पड जाएंगे। एक आंदोलन शुरू हो सकता है, जो कहेंगे की, "की देखो, इसे अशुध्द आत्माविध्या वालो लोगो ने शिक्षा दी है। इसलिए, हमें इसके इस कार्य को धुतकारना होगा।" मैंने कई बार भूतकाल में मेरे शिक्षकों के नाम छुपाए हैं, क्योंकि, जब मैंने उनके नाम लिए, तब कई सनातनी मसीहो ने मुझपर हमला करके कहा, की मुझे इन पुस्तकों को पढना त्याग देना चाहिए। इस कारण मैंने इस बात को छुपाया है की मैंने किन लोगों से सीखा है। परन्तु, मैं ऐसी स्थिती में हूँ, जहाँ मैं बिलकुल भी ध्यान नहीं देता की लोग क्या कह रहे हैं। आप कुछ लोगों को कभी ही तृप्त नहीं कर सकते, और मेरा जीवन मेरा है। उसे दूसरों के साथ बाँटना चाहिए। परमेश्वर, अच्छों और बुरों, दोनो पर वर्षा करता है, इसलिए अशुध्द आत्माविध्या वाले लोग भी (जिन में हम सब भी शामिल हैं), परमेश्वर का दैवी प्रकासन पा सकते है। मैंने पहले भी कहा है और अभी फिर कहता हूँ की, मैं हर उस बात से सहमत नहीं हूँ, जो मेरे शिक्षक मुझे सिखाते हैं। बहुत कुछ बातें हैं जिन से मैं सहमत नहीं हूँ। मुझे यह नहीं पता की वह क्या है जो उन्हें गलत और मुझे सही बताता है। मैं केवल यह कह रहा हूँ की मैं उनकी कुछ बातों से सहमत नहीं हूँ और मैं मेरे हर शिक्षक को किसी और से परिचय नहीं करवाऊँगा। कुछ की सिफारिश केवल पादरीयों से करता हूँ, जिन्हें मैं समझता हूँ की सच को गलत से पहचानने की क्षमता है और जो केवल गेहूँ पाएंगे और भूसी को हटा देंगे।

अपूर्ण शिक्षकों के कारण मेरे जीवन का उपदेश टपकने लगा :

इन शिक्षकों ने मेरे जीवन में दृढ़तापूर्वक सच डाला था, जिसके द्वारा मुझे मेरे जीवन का उपदेश, परमेश्वर के साथ बंधुत्व, मिल गया और इसके लिए मैं हमेशा आभारी हूँ। यह जीवन संदेश ने मुझे अब तक कई बार दुनिया का दौरा करवाया है और मुझे तीव्रता से बढ़ने वाली राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रचार समीती प्रधान करी है।

मेरे शिक्षकों की सूची चलती ही जाती है। यह देख कर उत्तेजित होता हूँ की परमेश्वर कितनी उलझाने वाले रास्ते का प्रयाग करता है की हम उन लोगों के सम्पर्क में आएं, जो हम पर प्रभाव डाल सकते हैं। यह सामान्य जान पहचान हो सकती है, फोन द्वारा, किताहों के नीचे टिप्पणियाँ, टेपों, सभाओं, समीतियों और कई और भी तरीकों से जिन के द्वारा दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर सकते हैं। इस पुस्तक में, इस बात को ढूँढने में आपकी मदद करेंगे की आपके शिक्षक कौन थे, ये रिश्ता कैसे बढ़ा और खत्म हुआ, आपने क्या सबक सीखे, आप इस समय कहाँ हैं और परमेश्वर आप को कहाँ ले जाना चाहता है।

हम शिक्षार्थी रिश्ता रखने के बारे में विवाद करेंगे, दुःख और दर्द, जो इनके साथ मिलते हैं और इन घावों को कैसे चंगा किया जाए। हम इस बात को भी खोजेंगे की शिक्षार्थी काल का रिश्ता छोटा होता है या लम्बा और यह आपके जीवन के एक क्षेत्र पर या कई क्षेत्रों पर प्रभाव डालता है।

आपकी मूल व्यक्तित्व शैली क्या है ? :

आप यह बात जान सकते हैं की भिन्न तरह के व्यक्तित्व को शिक्षा के भिन्न करीके पसन्द हैं। चाहे हम में से हर व्यक्ति सामान्य रूप में कई तरह के तरीकों का प्रयोग करते हैं, जिस में अपने शिक्षक को निजी रूप में मिलना, उनकी पुस्तकों को पढ़ना, उनके कैस्टों को सुनने वगैरह शामिल है। हम ने यह बात पाई है की चित्र को बाहरी ओर लगाने वाला व्यक्ति अपना अधिक समय दूसरों से बात करते हुए काटेगा, जबकी चित्र को भीतर लगाने वाला व्यक्ति अधिक समय पुस्तकों को पढ़ कर या टेपों को सुनकर काटेगा। मैं और मेरी पत्नी, हम दोनों चित्र को भीतर लगाने वाले व्यक्ति होने के नाते, हमें अधिकतर शिक्षा किताबों और टेपों के माध्यम से मिली है और कम थोड़ी शिक्षा हमें निजी मुकाबलों द्वारा मिली है। दोनों ही तरीके ठीक हैं। आप ध्यान देंगे की मूसा को शिक्षा रेगिस्तान के पीछे मिली थी और पौलुस ने भी अरबी रेगिस्तान में अकेले तीन साल बिताए थे ताकी वह परमेश्वर से

सीधे रीप में शिक्षा ग्रहण कर सके (गलतीयों १:१७, १८)। दूसरी तरफ, यीशु ने बाराह व्यक्तियों को लिया और उन के साथ डेढ़ साल बिताए। इसलिए, दोनों बातों को बाईबल से लिया गया है। मेरे हिसाब से यह सबसे बुद्धिमानी की बात यही होगी की, जैसे परमेश्वर ने आपको बनाया है आप उसे स्वीकार करें और अपनी शिक्षा प्रारम्भिक तौर से उसी माध्यम से प्रारम्भ करें और उसी समय उन दूसरे तरीकों को भी अपनाए। आशिर्वाद आपके साथ हो जब आप यह खोजें की परमेश्वर आपको कहाँ से निकाल लाया है, अब वह आपको कहाँ रखे हुए है और वह आप को कहाँ ले जा रहा है। आप इस जीवन के सफर का जश्न बनाएँ और इस में आनन्दित रहें।

प्रायोगी प्रार्थनापत्र :

१. शिक्षा देने वालों के लिए आप की परिभाषा क्या है?
२. शिक्षा देने में जो रिश्तेदारी बन जाती है, उस पर आप का अभिप्राय क्या है?
३. शिक्षा देने वालों के प्रति, लेखक की परिभाषा के बारे में आप का विचार क्या है (जो है "दूसरों की आत्मा और अभिषेक में सोकना)
४. आप अपने आपको कैसे पहचानेंगे की आप चित्र को बाहर लगाने वालों में या भीतर लगाने वालों में? आपका शिक्षार्थी बनने का मौलिक करीका क्या है, लोगों को मिलने के द्वारा या किताबों और कैस्टों के द्वारा?
५. क्या आप पुस्तकों और कैस्टों के प्रयोग के कुछ फायदे बता सकते हैं, उत्पादक नें व्यक्तित्व शैली के बारे में जो बताया है, उसको छोड़ कर?
६. क्या परमेश्वर ने आप को जंगल में अकेले में शिक्षा दी है? इस तरह के अनुभवों को संक्षिप्त में लिखिए?

पाठ दो

आत्मिक मित्रों के लिए भूख

मित्र सब समयों में प्रेम रखता है
(नितिचरण १७:१७)

एक आत्मा जो अकेले रहती है...वा जलते कोयले के
समान है जिसे अकेले छोड़ दिया है: वह गर्म होने के
बजाए ठण्डी पड़ जाएगी। क्रूस का यूहन्ना।

एक मित्र हृदय की आशा है। राल्फ बालडो एमर्सन

एक मित्र को चुनने में समय लो, और छोड़ने के लिए
और भी अधिक समय।

बेंजामिन फ्रैंकलीन.

अधिकार नहीं, दोस्ती :

शिक्षा पाना , शिक्षार्थी या चर्वाह बनाये जाने, का केंद्र दोस्ती है। यह अक्सर व्याकूल कर देता है। कुछ लोगों ने इस रिश्ते के केन्द्र को अधिकार में बदल दिया है और अपने और दूसरों के जीवनो में उलझनें पैदा कर ली है। इस असंतुल (जो दोस्ती से अधिकार की ओर ले जाता है), का एक किस्सा संयुक्त प्रदेशों में शिक्षा देने पर १९७० में हुआ था। चाहे असका उद्देश्य सही था (यानी चरवाह बनाना और कवच देना), परन्तु यह विधि बिलकुल बिगड़ गयी क्योंकि अधिकार ने सेवक नेतागिरी की जगह ले ली थी।

जब मैं किसी शिक्षक को शिक्षा देने के लिए चुनता हूँ, तो मैं सब से पहले एक मित्र को तलाशता हूँ, वह जो हर समय प्रेम करे। मैं मानता हूँ, की इस तरह का व्यक्ति मिलना थोड़ा कठिन है। मुझे एक या दो मिले। एक तो मेरी बहुमूल्य पत्नी है जिसने हर पल मुझे प्रेम किया है, और दुसरा, एक दोस्त और साथ मे काम करने वाले वृद्ध, रौजर मिल्लर। मुझे यकीन है की कई और भी हैं, परन्तु वे दूर रहते हैं और इस कारण इतने वर्षों तक दोस्ती निभाना कठिन हो जाता है।

मुझे विश्वास है की हमारे मन सच्ची दोस्ती के लिए तरसते है, उन लोगों के लिए, जो हम से, हम जैसे हैं, उसके लिए प्रेम करेंगे, पहले हमें जाँचे बिना या सही किए बिना - वे लोग जो हमारे साथ रहेंगे और हमारे साथ रिश्तेदारी में खुश रहेंगे। और सबसे अधिक, जब हम गुस्सा जाएं या बुरे वक्त से गुज़ेर, तो ये लोग हमें सातवहाना दें बजाए उपदेश देने के या हमें छोड़ कर चले जाने के या हम पर शब्दों या भावुक्ता से या शारिरीकता से हम पर वार करें। हाँ, इस तरह का व्यक्ति, इस तरह की स्थितीयों में बिना शर्त के प्रेम करने वाला व्यक्ति मुश्किल से मिलता है।

एक महिला जो व्यभिचार में फँस गयी थी उसे ऐसा व्यक्ति, उसे तब मिला जब यीशु ने उस से कहा, "जा, और फिर कभी पाप मत करना।" यीशु ने उसे उपदेश नहीं दिया या उसे नीचा नहीं दिखाया या उसे तुच्छ नहीं समझा। उन्होंने उसे केवल मुक्त किया। हाँ, उन्होंने उसे थोड़ा आदेश दिया, परन्तु वे केवल तीन सामान्य शब्द थे। मेरे पास कुछ आत्मिक मित्र थे, जो जब मुझ से परेशान हो जाते, तो घण्टो तक मुझ पर शब्दों का वार करते रहते। उनकी पराजय और गुस्सा और भय मुझ पर निकालते और आशा पूर्वक शायद मुझे धमकाते की मैं उनकी आज्ञा मान लूँ, ताकी फिर कभी ऐसी परिस्थिती ना उत्पन्न हों। क्या इस प्रकार के मित्रों, की हमें तलाश है। नहीं।

मैंने एक पक्की प्रतिज्ञा की है की जो मुझ पर आधिकार जमाना चाहे या दूसरो को मुझ पर अधिकार जामने के लिए उत्तेजित करे, वह मेरा शिक्षक नहीं हो सकता। मैं ऐसे को तलाश करता हूँ जो जीवन भर मुझे शिक्षा देता रहे परन्तु वह मुझे उसे छोड़ कर जाने की भी स्वतंत्रता दे (यूहन्ना ६:६,७)

मैं अपने अध्यापकों में यह भी तलाशाता हूँ की उन के जो भय थे वे दूर हों गए हों ताकी हमारे रिश्तेदारी में वे भयभीत न हो जाएँ, ताकी जो महिमा का बहाव

परमेश्वर की ओर से उने के माध्यम से मुझ तक पहुँच रहा है, वह रुक न जाए। और हाँ, ऐसे लोग कठिनाई से मिलते हैं। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए की वह ऐसे लोगों को हमें प्रधान करे और उनके लिए प्रार्थना करें की वे हमारे जीवन में आ जाए। और हम काफी समय तक उन के बिना चल सकें। यह भी दर्दमय है।

अकसर, बजाए सच्ची रिश्तेदारी बनाने के, हम देखते हैं की हम निश्चित रिश्तेदारी से घिरे रहते हैं। उदहारण के लिए, किसी विशिष्ट जाती के गिरजाघर क्षेत्री अध्यक्ष रखते हैं जिन से पादरी अपने कार्य के बार में बनाने हैं, चाहे उन के साथ उनकी सच्ची रिश्ते दारी हो या नहीं। यह अच्छा होगा की हम सच्ची रिश्तेदारी को बढ़ावा दे ताकी वह बढ़े और उन्नती करे, रिश्तेदारी में अधिकार जताने की बजाए। यह सुझाव केवल विशिष्ट जाती के नेताओं के लिए नहीं है, परन्तु कई परिस्थितियों के लिए भी जिस में घरेलू प्रार्थना समूह, गिरजाघर के वृद्ध, कार्य करने वाले सहायक, और कई और लोग भी शामिल हैं।

दुसरो के मित्र बनना :

एक व्यक्ति जिस के मित्र हैं, उसे मित्रता दिखानी चाहिए; "परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।"

(नीतिवचन १८:२४)

मित्रता दो तरफा रास्ता है। जिन्हें मैं मिलता हूँ, क्या मैं उनका बड़ी मुस्कुराहट से अभिवादन करता हूँ? क्या मेरा दिल खुला हुआ है और चंगा है और परमेश्वर के प्रेम से भरा हुआ है, उनके प्रति जिन्हें मैं हर दिन मिलता हूँ? यदि नहीं, तो मुझे अपने अंदर पवित्रात्मा के शक्तिशाली कार्य को प्रोत्साहित करना है और कहना है, "कृपया मेरे अंदर कार्य करीए। मुझे बहती हुई खुशी दिजीए। मुझे एक खुशनुमा हृदय दिजीए, एक मुस्कुराता हृदय, एक प्यारा मन, एक प्रेम से भारा मन, एक खुला हुआ मन, एक ऐसा मन जो दूसरों के घावों को चंगा करने पहुँचे।" हमें प्रार्थना करनी चाहिए, "परमेश्वर हमें एक नया मन और नयी आत्मा दे." क्योंकि अकसर, हमारे दर्द और घायल भरे जीवन में चलते हुए (हमारे मन और आत्मा) खराब हो जाती है।

मेरा मन कई बार घायल हो कर खराब हो गया था और मैं डर गया था की शायद यह फिर कभी ठीक नहीं होगा और फिर कभी किसी पर विश्वास कर

पाएगा। जब मैं इस बात पर, परमेश्वर के वचन के माध्यम से, सोच विचार कर रहा था, तो मुझे इस बात को जान कर अचम्बा हुआ की हमें कभी ये आदेश नहीं दिया गया की हम मनुष्यों पर विश्वास करें। हम केवल परमेश्वर पर विश्वास कर सकते हैं। बाईबल इस आदेश से भरी हुई है की परमेश्वर पर भरोसा रखो, परन्तु एक भी आदेश ऐसा नहीं है जो यह कहता है की मनुष्य पर भरोसा रखो। मेरे लिए यह एक अचम्बित कर देने वाला परिज्ञान था, एक व्यक्ति जिस ने हमेशा लोगों पर विश्वास किया हो और हर समया धोखा खाया हो।

मैं समझता हूँ की हमें मनुष्यों पर विश्वास करने का आदेश इस लिए नहीं दिया गया है, यह हमारी निर्बलता के कारण है जो हम अपने जीवनो में झूझते हैं। कौन यह कहने को तैयार है, "मैं आ गया हूँ"? कौन यह बताने को तैयार है की वह एक सही नमूना है? मैं समझता हूँ (कोई नहीं)। इस कारण हमें मनुष्य पर विश्वास करने का आदेश नहीं दिया जाता। हमें यह आदेश दिया गया है की हम मनुष्य से प्रेम करें और उन्हें माँफ करें और उन्हें आदर दें और उन पर विश्वास करें।

जो आप को शिक्षा दे सकते हैं, ऐसे कई लोगों को रखना :

यहाँ एक मुख्य बात उभरती है। शायद यह सही नहीं है की एक ही आध्यापक या शिक्षक हो। क्या बाईबल यह नहीं कहती "सम्मति देने वालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।"

(नीतिवचन ११:१४)

"मुझे नही लगता की इस बात में कोई परेशानी होनी चाही। जब हमें एक फूल से शैहद नहीं मिलता, तो कई तरह के फूलों से बटोरा जा सकता है।" फ्रानसिस आफ सेल्स।

हम शायद इस बात से सहमत हैं की एक व्यक्ति पर आत्मिक आवश्यकताओं के लिए उम्मीद रखना ठीक नहीं है। हमें अधिक लचीला और उत्पादक होना चाहिए। मैं अपने जीवन में कई सम्मति देने वालों को रखा है। विशेष रूप में, मेरे पास तीन या चार लोग हैं जिन के आधीन मैंने अपने आप को पिछले तेराह वर्षों में किया है। इस समूह में मैं बुद्धि और दोस्ती और प्रोत्साहन और उम्मीद दूँ निकाली है। इन के बिना मैं वहाँ नहीं होता जहाँ मैं आज हूँ। इन्होंने मुझे कई गलत रास्तों पर जाने से रोका है, जिन पर मुझे नहीं जाना चाहिए। उन्होंने मुझे विश्वास

करना सिखाया जब मैं विश्वास नहीं करना चाहता था। उन्होंने मेरे साथ मिलकर प्रार्थना की ताकी मेरे घाव भर जाएं और शैतान निकालें जाएं और मुझे मेरी सेहत वापस मिल जाए, जब मुझे एसी आवश्यक थी। वे मेरे बहुमूल्य खजाना हैं। और इस समुह में सबसे करीब और प्यारा जो है वह मेरी पत्नी है। मैं उनका आभारी हूँ की उन्होंने अपने समय को मेरे जीवन पर इतने वर्षों से उपयोग किया। सच में कोई व्यक्ति टापू नहीं है परन्तु हम सब एक दूसरे के लिए हैं।

वफादार घाव :

"जो घाव मित्र के हाथ से लगें वह विश्वास योग्य है।" (नितिवचन २७:६)

जब मेरे शिक्षक मुझे सही करना चाहते थे, तो वे इसे शिष्टता और दया और बुद्धि से करते थे। एक जगह है जहाँ हम दूसरों के जीवन से सीधी बात कर सकते हैं। परन्तु यह शिष्टता और शांति से होना चाहिए, बजाए गुस्से, डर और धमकी के और यह सीधी बात होनी चाहिए। बाइबल बताती है की हमें "प्रेम के साथ सच बोलना चाहिए", एक दूसरे के साथ। इस वाक्य में दो भाग हैं और इस बात की मुझे हैरानी होती है की इन दो भागों को एक साथ कैसे बाहर निकाला जाए।

पहला भाग यह है की सच बोलो। इस का अर्थ यह है की हम कपटी नहीं हैं। हम धुँधले काँच का प्रयोग नहीं करते। हमारे कहे हुए शब्दों में कुछ छिपे अर्थ नहीं हैं। हम कपटी या चलाक नहीं हैं। दुर्भाग्यवश, मेरे एक शिक्षक कभी भी हमारी बातचीत में खुलापन या सच्चाई नहीं ला सके। उन की बातचीत में कुछ ऐसा मोंड़ या छिपा हुआ अर्थ होता था, जिसके कारण मैं सोच में पड़ जाता था की वे क्या कहना चाहते हैं। अखिरकार मुझे पता चला की उसकी बड़ी मशीन के चक्के में, मैं एक दाँता हूँ, ना की विशेष रूप में आशीषित किया हुआ व्यक्ति, जिसे परमेश्वर ने बुलाया था। धोकादड़ी हमारे रिश्तेदारी के बीच में थी जब तक की यह धोकादड़ी और दर्द का कवच टूट नहीं गया।

आयत का दूसरा भाग यह है की हम "प्रेम में" बोलें। यदि आप विरुद्ध या दर्द यीशु गुस्सा या निवारक या दुर्वचन में हों तो यह समय "सच बोलने" का नहीं है। पहले अपने विचारों को शांत करें पवित्रात्मा की उपस्थिति में और सच बोलने के लिए तैयार हो जाईए और दोस्तों से प्रेम पूर्वक बोलीए। मैं यह कह सकता हूँ की मेरे एक अध्यापक, रोजर, ने मेरे साथ हमेशा सच्चाई से प्रेमपूर्वक बात करी है। मेरे

एक और शिक्षक, जब वे कुछ सही करना चाहते थे, जब वे देखते थे की उनकी कमीयों को मैं भाँप गया हूँ, तो वे घण्टों तक, गुस्से में दुर्वचनो से मुझ पर हमला करते। "सच्चाई" को पेश करते समय उनमें प्रेम नज़र नहीं आता था। इसलिए, शिक्षकों और दोस्तों को चुनने में मैं सतर्क हो गया हूँ। लोग वे होने चाहिए जों मुझे सच में प्रेम करे और मुझे अपनी समाप्ती न समर्पें या उनके जीवन का लक्ष्य परन्तु एक अनोखे रूप में उपहार प्राप्त व्यक्ति जिस के जीवन में अनोखा बुलावा है।

मुझे ताजुब होता है की जब दोस्त दोस्तों के साथ बात करते हैं, तो इस आदेश से क्यों नहीं बन्दे रहते। मैं चाहता हूँ मेरा शिक्षक वह हो जो मुझ, से सच को प्रेम के साथ बाल सके और बोलने पर बंध जाए ताकी मैं हर क्षेत्र में बढ़ सकूँ उसमें जो प्रधान है (इफि ४:१५)

स्नेहपूर्ण सम्मति देना :

"जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।" (नितिवचन २७:९)

मेरे शिक्षकों, दोस्तों और अध्यापकों से मेरा सब से खुशी का पहलू यह रहा है की उन्होंने मेरे साथ जब भी बाँटा तो स्नेहपूर्ण सम्मति के साथ। अकसर, "जैसे चाँदी की कटोरीयों में सोने के सेब हों, वैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।" (नीति २५:११)। यह किसी विषय पर एक नयी दृष्टिकोण डालता है जिस से समया एक दम ही समाप्त होने जैसे लगती है। इस स्नेहपूर्ण सम्मति ने मेरे मन को बार बार चंगा किया है। मुझे याद है रोजर ने मेरी एक पुस्तक का मसौदा पढा था, जिस में मैं एक व्यक्ति, जिसने लोगों के बीच मेरी बेइज्जती करी थी, उसका नाम ले कर मैं इस पुस्तक के माध्यम से उसे बेइज्जत करने वाला था। रोजर ने स्नेह पूर्वक मुझे समझाया की इस की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मेरी पुस्तक की अवदी उसके लोगों के बीच मुझे बेइज्जत करने के समय से कई अधिक होगी।

स्नेहपूर्ण सम्मति ने मेरी कामयाबी को कई गुणा और बढ़ाया है। एक व्यक्ति एक हजार को उड़ा सकता है परन्तु दो व्यक्ति दस हजार को उड़ा सकते हैं। जब हम जुड़ जाने हैं, तो हमारी कामयाबी बढ़ने लगती है। जब मैं उस व्यक्ति से कुछ पाता हूँ जिस पर मैं दृष्टि जमाए बैठा हूँ, तो यह मेरी कामचाबी को कई गुणा बढ़ाती है। मैं ज्यादा फल पाता हूँ क्योंकि मेरे देखने का नज़रीया बड़ गया है।

यदि आप ने कई शिक्षकों से पाने की खुशी का आनन्द नहीं उठाया है, तो आज ही आप इस अनुभव को अपनाईए।

उड़ती चिंगरियाँ :

"जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, बैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की अंगति से चमकदार हो जाता है।"

(नितिवचन २७:११)

कई समय ऐसे भी आते हैं जब हम दूसरों की सोच या पदवी को चुनौती देना चाहते हैं। यह बिलकुल ठीक और माननीय है, यदि इसे प्रेम पूर्वक और शिष्टता से किया जाए। इसे कभी भी लड़ाई का रूप न लेने दें न गुस्से का न भाग का, परन्तु जब तक हर एक जन ईमानदारी से और खुले रूप में सच को नहीं खोजता, तो अच्छे विवाद के माध्यम से अधिक रौशानी डाली जा सकती है। हर व्यक्ति में दूसरे के मन की बात को सुनने की इच्छा होनी चाहिए और सच्चाई की इच्छा अधिक होनी चाहिए बजाए इस के की वह अपनी बातों को सही साबित करने में लगा रहे। जब दो लोग अपने बीच की समस्या का समाधान नहीं पा सकते तो बाईबल कहती है की वे और दो या तीन लोगों की मदद ले सकते हैं (मत्ती १८:१५-१८) इस से उस समस्या का कई तरहा से हल निकल आएगा। यह इस बात पर निर्भर है की उस समूह का हर व्यक्ति, दूसरे की बात सुनने को तैयार हो और पवित्रात्मा के मन और इच्छा को भी सुनने को तैयार हों और इस बात को मान ले की वे अपने आप, समस्या का केवल कुछ भाग ही रोशनी में देख सकते हैं और उसे पूरा देखने के लिए दुसरे लोगों की मदद की आवश्याता है। इस तरहा का नम्र व्यवहार मिलना कठिन है। परन्तु इसे तब तक दूढ़ना जब तक मिल नहीं जाता, लाभदायक है।

विश्वासघाती मित्र :

"रात को वह फूट फूट कर रोती है, उसके आँसूँ गालों पर ढलकते हैं.....उस के सब मित्रो ने उस के साथ विश्वासघात किया, और उस के शत्रु बन गए"।

(विलापगीत १:२)

दुर्भाग्यवश हम मे से कुछ को नए रिश्ते बनानो कठिन हो जाता है, क्योंकि पहले दोस्तों के विश्वासघाती अनुभवों के कारण, यह समस्या नयी नही है।यह हमेशा हमारे साथ रही है। मैं समझता हूँ कि समय घावों को भर देता है। यदि हम

उसे ऐसा करने दें तो। मैं विश्वास करता हूँ की यदी हम लगातार परमेश्वर से प्रार्थना करें, की वह हमें एक नया मन और नयी आत्मा प्राधान करे। वह अपने वचन का आदर करते हुए, जो हम ने विश्वास से माँगा है उसे पूरा करेगा, दर्दनाक बिछड़न के बाद यह अच्छा है की जितनी जल्दी हो सके एक नए रिश्ते में प्रवेश करें, क्योंकि जा प्राण अकेला छूट जाता है, वह शैतान के हमले से भर जाता है, खास तोर से अकेलापन, डर, अस्वीकार, वक्रता और धोखा, इस सब से छुटाकारा मिल सकता है यदि हम परमेश्वर की देह मे दुसरो के साथ रिश्ता बनाते हुए चलें।

अपने जिवनों को त्यागना :

"इस से बडा प्रेम किसी का नहीं की कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, यदी उसे करो तो तुम मेरे मित्र हो। अब से मैं तुम्हें दास ना कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता की उस का स्वामी क्या करता है, परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैंनों जो बातें अपने पिता से सुनीं वे सब तुम्हें बता दीं।"

(यूहन्ना १५:१३-१५)

वे व्यक्ति जिन्हे यीशु ने अपने चेले बनाया वे उस के दोस्त बन गए। उनका नेता होने के नाते, उनके लिए वह अपनी जान भी देने को तैयार था। इसे सेवक नायकत्व कहते हैं। बजाए इस के की आप जिन को शिक्षा दे रहे हैं, उन से कहें की वे आप की सेव करें, आप उनकी सेवा करीए।

नेता हमेशा सब का सेवक है। जब मैं ऐसे नेता से मिलता हूँ जो यह देख रहा है की मैं उसकी सेवा करूँ, तो मैं दूसरी ओर पलट कर देखने लग जात हूँ। यह देख कर बड़ा दुःख होता है की गिरजाघर मे भी नायकत्व का दुनियाबी दृष्टिकोण प्रवेश कर चुका है। अकसर जो नायक हैं वे अपने आप को अधिकारपूर्ण अनन्य शासक समझते हैं, बजाए सेवक नायक के।

"क्या उचित नहीं की मैं अपने माल से जो चाहूँ सो करूँ? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टी से देखता है? इसी रीती से जो पिछले हैं, वे पहिल होंगे, और जो पहिले हैं वे पिछले होंगे। यीशु यरुशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया और मार्ग में उनसे कहने लगा, की देखो हम यरुशलेम को दाते हैं और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकडवाया जाएगा और वे उस को घाट के योग्य ठहराएंगे।"

(मत्ती २०:२५-२८)

इसलिए मैं ऐसे दोस्त की तलाश में रहता हूँ जो मेरे लिए अपनी जान भी दे सके। और मित्र होने के नाते, मैं भी उसके लिए ऐसा ही करूँगा, परन्तु यह मेरी इच्छा होगी, उसका अधिकार नहीं। यदि कोई आदेशपूर्वक मुझ से कहे की मैं अपना जीवन त्याग दूँ, तो मैं पीछे हट जाता हूँ। यदि कोई अपना जीवन मेरे लिए त्यागता है तो मैं करीब आ जाता हूँ। यह दुःखद बात है की चरवाह के रिश्ते में उपर्युक्त वचन कोई मायने नहीं रखता। उम्मीद है की परमेश्वर आज कोई नयी बात कर रहा होगा।

इस कारण हम अपने आप को एक नए मित्र को तलाश करते हुए पाते हैं। वह जो भाई से भी करीब हो, जिस के साथ हम अपना जिवन और मन बाँट सके, वह जो हमें, परमेश्वर में और हम में, जीवन की सुन्दरता का अनुभव कराए। और जब हम साथ चलें तो, हमारे मन, अंदर से और हमारे बीच में, परमेश्वर की आग से गर्म हो जाएँ। जीवन एक आनन्दमय अनुभव हो जाता है।

प्रयोगी प्रार्थनापत्र :

अपनी लिखने की पुस्तक में, निम्न दिए गए प्रश्नों के प्रार्थनापूर्ण उत्तर लिखें और छोटे समूहों में इन पर विवाद करने को तैयार रहें।

१. आप के जिवन भर में जो आप के मित्र थे, उनकी सूची बनाईए।
२. अभि जो आप के मित्र हैं उनकी सूची बनाईए।
३. कौन से मित्रों ने सच्चाई से बात की है? किस ने धोखा धांधली और गुप चुप बातचीत करी है?
४. किन मित्रों ने प्रेम पूर्वक बात करी है?
५. कौन सा मित्र भाई से भी करीब था?
६. क्या विश्वासघाती रिश्तो ने आप के मन को घायल किया है? क्या आप के मन ने चंगाई पानी है या चंगाई पा चुका है?
७. अच्छे मित्रों के लिए प्रार्थना मे परमेश्वर का धन्यवाद दें जिन्हें उस ने आप को जीवन भर दिया है।
८. यदि आप के मन का दर्द या घाव जो पिछले रिश्तों से मिले है वह अभि बाकी है, तो परमेश्वर से प्रार्थना करे की वह आप को चंगाई दे। परमेश्वर से कहीए की वह आप को बताए की हर रिश्ते से आप ने क्या सीखा है और समय के साथ क्या अच्छाई उभर कर आई है साथ रहते हुए और बिछडने के बाद। वे जो बताते हैं उस को लिख लीजीए और अच्छे के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दीजीए।

अध्याय तीन

मित्रों, शिक्षकों, अध्यापकों, गुरु जनों: क्या भेद है ?

*"मेरी खुशी का मुख्य कारण मित्रता है,"
सी. एस. लुइस, अनन्द से अचम्बित*

मित्रता जीवन का सबसे बहुमूल्य खजाना है। दोस्त हमें कई रूप और रंगों और आकारों में मिलते हैं। हम से कई तरह से बात व्यवहार करते हैं। वे हमें समय दर समय सम्मति देते रहते हैं। वे हमें कई कौशलों में निपुण करते हैं और हमारे जीवन में शिक्षक का रूप ले सकते हैं। इस अध्याय में हम इन हर एक रिश्तों के बारे में पढ़ेंगे और इन में की मुख्य भेदों को बताएंगे हम प्रारम्भ करते हैं, हमारे मित्रों को शिक्षकों के रूप में देखते हुए।

मित्र - सम्मति देने वाला :

अक्सर हम कॉफी पीते हुए मित्र के साथ बैठते हैं और सामान्य रूप में अपने जीवन के कुछ अंश उन के साथ बाँटते हैं। जब हम बात करते हैं, तो कुछ खास बात हमारे सोच की विचार धारा को बदल देती है। यह हमारी उस परशानी की स्थिति, जिस से हम गुजर रहे हैं, उस पर दृष्टीकोण बदल देती है और एक नए रूप में हम शांति अनुभव करते हैं। मुस्कुराहटें अदल बदल करते हैं और एक दूसरे पर अपना हाथ रख कर एक छोटी सी चंगाई और मुक्ति की प्रार्थना कर सकते हैं। यह हमारे जीवन की राह में अगिनित बार होता है। उसे एक सम्मति का अनुभव माना जा सकता है। जब हम किसी समस्या का समाधान ढूँढ़ रहे हैं तो सम्मति पाने में कुछ मिनटों से कुछ गण्टे भी लग सकते हैं। बात चीत के माध्यम से हमारे मित्र हमें समस्या से हम झूझ रहे हैं वह क्या है, उसे पहचानने में हमारी मदद करेंगे। हो सकता है कि असल में समस्या की जड़ क्या है, उस के प्रति हम धुंधले बिचार रखते हों, हो सकता है की हम केवल दौरा लगा रहे हों और अपूर्ण दृष्टि ही देख रहे हों। हो सकता है की हम साफ देख रहे हों, परन्तु यह नहीं जानते हैं की उस स्थिति का सामना कैसे करें।

हमारा मित्र/ सम्मति देने वाले हमें समस्या को बताने में हमारी मदद करेंगे

और उस से झूझने में सही रास्ता बताएंगे। वह इस स्थिती से बाहर निकलने के लिए धार्मिक तरीका बता सकते हैं और हमें साफ रास्ता चुनने में हमारी मदद कर सकते हैं। वह वापस लौट कर आकर संतुष्टी भी कर सकता है की अब क्या हाल है।

इस तरह का रिश्ता सामान्य है और हमारे जीवन में चलता रहता है। अधिक सम्मती देने वालों के बीच हम सुरक्षित हैं, इसलिए हम अक्सर परिवार जनों, मित्रों और परिचितों से सामान्य रूप से प्राप्त करते रहते हैं।

यह अनुभव किचन मेज के इर्दगिर्द, अपने दफ्तर की मेज के पास, गिरजाघर के बाहर, ग्रह समूह के साथ चाय पीते में, या किसी और जगह पर जहाँ आप किसी से मिल जूल रहे हों, हो सकता है।

क्या मैं यह सलाह दे सकता हूँ की मुनष्य अकेले रहने के लिए नहीं बना और यह लगातार जो उस के अंदर अनुभव जाते रहते हैं इस से वह शक्तिशाली बन जाता है। बेबल के गुमट पर (उत्पत्ति ११:६) जब लोग एक होकर, एकता से काम करने लगे, तो परमेश्वर ने कहा की इन के लिए कुछ भी असंभव नहीं। जब लोग एक आत्मा में एकत्रित हो कर किसी कार्य को करना चाहते हैं, तो वहाँ सच्ची शक्ति होती है। ऐसी एक चीज निकलती है, जो एक अकेले व्यक्ति के लिए अपलब्ध नहीं है।

परमेश्वर कृपया हमारे जीवन को मित्रों में भर दे, जिन के साथ हम आत्मा और सच्चाई के साथ बाँट सकते हैं।

निम्न उन मित्रों की सूची बनाईए जिन्होंने आप के जीवन में बुद्धिमानी से सम्मति दी है :

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

मित्र / प्रशिक्षण देने वाला :

मित्र आप के जीवन में प्रशिक्षण देनेवाले का पद भी संभाल सकते हैं। जब आप कुछ नया कौशल सीखना चाहते हैं, तो आप उस मित्र से मदद लेते हैं जो उस कौशल को जानता है। आप कुछ दिन या कुछ सप्ताह इस विशेष क्षेत्र में अपने मित्र से प्रशिक्षण पाने में बिता सकते हैं। यह कुछ भी हो सकता है, धातुओं को जोड़ना, सिलना, निर्माण करना, फूल सजाना, टंकण या क्विप्स सीखना या हजारों में से कोई भी कौशल जिससे हम एक दूसरे से सिखते हैं।

प्रशिक्षण देते समय, निर्देश देने के अलावा और भी कुछ होता है। सामान्य रूप से प्रशिक्षण देने वाला उस कार्य को सिखाने में आप को हाथ से छू कर बता भी सकता है कि कैसे किया जाए। प्रशिक्षक एक अभिनय पात्र बन जाता है, और उदाहरण देते हुए सीखने वाले को उस कौशल का ज्ञान देता है ताकि नए कौशल पूर्ण किए जाएं।

आपके जीवन में जो प्रशिक्षण देने वाले थे उन की सूची बनाईए और वे कौशल जिन्हें सीखने में उन्होंने आप की मदद करी है।

मित्र / प्रशिक्षक

कौशल

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

मित्र / शिक्षक (चेला बनाने वाला) :

यीशु ने बाराह आदमीयों को चेला बनाया, उन के साथ निश्चित समय बिताया, लगभग डेढ़ साल। उन्होंने उसे प्रचार करते देखा और उस से प्रश्न किए। यीशु ने उन से प्रश्न किया की वे उन की बुद्धि के स्तर को पहचान सकें। समान्य समूह के अतिरिक्त, उन्होंने अपने चेलों को अकसर अतिरिक्त भीतरी ज्ञान और निर्देश दिए। निश्चित समय तक उन के साथ रहने के बाद यीशु ने दो दो कर के अपने चेलों को प्रचार करने और वह सब कार्य करने भेजा जो वह कर रहे थे। जब वे लौटे तो उन्होंने उसे सारी वारदातें बतायीं की शैतान भी उस के नाम से भागते थे। इस ज़गाह यीशु ने उन्हें ठीक करा और चेलों से कहा की वे अधिक उत्तेजित न हों की शैतान भाग, रहे हैं, परन्तु इस बात से उत्तेजित हो की उन के नाम स्वर्ग में लिख लिए गए हैं।

तो शिक्षा देने और चेले बनाने के लिए कई तत्वों की आवश्यकता है। जैसे:

- निश्चित समय तक साथ में रहना, जैसे की एक वर्ष या अधिक।
- पढ़ाना, प्रशिक्षण देना, सम्मति देना।
- व्यक्ति के जीवन को बनाना।
- शिक्षार्थियों, को कार्य सौंपना।
- शिक्षार्थियों के किए गए कार्य को जांचना और टिप्पणी करना।

हमें, सम्मति देने वाले से प्रशिक्षण देने वाले तक और फिर चेले बनाने वाले तक जाते जाते बहुत समय लग जाता है। यह सही है की हर सम्मति देने वाला या प्रशिक्षण देने वाले, चेले नहीं बना सकते, परन्तु कुछ बना सकते हैं। हम यह भी देखते हैं की जब हम सम्मति देने वाले से प्रशिक्षण देने वाले कि ओर और फिर प्रधान आध्यापक की ओर जाते हैं तो हमारा रिश्ता और भी गहरा होते जाता है।

इन तीनों अभिनय के पात्रों में जो सब से कम दिखाई पड़ता है वह है चेले बनाने वाले का पात्र। प्रशिक्षण देना, कब शिक्षार्थी में बदल जाता है यह तो दोनों दलों पर निर्भर होता है, और उन का इस रिश्ते से क्या आकांक्षायें हैं। इस बात का कुछ सबूत है जो मनुष्य की उन्नती को दर्शाता है। यह तब होता है जब आप ने जो शीखा है, उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाना चाहते हैं। वह जवान विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिए उत्सुक रहते हैं। विद्या को देने से रोकने का मुख्य रुकावट है बात चीत करने का ढंग न आन या शिक्षा न दे पाना।

अनवेशण हमें यह बताता है की जिन कर्मचारीयों के पास शिक्षा देने वाले हैं। उन की कार्य करने की क्षमता उच्च होती है। सैकड़ो कम्पनी याँ जैसे जॉनजन & जॉनजन, बैलकोर, एन सी आर कारपोरेशन, ऐटी टी, और मैरिल लिच ने नियम अनुसार शिक्षार्थी का प्रशिक्षणकाल कार्यक्रम को अपनाया है। कुछ प्रारम्भिक स्कूलों ने अपने विद्यार्थियों के लिए शिक्षार्थी का प्रशिक्षणकाल कार्यक्रम को अपनना शुरू कर दिया है।

शिक्षार्थी के प्रशिक्षणकाल के तीन आवश्यक तत्व :

शिक्षार्थी के प्रशिक्षणकाल के रिश्ते में तीन आवश्यक तत्व होते हैं। पहला तत्व भावुक रिश्ता स्थापित करना है। इस भावुक रिश्ते की तीव्रता से शिक्षार्थी और प्रशिक्षण में भेद पता चलते हैं। शिक्षार्थी के प्रशिक्षण को सम्पन्न बनाने में मुख्य चाबी यह है की वे स्वयं चुने हुए रिश्ते हैं। यह उस समय कार्य नहीं करता जब इन रिश्तों को कानून के रूप में उपर्युक्त शक्ति द्वारा नियुक्त किया जाए। तीसरा आवश्यक तत्व है की छिपी हुई योग्यता को उभारना। जो प्रधान शिक्षक होते हैं वे शिक्षार्थी को छुपी हुई योग्यताओं को खोजने और उभारने में मदद करते हैं। और इस से अकसर वह जो उस ने सोचा है उस से अधिक वह कर पाता है।

हम में से हर कोई उन शिक्षकों को पहचान सकता है जिन के साथ हमारे गहरे रिश्ते थे और जिन्होंने हमें मुख्य रूप से साँचे में डाला है। उन में से कईयों की सूची निम्न लिखिए।

शिक्षक और उन के साथ रिश्ते में जो उन्नती प्राप्त हुई। :

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९ .

१०.

प्रयोगी प्रार्थना पत्र :

दोस्तों , प्रशिक्षकों और शिक्षकों पर जो आप के विचार, भाव और प्रश्न हैं, उन्हें लिख लीजिए। यदि आप इस पुस्तक का अध्ययन एक छोटे समूह के साथ कर रहे हैं तो अपने विचारों और भावों को उन के साथ बांटीए।

टिप्पणीयाँ

अध्याय चार

चेले बनाने की आपश्यकता

मैं कुछ समय तक अपने दिमाग और मन में विवाद करने लगा की मैं किस शब्द का प्रयोग करूँ, चेले बनाना, शिक्षार्थी या प्रशिक्षण। यकिनन, पवित्रशास्त्र में जो शब्द है वह चेले बनाना है और हमेशा मैं बाईबल के शब्द का ही प्रयोग करना चाहता हूँ। परन्तु यह शब्द चेले बनाना, के कई उल्टे अनुमान हैं, इसलिए मैं सोचता हूँ की उस शब्द का प्रयोग इस पुस्तक में करना ठीक होगा की नहीं। जैसा की हम ने पहले ही कहा है, की अभी हाल ही में, अमेरीका इस चेले बनाने के विवाद से गुज़रा है, जहाँ इस शब्द चले बनाना को ले कर कई दुव्यवहार जुड़े हुए हैं। इसलिए मैं समझता हूँ की हमें फिलहाल इस शब्द के बदले कुछ और शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

मुझे शिक्षा देने वाला शब्द पसंद है क्योंकि यह एक नया शब्द है और इस के प्रति, इस समय लोगों के दिमाग में भी कुछ अनुमान नहीं है। इस शब्द का प्रयोग करने में इसलिए झिझकता हूँ, क्योंकि यह बाईबल में से लिया गया शब्द नहीं है, परन्तु यह यूनानी पौरानीक कथा से लिया गया है। मेंटर जिस का अर्थ शिक्षा देने वाला है, यह उलसीस का सेवक था जिसे राजा ने अपने बेटे, टैलिमेंकस, की देखभाल और शिक्षा देने का भार सौंपा था।

शिक्षार्थी एक आच्छा मजबूत शब्द है जो हमारे हर रिश्ते को जिस की हमें खोज हैं उस में परिपूर्ण है। दुर्भाग्यवश, मध्यकाल सम्बंधि विध्यार्थी, जब शिक्षार्थी काल से यात्रा पूर्ण करते थे तो, उन के अध्यापकों को मास्टर या गुरु कहते थे। अमरीकी किसी को गुरु कहने मे परहेज़ रखते हैं और मसीही यीशु के अलावा किसी और को गुरु नहीं कहते। इस लिए हमने शब्द निकाला, गुरु अध्यापक, क्योंकि यह शिक्षा से सम्बंध रखता है।

चेले बनाना शब्द के बदले स्वतंत्रता से आप शिक्षा देने वाला शब्द का प्रयोग कर सकते हैं और चेले बनाना को शिक्षार्थी। आप को जो सुविधाजनक हो उस का प्रयोग करें। सच्चाईयाँ परिभाषा से अधिक आवश्यक है।

चले बनाने की रिश्तेदारी में अपने लक्ष्य को सफाई से बताना। :

शिक्षार्थी काल में यह आवश्यक है की आप एक दूसरे को यह सफाई से बताएं की आप क्या खोज रहे हैं और आप के एक दूसरे के प्रति क्या समर्पित है। यह अच्छा होगा यदि इसे प्रायोगिक रूप में शुरू किया जाए। इससे पता चल जाएगा की यह कैसे चल रहा है। यह हो सकता है की आप लोग का स्वभाव में लना खाता हो और आप लोग एक दूसरे के लिए सही जोड़ी नहीं हो। तो पहने चार सप्ताह तक मिलने का वादा कर के जाँचीए। यदि दोनो ओर से आगे बढ़ना सही नहीं लगता तो आप शिक्षार्थी के रिश्ते को समाप्त कर सकते हैं और दोस्त बने रह सकते हैं। हर दोस्ती शिक्षा देने में नहीं बदलती। इस बात को मान लीजिए, की आप दोनों ही इस विषय में गलत नहीं हो। समर्पण को अधिक घण्टा न बनाएं, ताकी यदि आपका शिक्षार्थी का रिश्ता नहीं जमता हो तो, दोस्ती में दरार न पड़।

आप विचार करीए की यह रिश्ता आपस में शिक्षा देना है, या एक जन दूसरे को शिक्षा देगा। आप दूसरे व्यक्ति से क्या चाहते हैं? आप कितनी बार मिलना चाहते हैं? क्या आप प्रार्थना द्वारा प्रारम्भ और अंत करना चाहते हैं? क्या आप चाहते हैं की दोनो प्रार्थना करे या एक ही करे? क्या कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें आप गहराई से रवोजना चाहते हैं? क्या कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें आप इस रिश्ते में नहीं खोजना चाहते? यदि इस तरह के कई और प्रश्न आप एक दूसरे से पूछ कर, सफाई से जवाब दे तो आप का रिश्ता अधिक पूर्ण हो सकता है।

चले बनाने के रिश्ते के कई मुख्य लक्ष्य :

१. जब एक दूसरे, के सामने अपने मन को खोलें तो अंदरूनी शांति का अनुभव हो।

“जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सामने अपने मन को खोलता है तो अधभुत और मुख्य बात होती है। बाईबल कहती है की यदि एक दूसरे के, सामने पापों को स्वीकार करो तो, जंगाई मिलती है:”

(याकुब ५:१६)

यदि आप ने अब तक दूसरे के सामने अपने मन का नहीं खोला है, तो अभी कोशिश करीए। चेतावनी यह है की, आप अपने मन को दोस्त और चेना बनाने बाले के सामने ही खोलें, जो आप को सही तरह स्वीकार कर के सांतवाहना दे, नज़दीकी बनाए, बात को अपने तक ही रखे, सहारा दे और दिशा दिखाए।

जब हम अपने अंधेरों और तकलीफों को उजाले में लाते हैं, तो अंधकार की शक्ति कम हो जाती है। इस के बदले में पवित्रात्मा की रौशनी और शांती हमारी परेशानी की जगाह को ले लेती है। अक्सर बात चीत करने से इस अंदरूनी शांति का अनुभव होता है। और, हाँ, यदि आप को आप का अध्यापक प्रोत्साहन और समझदारी के शब्द बोले, तो यह शांति और आराम और भी अधिक हो जाता है। आप के जीवन के अलग अलग क्षेत्र में विभिन्न अध्यापक होंगे और इसलिए यह सही होगा की आप जो बात किसी एक से बाँट रहे हो उसे दूसरे से नहीं बाँटना चाहते। जैसे की आप को आत्मिक उन्नती देने के लिए अलग शिक्षक होगा और व्यापार की उन्नती के लिए अलग। आप का हर एक से अलग बात बाँटनी चाहिए।

२. अपने जीवन में परमेश्वर के उपहारों, बुलावों और दर्शनों को पहचानना :

परमेश्वर के उपहारों और बुलावों को अपने जीवन में पहचानना, जीवन भर की यात्रा है। एक कारण जिस के लिए यह कार्य कठिन लगता है वह इसलिए है की बचपन में हमें बिस तीस विद्यार्थियों की कक्षा में ठूसा जाता हैं जहाँ दूसरों की तरह ही हमारे साथ सामान्य व्यवहार किया जाता है। इस कारण हम में से कई अपनी अलग पहचान खो देते हैं और सामूहिक पहचान बना लेते हैं।

और फिर हमारे अपने जीवन में जो गुण हैं वे उन्नती करने लगते हैं, और इस कारण जो निर्णय हम लेते हैं, वह एक समय में सही हो सकते हैं, परन्तु दूसरे समय में यह हमारा बुलावा नहीं हो सकता। इस तरह की बात पौलुस चले के साथ भी हुई थी।

प्रेरितों के काम १३:१ में पौलुस को भविष्यवक्ताओं और उपदेशकों के साथ माना गया है और गलतीयों १:१ में उसे चेला कहा गया है। मैं स्वयं कई बार ऐसी बातों से गुज़रा हूँ। जब मैं पहली बार बचाया गया तो मेरे पास एक प्रचारक का मन था। बाद में मैं पादरी प्रचार सभा में गया और फिर गिरजाघर को प्रारंभ करने वाली चेलों की प्रचार सभा में। फिर, खोज के प्रति अपने प्रेम के कारण मैं शिक्षक प्रचार सभा में गया। और आज, परमेश्वर के अभिषेक से, दोनों, शिक्षा और व्यापार के क्षेत्र का अधिक प्रबल कर दिया है।

हम अपने जीवन की भूल भुलैया में जब सफर करते रहते हैं तो हमें मदद और विश्वास की आवश्यकता पड़ती है, यह जानने के लिए की हम कौन हैं, और परमेश्वर हमें कहाँ ले जा रहा है। कई शिक्षकों के मध्य ही सुरक्षा और बुद्धिमानी है।

कई तरीके हैं जिस के माध्यम से आप का शिक्षक, आपके गुणों और उपहारों और बुलावे को पहचानने में आप की मदद कर सकता है। एक, यह है की वह आप के साथ बैठ कर, आप के जीवन और उपहारों के बारे में विवाद, कर सकता है। इस बात चित से अंदरूनी दृष्टि और निर्देश पता चल जाएंगे जो की लाभ दायक सिद्ध होंगे। या आप अधिक ठोस रास्ता अपना सकते हैं जहाँ शिक्षार्थी स्वयं अनुभवों की लड़ी बतायेगा, जिस की मदद से वह उसके मन में धिपी योग्यताओं और इच्छाओं को बता पाएगा। यह दिलाचस्प बात है की जपानी कम्पनीयाँ अपने नए कर्मचारी को एक सप्ताह स्वयं को जाँचने का प्रशिक्षण देती हैं ताकी उसकी योग्यता के मुताबिक उसे नौकरी दे सके। और जब वह सच में कार्य प्रारम्भ करता है, तो उसे उस के उपहार और योग्यता के मुताबिक कार्य दिया जाता है।

३. अपने जीवन के अनुभवों में परमेश्वर की इच्छा को विश्वास के साथ समझने में मदद करना :

जीवन, पेचिले और विपरीत अनुभवों की, एक भूल भुलैया है । शुरुआत में सब ठीक चलता है, परमेश्वर की ओर से साफ वादे और दर्शन मिलते हैं, परन्तु फिर हम कठिनाईयों में फँस जाते हैं। हम अपने आप को जंगल में पाते हैं, भटकते हुए, चक्कर में गोल गोल घूमते हुए, उन बातों से संघर्ष करते हुए जिन्हें हम ने वर्षों पहले सोच लिया था की उस का समाधान मिल चुका है। इच्छाएं हमारे अंदर उफान मारती है और हमें पता नहीं चलता की उन्हें किस तरह संभाला जाए। प्रिय जन मर जाते हैं। या बच्चे विरोधी बन जाते हैं। और अपने चुने हुए रास्ते पर चले जाते हैं। कार्य करने के स्थान में, या घर पर या समाज में विरोध होता है। इन सब बातों में परमेश्वर कहाँ है?

मैंने सोचा की उसने हमें दूध और शहद से भरा देश देने का वादा किया है। मेरे जीवन में यह सब क्या है? यह रेगिस्तान क्या है जहाँ मैं चल रहा हूँ? मेरे चारों ओर जो कमी है और दुःख है और दर्द है उसे कैसे झेलूँ? इन सब में परमेश्वर कहाँ है? रेगिस्तान में चलते हुए, मैं दुःख और दर्द और नाकामयाबी की भावनाओं को जिन्हें मैं अनुभव करता हूँ, कैसे झेलूँ? यहाँ से निकलने का क्या कोई छोटा रास्ता है? या मुझे मरने तक यहीं रहना है?

आप के अध्यापक इन प्रश्नों का उत्तर देने में आप की मदद कर सकते हैं, पवित्रशास्त्र में से उन कहानियों को चुन कर, जो आप के संघर्ष से मेल खाती हैं। इस समय परमेश्वर आप के जीवन में क्या कर रहा है और इस के माध्यम से आप से क्या चाहता है यह समझाने के लिए, आप के अध्यापक को पवित्रात्मा में आना होगा। इस तरह की अंतरदृष्टी और वचार यदी पवित्रात्मा के बहाव से होता है तो यह बहुमूल्य है। यादे आप के अध्यापक को परम प्रधान परमेश्वर की ओर से दैवी प्रेरणा नहीं मिलती और वह अपने स्वयं की सोच से सलाह देता है, तो यह आप के जीवन के लिए नुकसान देह हो सकता है।

इसलिए यह आवश्यक है की आप ऐसे अध्यापक को चुनें जो अपने जीवन में पवित्रात्मा की आवाज़ को पहचान सके। आप ऐसे गुरु अध्यापक को नहीं खोज रहे हैं जो आदमी की समझ से सोचता है या जो अधिकार से आदेश देता है। आप ऐसे व्यक्ति को खोज रहे हैं, जो नम्र है और आत्मिक विचार रखता है और जो आप की मदद कर सकता है, यह जान ने में की हम जानते हैं की जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उसके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं"। (रोमियों ८:२८) आप को शिक्षा देने वाले को चाहिए की परमेश्वर को प्रार्थना में खोजने में और परमेश्वर आप के मन से इन परिस्थितियों के विषय क्या कह रहा है उसे सुनने में आप को प्रोत्साहन दे।

४. किसी व्यक्ति को यह दिखाने में मदद करना की, परमेश्वर उस के जीवन में, इस समय, उसे कहा ले जा रहा है:

यह विषय इस से पहले वाले विषय से घनिष्टता से जुड़ा हुआ है। यदि किसी को एक बार यह विश्वास हो जाए की जीवन के अनुभवों में परमेश्वर है, तब उसे यह निश्चय कर लेना चाहिए की परमेश्वर उसे कहाँ ले जाना चाहता है। क्या वह उस का विश्वास बढ़ाना चाहता है? क्या वह उस के हृदय को शुद्ध कर रहा है? जीवन के इस मोड़ पर परमेश्वर उस में क्या डालना चाहता है? यदि किसी को इन प्रश्नों का जवाब समझना है तो उसे परमेश्वर के बहाव में बैठना होगा और जो इस समय परमेश्वर उसके जीवन, में कर रहा है उसे अपनाना होगा।

मुझे वह समय याद है जब मैं बेरोज़गार था। मैं लिख कर परमेश्वर से पूछने लगा की वह मुझे रोजगार क्यों नहीं दे रहा। उस का जवाब था, "मार्क, तुम विश्वास में एक महान व्यक्ति बनना चाहते हो, हैं ना?"

मैं ने कहा, "हाँ"

प्रभु ने कहा, "तुम ने पैसे के विषय मुझ पर कभी विश्वास नहीं किया, है ना?"
मैंने कहा, "हाँ, मैं ने हमेशा पैसा कमाने के लिए अपनी दाहिनी बाहों की ताकत पर विश्वास किया है।"

प्रभु ने कहा, "मैं पैसे के विषय तुम्हें विश्वास सिखाऊँगा। मुझ पर विश्वास रखो और देखो की बिना नौकरी के मैं तुम्हे दे सकता हूँ।"

कम से कम मुझे अब समझ में आया की मेरे जीवन में उस समय परमेश्वर की आवश्यकता क्या थी और मैं क्यों बेरोज़गार था और मुझे बेरोज़गारी में क्या करना था। परमेश्वर आगे बढ़ते गए और मुझे आदेश देते गए की मुझे अपने उन दिनों में क्या करना है। मैं आठ महिनो तक उन के साथ बहाव में रहा और उस समय के अंत तक परमेश्वर ने मुझे पूरे समय की नौकरी दिला दी थी।

यह मुख्य है की आप को शिक्षा देने वाला भी आप की मदद करे की आप परमेश्वर की आत्मा को पहचाने की आप जहाँ हैं वहाँ परमेश्वर ने आप को क्यों रखा है, इस समय वह आप के जीवन में क्या डालना चाहता है और वह क्या चाहता है की आप किस तरह इन का जवाब देंगे। जो परमेश्वर कर रहा है यदि आप उस के साथ बहने लगें तो आप यीशु से जो पत्थर है टकरा कर चूर चूर नहीं होंगे।

५. विभिन्न कौशलों में शिक्षा देना :

एक और चीज़ जो आप के अध्यापक आप को दे सकते हैं, वह यह है की वे आप को विभिन्न कौशलों में शिक्षा दे सकते हैं, जो आप सीखना चाहते हैं। जैसे जैसे परमेश्वर आप को जीवन की राह पर चलाता है, तो आप यह पाते हैं की कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ परमेश्वर की आवाज़ और निदेश पूरा करने के लिए आप को आपकी योग्यताओं को बढ़ाना है। इसलिए आप उन लोगों को खोजेंगे जो इन क्षेत्रों में निपुण हैं और आप को प्रशिक्षण देने के लिए तैयार हैं। यह लोग आप के अध्यापक हो सकते हैं, या प्रशिक्षक हो सकते हैं जो थोड़े समय तक ही आप के साथ रहे होंगे, केवल एक या दो दिन भी हो सकते हैं।

एक जगह जहाँ प्रशिक्षण देने वाले केवल एक दिन आते हैं वह है बप्लों प्रचार सभाएँ। मैंने पाया की इन प्रचार सभाओं में जाकर मैंने काफी ज्ञान या कौशल प्राप्त कर लिया है, यह, उस प्रचार सभा के विषय पर निर्भर होता है। यह भी सही है की आप कुछ कौशल पाने के लिए शाम के समय कक्षा में प्रवेश पा सकते हैं या प्रशिक्षण का वीडियो देख सकते हैं।

प्रायोगिक प्रार्थना पत्र :

१. आप कौन सा शब्द का प्रयोग करना पसन्द करेंगे, आध्यापक, शिक्षा देने वाला या चेले बनाने वाला या आप इन में से हर एक के साथ आराम से हैं?
२. शिक्षार्थी काल के रिश्ते की पाँच चाबियों की सूची बनाईए। आप के जीवन में शिक्षार्थी काल के रिश्ते में इन पाचों चाबियों के उदहारण और अनुभव लिखीए।
३. जैसे की मेरा एक मित्र यह कहना पसन्द करता है, ' बातचीत करो या मरो।' आप के भी कुछ प्रमुख शिक्षार्थी काल के रिश्ते की सूची बनाईए। आप क्या चाहते है की हो?

अध्याय पाँच

परमेश्वर को अतिआवश्यक शिक्षक मानना

“कुछ निर्देशक, परमेश्वर जहाँ कार्य कर रहा है, वहाँ अपनी टाँग अड़ा कर अपमान कर के बहुत बड़ा पाप करते हैं। वे भला चाहते होंगे परन्तु ज्ञान की कमी के कारण गलती कर बैठते हैं। फिर भी यह एक बहाना है उनकी, बिना समझे की प्राण कहाँ का रुख ले रहा है, सलाह देन का।”

जान आफ द क्रॉस

लोगो को परमेश्वर की ओर ले जाना, जो अति आवश्यक गुरु अध्यापक है :

हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।”

(मत्ती ११:२८)

यीशु पिता की ओर जाने का रास्ता बताता है, और वह परम प्रधान परमेश्वर है जो हमारी आत्मों को शांति देता है जब हम उस से बात चीत करते हैं और अपने जीवन में उसे अपनाते हैं। चाहे हमारे पाप अंधकार से काले हों, उस ने, हमारे प्रभु और मुक्तिदाता यीशु मसीह के बहते हुए खून से धो कर उन्हें बर्फ सा सफेद कर दिया है। जो भी हमें शिक्षा दे रहे हैं, उन्हें चाहिए की, वे परमेश्वर को हमारे जीवन में और हमारे आस पास सफाई से देखना सिखाएँ। हमारे शिक्षक हमें परमेश्वर की ओर जाने का रास्ता दिखाते हैं। १ कुरिथियों ११:१ में पौलुस कहता है, " तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।" यदि हम अपने शिक्षको की ओर देखते हैं, तो वह इसलिए है की हम यह देखना चाहते हैं की वह किस तरह मसीह के पीछे चल रहा है, ताकी हम भी मसीह के पीछे चल सके। शिक्षक अपने आप को पारदर्शक बनाना चाहता है ताकी और लोग उस में यीशु को देख सके, उस व्यक्ति को नहीं। शिक्षक अपने आप को नहीं उठाता परन्तु यीशु को उठाता है। यह बिलकुल उसी तरह है जिस तरह पवित्रात्मा कार्य करता है:

"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महीमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।"

यूहन्ना १६:१३-१४)

एक शिक्षक को अपने शिक्षार्थी को कभी भी अपने पर निर्भर नहीं होने देना चाहिए। यह वह बिमारी है जो और बिमारी उत्पन्न करती है। शिक्षक होने के नाते आप का लक्ष्य यह होना चाहिए की आप अपने विद्यार्थी को परम प्रधान परमेश्वर की ताकत और उपस्थिति से बात चीत करने दे। शिक्षक होने के नाते आप का कार्य यह है की जितना जल्दी हो सके उस काम से बाहर निकल आए। यीशु ने अपने चेलो के साथ केवल डढ़ साल बिताए और फिर उन्हें जब अच्छी तरह से पवित्रात्मा की शक्ति से बात चीत करना सिखा दिया तो वह उन्हें छोड़ कर चला गया और अपने जीवन को हजारो लोगो के लिए त्याग दिया। हर शिक्षक का यही लक्ष्य होना चाहिए।

परमेश्वर को देख और सुन कर दैवी आरम्भिक के अनुकूल होना। :

“इस पर यीशु ने उनसे कहा मैं तुम से सच सच कहता हूँ पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीती से करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है वह सब उसे दिखाता है, और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा ताकी तुम आचम्मबा करो। मैं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता जैसे सुनता हूँ वैसे न्याय करता हूँ और मेरा न्याय सच्चा है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।”

(यूहन्ना ५:१९,२०,३०)

यीशु शिक्षक का सही उदहारण है। उन्होंने कभी अपने आप कोई कार्य नहीं किया। उन्होंने हमेशा पवित्रात्मा को अगुवाई करने को कहा। उन्होंने अपने मन की आँखों को खोला और दर्शन देखे और मन के कानो को खोला और परमेश्वर की आवाज को सुना। बदकिस्मती से कई मसीही ऐसे हैं जिन्हें यह नहीं मालूम की इसे कैसे किया जाए। परमप्रधान परमेश्वर से बातचीत करने की योग्यता न होने से, शिक्षा देने में कामयाबी नहीं मिलती। यदि किसी शिक्षक या शिक्षार्थी के पास यह कौशल नहीं है, तो क्या मैं उसे, इसी लेखक द्वारा लिखित, "परमेश्वर से बंधुत्व और

परमेश्वर से बातचीत" पढ़ने की सलाह दे सकता हूँ। इन प्रायोगिक प्रशिक्षण तत्व मदद से आप मसीहत की नयी दिशा में प्रवेश कर सकते हैं।

पवित्रशास्त्र के माध्यम से परमेश्वर की आवाज को पहचानना :

"तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दिपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।"
(भजन ११९:१०५)

अध्यापक इसलिए है की वह शिक्षार्थी को पवित्र वचन के द्वारा परमेश्वर की आवाज पहचानने में उसकी मदद करे। परमेश्वर का वचन संघर्ष करती हुई आत्मा के लिए सम्मति देता है और यह हमारा जीवन को जाँचने के लिए एक नाप है। इसे पढ़ना है, याद करना है और इस पर प्रार्थना करनी है।

दारुद राजा ने भी यह अनुभव किया की वह परमेश्वर के वचन को सही तरह से उपयोग में नहीं ला पाएँगे, इसलिए उन्होंने भजन ११९:१८ में प्रार्थना करी, मेरी आँखे खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अदभुत बातें देख सकूँ।" इफिसियों १:१७-१८ में पौलुस ने इसी तरह की प्रार्थना की, (लिखिए)

पवित्रात्मा की मदद के बगैर हम पवित्र वचन का प्रयोग सही ढंग से किया जाए तो वह हमारे जीवन में संहनशीलता, शांति और आशा उत्पन्न करती है। यदि पवित्र वचन का दुरुपयोग हो रहा है तो यह हमें नाश करने के लिए गदाह की तरह है निम्न वचन को पढ़िए

"जितनी बातें पहले से लिखी गयीं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखि गयीं हैं की हम धीरज और पवित्रशास्त्र की शांति के द्वारा आशा रखें।"
(रोमियों १५:४)

"सो अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरण आत्मा के अनुसार चलते हैं।"
(रोमि ८:१)

मैंने यह देखा है की अकसर जो परमेश्वर की आवाज नहीं सुन सकते या दर्शन नहीं देख सकते, वे पवित्रशास्त्र की मदद से दूसरे को नीचा दिखाते हैं बजाए

इस के की उन्हें सहनशीलता, शांति या आशा दें। इस बात में सतर्क रहें की आप को शिक्षा देने वाले पवित्रवचन की मदद से आप को ऊपर उठाते हैं या नीचा दिखाते हैं। मैं यह सलाह दूँगा की आप ऐसे व्यक्ति के तैहत में न आएं जो पवित्रवचन का प्रयोग कर के दूसरो को बुरा भला कहता है।

एक शिक्षक को पवित्रवचन खोलकर दूसरो को जीवन प्रधान करना चाहिए ताकी वह उस से प्रेरणा प्राप्त करे। अपने आप में और दूसरों में योग्यताओं को खोजीए।

जीवन के अनुभवोंमें परमेश्वर की आवाज को खोजना :

“.....ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है।”

(मत्ती ११:१९)

" उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं।"

(मत्ती ७:१६)

शिक्षक को चाहिए की वह शिक्षार्थियों को सिखाए की उसके जीवन के अनुभवों से पहचाने की परमेश्वर की आवाज उस से क्या कह रहा है। बाईबल कहती है की हम फल के अनुसार परिक्षण कर सकते हैं। हमे फल के लिए प्रार्थना करना सीखना है, जो की कई कार्यों से मिलता है ताकी परमेश्वर हमे बता सके की वह हमारे जीवन के अनुभवों के माध्यम से क्या कहना चाहता है। मेरे चारो ओर यह रेगिस्तान क्यों है? क्या यह मेरी करनी है या यह इसलिये है की पवित्रात्मा मुझे इस रेगिस्तान तक ले आया है (लुका ४:१) उस प्रकार के सवालों का जवाब तो केवल पवित्रात्मा दे सकता है। इसलिए हमें परमेश्वर की कही हुई बातों को सुनना सीखना है और यह जीवन के अनुभवों को समझने से हो सकता है। यहा भी जीवन भर परमेश्वर की आवाज सुनते रहने से होता है। अंतरदृष्टी असरदार शिक्षाक तब ही बन सकती है जब हम उन परिस्थितियों को जो हमारे सामने लायी जाती है, उन में परमेश्वर की आवाज को पहचानें। इस के सिवाए और कोई रास्ता नहीं है। क्योंकि परमेश्वर मुख्य शिक्षक है, आपका शिक्षक वह होना चाहिए जो परमेश्वर की आवाज को सुन सकता है, नहीं तो वह आप को सही शिक्षा नहीं दे पाएगा। इस बात का यही सब कुछ है।

अपने मन में परमेश्वर की आवज्ञ को पहचानना। :

"और मसीह की शांति जिस के लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गये हो तुम्हारे हृदय में राज करे और तुम धन्यावादी बने रहो।"

(कुलसीयों ३:१५)

परमेश्वर हर एक के मन से सीधी बात करता है जिस के द्वार उन्हे शांति मिलती है या अशांती। आप के शिक्षक को चाहिए की वह उस के मन के अन्दर इस शांती या अशांती को पहचान सके और आप को भी इसे पहचानने में शिक्षा दे। हम से बात करने का परमेश्वर का सबसे मुख्य रास्ता हमारे मन में शांती के द्वारा है।

मैं उस बात को याद करता हूँ जब मैं दो साल तक दूसरे शहर में चले जाने के विचार से झूझ रहा था। वह बात जिस ने मुझे वहाँ जाने से रोका वह थी मेरे मन की अशांती। दो साल के बाद, कुछ और ऐसी घटनाएँ छटीं जिस से यह सिद्ध हो गया की मुझे वहाँ नहीं जाना है। वह मेरे मन की अशांती थी जिस ने मुझे मेरे जीवन की सब से बड़ी गलती करने से रोका।

कई उपदेशकों के बीच परमेश्वर की आवाज को पहचानना :

"जहां बुद्धि की युक्ति नहीं वहां प्रजा विप्लि में पढती है, परन्तु सम्मति देने वालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।"

(नीतिवचन ११:१४)

किसी भी शिक्षक को, आप का कई शिक्षकों से शिक्षा लेना, बुरा नहीं लगना चाहिए। यदि आप का मुख्य शिक्षक यह कहता है की आप केवल उसी की बात सुने तो आप ने शिक्षक के रूप में गलत व्यक्ति को चुना है। जब आप जीवन का मुख्य फैसला करे, तो आप को स्वतंत्रता होनी चाहिए की आप कई आदरनीय लोगों से सलाह लें। मैं फिर से कहूँगा की मसीह की देह में अधिकारीता नहीं है। बलकी नम्रता उस की जगाह लेती है। तेराह वर्षों से मैं तीन या चार शिक्षकों की सलाह लेता आया हूँ। यह सच में परमेश्वर की ओर से था। कई शिक्षकों के माध्यम से परमेश्वर की आवाज को सुनना सीखीए।

अभिषिक्त विचार के माध्यम से परमेश्वर की आवाज को पहचानना :

"परन्तु स्वर्ग दूत ने उससे कहा हे जकरयाह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गयी है और तेरी पत्नी ईलिशिबा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।"

(लूका १:१३)

हमारा दिमाग प्रयोग की जगह है। हम अपना दिमाग नहीं उपयोग करते, परन्तु हम पवित्रात्मा से कहते हैं की वह हमारी विचार धारा को अभिषिक्त करे और ऐसा करने से हम अपने विचारों में काल्पनिकता, तुरन्त बहाव पाते हैं, जो हमारे विचार नहीं लगते। वे परमेश्वर की आत्मा से भविष्यवक्ता के बहाव लगते हैं, जैसा की लूका के विचार हुए थे जब उस ने इंजील लिखी (हमारा बहाव इंजील नहीं बन जाता परन्तु पवित्र शास्त्र द्वारा परखा जाता है)।

मुझे लगता है की हम में से हर एक जन यह भेद जानता है की अभिषिक्त विचार और अपने खुद के विचार क्या होतै हैं। जब हम अपने दिमाग के द्वारा परमेश्वर की आवाज को पहचानते हैं, तो हमें, चाहिए की हम परमेश्वर से कहें की वह हमारी विचार धारा को अभिषिक्त करे और फिर विचार योग्यताओं का मार्गदर्शन और निर्देश देने और उन्नती करने के लिए खुला झोड़ दे। हमारे विचार धारा मे परमेश्वर की आत्मा बहने लगती है, तो हम देखते हैं की जो हम, सोच रहे हैं वह हमारे विचार नहीं हैं परन्तु परमेश्वर के विचार है, क्योंकि बाईबल सही कहती है की हमारे विचार, परमेश्वर के विचार नहीं है और हमारे रास्ते उसके रास्ते नहीं है। बाईबल हमें यह भी सिखाती है, "अपनी समझ से काम न लो, परन्तु हर काम के लिए उस की मदद लो"।

इसलिए हमारा शिक्षक वह होना चाहिए जो इस अभिषिक्त विचार धारा के कर्म का जानकार हो, और अपने शिक्षार्थियों को उस ओर ले जाए। वरना, यह रिश्ता केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही रह जाएगा और इस से कोई दैवी फल का बहाव नहीं होगा।

हमे बहुत सावधान रहना है, की हम हमारे शिक्षक के रूप मे किसे चुनते हैं। वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जो हमे परमेश्वर की ओर ले जा सके और हमारा स्पर्क विष्व के महान शिक्षक परमप्रधान परमेश्वर से करवाए।

प्रायोगिक प्रार्थना पत्र :

१. वह समय या प्रशिक्षण देने वाला या शिक्षक बताईए जिसने आप को परमेश्वर की ओर जाने का रास्ता बताया और परमेश्वर के, साथ गहरे सम्पर्क करवाया, वह समय या प्रशिक्षण देने वाला या शिक्षक बताईए जिसने आप को परमेश्वर की ओर ले जाने के बजाए अपनी ओर ले गया।
२. वह समय बताईए जब आपने परमेश्वर को आप के मन में बात करना सुना या आप को दर्शन दिखाया या भविष्यवाणी करी।
३. वह समय बताईए जब परमेश्वर ने आप को आप के जीवन की परिस्थिती को समझाते हुए आप से बात करी।
४. वह समय बताईए जब परमेश्वर ने आप के मन में शांति या अशांति के साथ बात करी।
५. वह समय बताईए जब परमेश्वर ने पवित्रवचन के माध्यम से आप से बातचीत करी।
६. वह समय बताईए जब परमेश्वर ने अविभक्त विचार के माध्यम से बात करी।
७. जब आप जीवन में निर्णय ले रहे हो तो निम्न कार्य पृष्ठ को उतार कर प्रयोग करीए। इस समय जो आप के नतीजों को दूसरों के साथ बाँटीए।

उत्पादक निर्णय बनाना - छः स्तंभों के प्रयोग से

नाम _____ दिनांक _____

मेरे सामने जो समस्या है

१. वह पवित्र वचन जो परमेश्वर मेरे सामने प्रज्वलित कर रहा है _____

२. वह उपदेश जो परमेश्वर मुझे, दोस्तों, प्रशिक्षकों और शिक्षकों को द्वारा प्रज्वलित कर रहा है

३. वह विचार जो प्रज्वलित हो, परमेश्वर की ओर से मैं पा रहा हूँ

४. वह प्रज्वलित समझ की जीवन क्या है और मुझ से पलट कर क्या कह रहा है,

५. मेरे मन की शांती या अशांती का अर्थ है,

६. इस विषय पर, प्रचार, स्वप्न, दर्शन और भविष्यवाणीयाँ जो परमेश्वर मुझे दे रहा है

७. इस बात को मानना की मैं काँच में से धुँधला देख पा रहा हूँ और यह की सारे निर्देश कुछ पल के हैं और कभी भी, किसी भी वक्त, भविष्यकाल में परमेश्वर इसे बदल देगा। निम्न दिया गया मेरा अनुमान है जो मैं समझता हूँ की परमेश्वर, इस विषय के बारे में, इस समय मेरे सामने ला रहा है

इस पत्रे को छापने की अनुमती, मार्क और पैटी विर्कलर, १४३१, बुल्लिस रोड, एल्मा, न्यू यार्क १४०५९ यू एस ऐ, द्वारा प्राप्त है।

अध्याय छ

शिक्षक और शिक्षार्थी के गुण

मुख्य शिक्षक को चुनते समय किन बातों का ध्यान देना चाहिए?

१. उस व्यक्ति को खोजीए जो, उस क्षेत्र में जिस में आप उन्नती करना चाहते हैं, आप से आगे हो।

यह व्यक्ति हर क्षेत्र में आप से आगे नहीं हो सकता, परन्तु उस क्षेत्र में जिस में वह आप को शिक्षा दे रहा है, उस कौशल, अनुभव और योग्यता में आप से महान होना चाहिए। उस क्षेत्र में उस की योग्यता का आप को आदर करना चाहिए, यदि कई और क्षेत्रों में न भी करे। हरमेन रिफैल, मसीही स्वपनों को समझाने के लिए, मेरे शिक्षक रहे हैं। वे मुझ से ३० वर्ष वरिष्ठ हैं और स्वपनों को समझने के क्षेत्र में लगभग ३० वर्षों का अनुभव और प्रशिक्षण है, उन्होंने मुझे स्वपनों में परमेश्वर को सुनने का महान अनुभव दिलाया। उन के शिखाने पर मैं परमेश्वर की आवाज को पूरी रात, हर रात, सुन सकता हूँ। मैं हमेशा उन का अभारी रहूँगा।

२. ऐसे व्यक्ति को खोजीए जिसके साथ आप आराम से रह सकते हैं

हर व्यक्ति के व्यक्तित्व एक दूसरे से टकराते हैं। वे एक समान नहीं हो सकते। आप को ऐसे शिक्षक को चुनना है, जिसका व्यक्तित्व आप के व्यक्तित्व से मेल खाए। कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हें मैं शिक्षा नहीं दे सकता क्योंकि वे मुझ से भिन्न हैं। वे किसी परिस्थिति को मुझ से इतना अलग सोचते हैं कि मैं उन के साथ ठीक से बात चीत नहीं कर पाता। हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी क्षमता को पहचाने और उसी के दायरे में रह कर कार्य करे। हम जग के मुक्तिदाता नहीं हैं। यीशु हैं।

शिक्षक को चाहिए कि वह दूसरों के प्रति संभाल ने वाला हों, सचेत हो, खुले और लचीलेपन स्वभाव का हो। उस में दया की भावना होनी चाहिए और योग्यता होनी चाहिए कि वह पहचान सके कि सामने वाला क्या कहना चाहता है। बिना त्याग के समझने की शक्ति होनी चाहिए। दूसरे के साथ दर्द बाँटने वाला होना चाहिए।

शिक्षक को अपनी आवश्यकताओं को विद्यार्थी पर नहीं थोपना चाहिए बरन विद्यार्थी की आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए।

३. ऐसे व्यक्ति को तलाशीए जो आप पर समय बिता सके। :

अकसर विद्यार्थी और शिक्षक स्पताह में एक बार, या दो सप्ताह मे एक बार या महीने में एक बार आपस में मिलते हैं। बहुत जल्दी जल्दी मिलना भी ठीक नहीं होता, ताकी जो कार्य दिया गया है उसे मुलाकातो के बिच के समय में पूरा, कर, उन्नती देखी जा सकती है। मैं अपने शिक्षकों से पाँच वर्षों तक स्पताह में एक बार मिलता रहा और यह काफी था। अब मैं दो स्पताह में एक बार या महीने में एक बार मिलता हूँ। हर रिश्ते की एक अवदी होती है इसलिए यह आप को तैय करना होगा की आप योजना के मुताबिक कब मिलेंगे।

आप का शिक्षार्थी का जीवन सदैव नही रहेगा। यह कुछ महिनों का या कुछ वर्षों का हो सकता है और फिर यह दोस्ती के रिश्ते में जीवन भर के लिए बदल सकता है। यदि आप समझते है की आप के रिश्तों ने बदलाव आना चाहीए तो आप आपस में बैठ कर इस बदलाव के बारे में विचार विमरश कर सकते हैं। दूसरे व्यक्ति के विचारों के बारे में अनुमान मत लगाईए। सफाई से बात करीए।

एक अच्छा शिक्षार्थी काल का रिश्ता लम्बे अरसे के लिए निर्भर नहीं रहता परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह और उपहार का रास्ता बताते हुए उसे उस में स्थापित करता है।

४. ऐसे व्यक्ति को तलाशीए जो खुद किसी शिक्षा देने वाले के तैहत हो :

स्वयं धोखा खाना आसान है। इसलिए हर एक को कई शिक्षा देने वालो की आवश्यकता है। मैं समझता हूँ की जो अधिकार से मेरे जीवन में बोलता है वह स्वयं कई अधिकारीयों के तैहत होता है। और यह केवल दिखावे का रिश्ता नहीं होना चाहिए। इसे सच्चा होना चाहिए। अकसर कोई व्यक्ति कहता है, "ओ मैं फलाने के तैहत हूँ" परन्तु असल में यह केवल कहने के लिए है और उन दोनो के बीच बिलकुल भी रिश्ता नहीं होता। मैं ने ऐसा बार बार होते देखा है।

जिम जोन्स किसी अधिकारी के तैहत नही था और ९०० लोगों को बरबादी की ओर ले गया था। एक बार मैं एक चेले के तैहत काम कर रहा था जो खुलेआम

कहता था की, "चेले किसी व्यक्ति के तैहत नहीं होते।" मैं इस बता से सैहमत नहीं हूँ। बाईबल बताती है की चेले भी एक दूसरे के तैहत थे। वह मेरा शिक्षक नहीं जो स्वयं किसी से शिक्षा नहीं लेता।

५ ऐसे व्यक्ति को तलाशो जो अपने मन को पहचान सके, यीशु की तरहा, शिक्षक को भी कहना चाहिए :

"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, जैसा सुनता हूँ वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।" यूहन्ना ५:३०

शिक्षक को परमेश्वर की आत्मा पहचाननी चाहिए। शिक्षार्थी को परमेश्वर आगे ले जा रहा है, और यदि इस बात को शिक्षक नहीं पहचान सकता तो उसे चाहिए की वह उस विद्यार्थी को शांति सें रहने दे, और अपने विचारों को उस पर न थोपे। प्रशिक्षण देने वाले को चाहिए की वह किसी व्यक्ति को पीछे चला सके और अनुग्रह से वंचित न करे। उस में इतनी हिम्मत होनी चाहिए की वह उस व्यक्ति में परमेश्वर को समर्पण को लेकर जो उत्सुक्ता और डर और घबराहट है, उसे शांत कर सके।

शिक्षार्थी शिक्षक के महान विचारो की चेष्टा नहीं करता। वह उस विषय में परमेश्वर की दैवी प्रेरणा चाहता है। हमारे विचार उसके विचार नहीं है और न ही हमारे रास्ते उसके रास्ते हैं। इसलिए हम मन में दैवी प्रकाशन चाहते हैं। मन की भावना सम्बंधी विचार नहीं।

यदि आत्मा शिक्षार्थी को जंगल की ओर ले जा रहा है, तो शिक्षक को उसे वादा किए हुए देश की ओर नहीं ले जाना चाहिए। यदि किसी क्षेत्र में परमेश्वर उसे विश्वास दिलाने के लिए उस की बैसाखीयों को निकालता है, तो आप को उसे बैसाखीयाँ नहीं देनी चाहिए, बलकी उस के उस नए विश्वास में स्थिर रहने की शिक्षा देते हुए प्रार्थना करनी चाहिए। इस से पहले की आप किसी व्यक्ति को सलाह दे, आप को यह जान लेना चाहिए की परमेश्वर उसके जीवन में क्या कर रहा है।

६. ऐसे व्यक्ति को तलाशीए जो नम्र और पारदर्शिक है। :

जब आवश्यक हो तो अपनी राह के कुछ पल को भाँटने के लिए तैयार रहे। आत्मिक मित्र और प्रशिक्षक बनने के लिए इमानदार होना आवश्यक है और धुधले काँच के पीछे छिप कर पिता की तरह अधिकार जताना ठीक नहीं। आप अपनी असफलता को भी भाँटने लायक होना चाहिए। आप केवल शिक्षा देने वाले नहीं परन्तु जो पढा रहे हैं उसका नमूना भी बनना चाहिए।

७. ऐसे व्यक्ति को तलाशीए जो सुरक्षित हो :

यह आवश्यक है की शिक्षक वह व्यक्ति हो जिस के खुद की चोटे और दर्द भर गए हों ताकी वह दूसरों को चंगाई देने में स्वतंत्र रहे, यदी वह स्वयं चंगा नहीं हुआ है, तो उसके दर्द, उसके शिक्षार्थीयो तक पहुँचेंगे। यदी कोई असुरक्षित है और उसकी असुरक्षा को दूर किया गया है तो वह अपनी असुरक्षाओं के बारे मे ही उलझा रहेगा, जिसके कारण उस के चेलो को नुकसान पहुँच सकता है। दुर्भाग्यावश, मेरे साथ ऐसा अनुभव दो बार हुआ है जब जो मेरे ऊपर हैं वे घबराह गए और अक्रमण व्यवहार अपना लिया ताकी वे अपने आप को बचा सके और मुझे खतरे और नुकसान में डाल दिया। तब से मैं सतर्क हो गया हूँ और ऐसे शिक्षा देने वालों को खोजता हूँ जिन्होंने परमेश्वर को अपनी असुरक्षा को चंगा होने दिया है।

असुरक्षित व्यक्ति अधिकार जताता है, जो परमेश्वर के लोगो के मध्य निषेध है।

"और यीशु ने उनको पास बुला कर उनसे कहा, तुम जानते हो की जो अन्य जातीयों के हाकिम समझे जाते है, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उन में जो बडे है, उन पर अधिकार जताते हैं, पर तुम में ऐसा नहीं है बरन जो कोई तुम में बडा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे वह सब का दास बनें। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, की उसकी सेवा टैहल की जाए, पर इसलिए आया, की आप सेवा टैहल करे, और बहुतों की छुडोती के लिए अपना प्राण दे।"

(मरकुस १०:४२-४५)

मैं चाहता हूँ की आप अधिकार को पहचानना सीख जाएँ और उस से दूर हो जाए। इस के कुछ प्रमाण यह है:

- () शीर्षक के नाम से बुलाए जाने की खुशी
- () उन की ताकत के तैहत रहने वाले लोगों के साथ धोखाधड़ी
- () लोगों के ऊपर अधिकार होने की खुशी
- () यह मानना की दूसरे लोग उनकी सेवा करने के लिए है
- () उन के तैहत लोगो से सेवा की उम्मीद रखना और सेवा करवाना

यह लोग धोखाधड़ी में इतने माहीर होते हैं की इन को धोखा करते समय पकड़ना असम्भव है। परन्तु, आपकी आत्मा उन के साथ रह कर शांती नहीं पाएगी और पहचान जाएगी की कहीं न कहीं कुछ गलत है। आप अपने विवेक को पहचानने में जितना अधिक समय लगाएंगे, उतना ही इस धोखाधड़ी में फंस जाएंगे। इसलिए सतर्क रहीए।

इसलिए ऐसे व्यक्ति को खोजीए जो आप की क्षमता को पहचान कर उसे उभारे। वह आप पर अधिकार नहीं जता रह है परन्तु आप को उस ओर उभार रहा है जिस के लिए परमेश्वर ने आप को बनाया है।

८. ऐसे व्यक्ति को तलाशें जिसे बाईबल की समझ हो :

आप मुख्य शिक्षक की तलाश में है जो एक विध्वान है। आप से अधिक उन में समझ होगी, न केवल पवित्रवचन में परन्तु कई और क्षेत्रों में भी। आप को ऐसा व्यक्ति चाहिए जिसे बाईबल की जानकारी हो ताकी वह अपने जिवन के अनुभवों को पवित्रशास्त्र से तुलना कर सकें और ऐसा करने में आप की भी मदद करें। आप को ऐसा व्यक्ति नहीं चाहिए जो वचन को न्याय के रूप में पेश करे, परन्तु पवित्र आत्मा की ताकत और दैवी प्रकाशन में बता सके।

९. ऐसे व्यक्ति को तलाश करें जिसने अपने स्वयं के जीवन के अनुभवों को जाँचा है और उन में परमेश्वर के अभिप्राय को पाया। :

ऐसे व्यक्ति का दूसरो के प्रति सच्चा आदर रहता है। उनकी कहानीयाँ उनके दर्द और खुशी के समय, मुख्य होते हैं। यह आदर तब आरंम्भ होता है जब वह अपने

स्वयं की कहानी पर ध्यान देता है। उसने खोज लिया है की उसकी कहानी के इस भाग में कैसे धन्यवाद दिया जाए और जीवन को वह एक पवित्र यात्रा मानता है। एक शिक्षक दूसरे शिक्षक को किस तरह उसके जीवन की कहानी की पवित्रता दिखा सकता है यदि वह अपने खुद की पवित्रता को न पहचान सके?

१०. ऐसे व्यक्ति को तलाशीए जो विश्वास करने योग्य हो। :

ऐसे व्यक्ति की तलाश करें जो आप की बातों को गुप्त रख सके, ऐसा व्यक्ति जो जिस बात को उसे बताया गया है, उस का वह आदर करे और हमारी आवश्यकताओं को गुप्त रख सके। गुप्तता से विश्वास बढ़ता है और उस की उम्मीद हर प्रशिक्षण देने वाले से यीशु मार्गदर्शन करने वाले से हमारे समय में करी जा सकती है।

एक कमजोर शिक्षक के गुण :

१. **टालने वाला** - एक ऐसा व्यक्ति जिसे कभी भी एकत्रित होने का समय नहीं मिला और जो भावमय नहीं होना चाहिए।
२. **थोपने वाला** - एक ऐसा व्यक्ति जो अपने शिक्षार्थी को अपना सहायक समझता है और इस से भी बुरा वह उसे सेवक समझता है।
३. **समालोचक** - एक ऐसा व्यक्ति जो आप की गलतीयों पर केद्रित कहता है बजाए इसके की आप के उपहारों को बाहर निकालें।

शिक्षार्थी के गुण :

यदि इस रिश्ते को उन्नती करनी है तो शिक्षार्थी के भी कुछ गुण होने चाहिए।

१. शिक्षार्थी को नम्र और सीखने लायक होना चाहिए

उसे सीखने की इच्छा होनी चाहिए और ठीक होना, निर्देश पाना, गलतीयाँ सुधारना और आदेश पाने की इच्छा रखने वाला होना चाहिए। यदि उसे सब कुछ पता है तो अधिक उन्नती नहीं हो सकती।

२. शिक्षार्थी मे तीव्रता से सीखने की इच्छा होनी चाहिए।

शिक्षार्थी को यह जान लेना चाहिए की उन्नती पाना कठिन है और दर्दनाक भी जब हम नए कौशल को पाना चाहते हैं और विभीन्न रास्तो से चीजें पाना चाहते हैं। यदी उन्नती करने की इच्छा न हो तो उन्नती पाने का दर्द, उन्नती को रोक सकता है।

३. शिक्षार्थी को खुला और पारदर्शी होना चाहिए।

शिक्षार्थी को चाहिए की वह अपने मन से खुले रुप से बात करे। उन्नती को पहचानना कठिन हो जाता है, कोई दिखावा करने लगता है। सच्ची उन्नती के लिए सच्चाई सब से अवश्यक है।

४. शिक्षार्थी को जो कार्य तैय किया गया है उस के अनुसार चलने की इच्छा होनी चाहिए।

शिक्षार्थी को जो कार्य तैय किया गया है उसके कठिन कार्य करने की इच्छा होनी चाहिए। इस कठिन कार्य के बिना, कोई बदलाव नहीं हो सकता और रिश्ता नकामयाब हो जाता है। एक बार मेरा एक शिक्षार्थी था जो अपने जीवन के मार्ग को अपनाने के लिए मेरी सलाह से सहमत था। परन्तु, मेरी बात को किस तरह माने, उस में यह अनुशासन नहीं था। इसलिए शिक्षार्थी काल के रिश्ते का फलरहित अन्त हो गया।

पुनर्विचार

शिक्षक होने के नाते अपनी सीमाओं को पहचानें। केवल उन्हीं को शिक्षा दे जो स्वयं यह समझते हैं की आप उनकी मदद कर सकते हैं। जितनी दूर तक ले जा सकते हैं, उन्हें ले जाईए, फिर जो आप सही समझते हैं, उस दूसरे रिश्ते का सुझाव दे सकते हैं। इस तरह करने से आप का रिश्ता मित्रता में अन्त होगा बजाए बुरे विवाद के साथ अलगाव के।

निजा प्रार्थनापत्र

निम्न एक जाँच सूची है जिस का प्रयोग दोनो, शिक्षक और शिक्षार्थी कर सकते हैं यह जानने के लिए की उन का शिक्षा काल का रिश्ता कितना असरदार है। यह अच्छा होगा की कभी कबार आप स्वयं को जाँच लें की आप शिक्षक या शिक्षार्थी के रूप में ठीक कार्य कर रहे हैं की नहीं। इस प्रतिलिपी के साल में एक दो बार भरीए, ताकी आप सही मार्ग में बने रहें।

शिक्षार्थीकाल की उत्तमता नियंत्रण जाँच सूची

क्या मैं _____ के लिए एक अच्छा शिक्षक बन सकता हूँ (या क्या मैं एक अच्छा शिक्षक हूँ)।

हाँ / नहीं

- _____ १. मैं उस व्यक्ति से आगे हूँ जिसे मैं शिक्षा देने जा रहा हूँ, उस क्षेत्र में जिस में उसे शिक्षा दी जा रही है।
- _____ २. मैं इस व्यक्ति के साथ आराम अनिभव करता हूँ।
- _____ ३. मेरी इच्छा है और मैं इस व्यक्ति के लिए समय निकाल पाऊँगा।
- _____ ४. मैं स्वयं दूसरों के आत्मिक कवच के नाचे हूँ।
- _____ ५. मैं अपने मन और परमेश्वर की आत्मा को पहचान पा रहा हूँ।
- _____ ६. मैं नम्र और पारदर्शी हूँ।
- _____ ७. मैंने परमेश्वर को अपनी असुरक्षाओं को चंगा करने दिया है।
- _____ ८. मुझे बाईबल की अच्छी समझ है।
- _____ ९. मैंने अपने जीवन के अनुभवों पर ध्यान लगाया है और परमेश्वर के मकसद को उस में पाया है।
- _____ १०. मैं विश्वास के योग्य हूँ।
- _____ ११. मैं समझता हूँ की परमेश्वर चाहता है की मैं इस व्यक्ति के साथ इस समय शिक्षणकाल के रिश्ते में प्रवेश करूँ (रिश्ता बनाए रखूँ)।

यदी रिश्ता अभी चल रहा है तो निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- _____ १. मैं इस व्यक्ति के साथ मुलाकात तो नहीं टाल रहा हूँ।
- _____ २. मैं अपने कार्यों को इस व्यक्ति पर थोप तो नहीं रहा हूँ।
- _____ ३. मैं इस व्यक्ति का समालोचन तो नहीं कर रहा हूँ।

इस शिक्षार्थी के स्वभाव सही लग रहे हैं, इन्हें निम्न वाक्यों से बताईए

- _____ १. वे नम्र और पढाए जाने लायक लग रहे हैं।
- _____ २. उन्हें सिखाने की इच्छा है।
- _____ ३. वे खुलने को तैयार हैं और पारदर्शक हैं।
- _____ ४. वे माने गये मार्ग पर चलने के लिए तैयार लगते हैं।

उपर्युक्त जवाबों के आधार पर मैं समझता हूँ की मुझे इस व्यक्ति से शिक्षा ले लेनी चाहिए / नहीं लेनी चाहिए (जो सही है उस हर निशान लगाएँ) या (जारी रखनी चाहिए)।

यदी आप प्रशिक्षण लेना चाहते हैं तो इस बात की संतुष्टी कर लीजिए की दोनों विषयों के सम्बंध में आप के पास चालू करार है (निम्न नमूना देखीए)।

इस पत्रे को छापने की अनुमती, मार्क और पैटी विर्कलर, १४३१, बुल्लिस रोड,
एल्मा, न्यू यार्क १४०५९ यू एस ऐ, द्वारा प्राप्त है।

शिक्षार्थीकाल की उत्तमता नियंत्रण जाँच सूची

शिक्षार्थी के लिए बनाया गया, यदि वह गुरु शिक्षक का खोज में है।

उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसे आप उपदेशक, प्रशिक्षक या शिक्षक बनाना चाहते हैं _____

हाँ / नहीं

- _____ १. जिस क्षेत्र में मैं शिक्षा लेने जा रहा हूँ, उस क्षेत्र में वह व्यक्ति मुझ से आगे है।
- _____ २. मैं इस व्यक्ति के साथ आराम अनुभव करता हूँ।
- _____ ३. ऐसा लगता है की वह इच्छुक है और मेरे लिए समय निकाल पाएगा।
- _____ ४. ऐसा लगता है की वह दूसरों के आत्मिक कवच के नीचे है।
- _____ ५. ऐसा लगता है की वह अपने मन और परमेश्वर की आत्मा को पहचान पा रहा है।
- _____ ६. ऐसा लगता है की वह नम्र और पारदर्शी हूँ।
- _____ ७. ऐसा लगता है की उसने, परमेश्वर को अपनी असुरक्षाओं को चंगा करने दिया है।
- _____ ८. ऐसा लगता है की उनको बाईबल की अच्छी समझ है।
- _____ ९. ऐसा लगता है की उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों पर ध्यान लगाया है और परमेश्वर के मकसद को उन में पाया है।
- _____ १०. ऐसा लगता है की उन पर विश्वास किया जा सकता है।
- _____ ११. मैं समझता हूँ की परमेश्वर चाहता है की मैं इस व्यक्ति के साथ इस समय शिक्षणकाल के रिश्ते में प्रवेश करूँ (रिश्ता बनाए रखूँ)।

यदी रिश्ता अभी चल रहा है तो निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- _____ १. वह मेरे साथ मुलाकात तो नहीं टाल रहा है।
- _____ २. क्या वह अपने कार्यों को मुझ पर थोप तो नहीं रहा है।
- _____ ३. क्या वह मेरा समालोचन तो नहीं कर रहा है।

मेरे (शिक्षार्थी) के स्वभाव सही हैं, इन्हें निम्न वाक्यों से बताईए

- _____ १. मैं नम्र और पढाए जाने लायक हूँ।
- _____ २. मुझ में सिखाने की इच्छा है।
- _____ ३. मैं खुलने को तैयार हूँ और पारदर्शक हूँ।
- _____ ४. मैं समझोते के मार्ग पर चलने के लिए तैयार हूँ।

उपर्युक्त जवाबों के आधार पर मैं समझता हूँ की मुझे इय व्यक्ति को शिक्षा देनी चाहिए / नहीं देनी चाहिए (जो सही है उस हर निशान लगाएँ) या (जारी रखनी चाहिए)।

यदी आप किसी व्यक्ति को प्रशिक्षण दे रहे हैं तो इस बात की संतुष्टी कर लीजिए की दोनों विषयों के सम्बंध में आप के पास चालू करार है (निम्न नमूना देखीए)।

इस पत्रे को छापने की अनुमती, मार्क और पैटी विर्कलर, १४३१, बुल्लिस रोड, एल्मा, न्यू यार्क १४०५९ यू एस ऐ, द्वारा प्राप्त है।

गुरु शिक्षक / शिक्षार्थी रिश्ते के सम्बंध में करार

_____ दिनांक को _____ और _____ के बीच बनाया गया।

१. दोनों में से कोई भी इस रिश्ते को किसी भी समय समाप्त कर सकता है।
२. शिक्षक, शिक्षार्थी के मन से उपहारों, दैवी प्रकाशनों और निर्देशों को निकालने में मदद करेगी।
३. सामान्य रूप से बात की जाए तो, हम _____ बार मिलेंगे (सप्ताह में एक बार, दो सप्ताह में एक बार, महीने में एक बार)।
४. मुख्य क्षेत्र जिस पर हम दोनों मिलकर काम करेंगे _____।
५. वे क्षेत्र जिन में हम प्रवेश नहीं करेंगे _____।
६. इस बात से सहमत हैं की हम अपने रिश्ते में अधिकार को नहीं आने देंगे। फिर भी, यदी विषय से सम्बंधित कार्य, शिक्षार्थी को करने के लिए दिए गए हैं और वह उन्हें नहीं कर पाता है तो, इस रिश्ते को समाप्त करने का यह एक कारण हो सकता है।
७. हम दुबारा _____ दिनांक को मिलकर तैय करेंगे की हमने अपने इस रिश्ते को आगे बढ़ाना है की नहीं।
८. कुछ और

हस्ताक्षर _____ दिनांक _____

हस्ताक्षर _____ दिनांक _____

अध्याय सात

पहचानना की आप के शिक्षक कौन थे

इस अध्याय में हम चाहते हैं की आप फिर से एक बार पहचानें की आप के शिक्षक कौन थे। क्योंकि हम ने शिक्षा काल का फल देखा है इसलिए हम और आगे बढ़ना चाहते हैं।

अध्याय दो में हम ने उपदेशकों, प्रशिक्षकों और शिक्षकों (चले बनाने वालों) में कुछ भेद देखे। हम ने आप को सूची बनाने को भी कहा, इन में से जिन लोगो ने आप के पिछले जीवन में मुख्य भूमिका निभाई है। मैं चाहता हूँ की आप पाँच मिनट का समय ले और आगे बढ़ने से पहले उस अध्याय को दोबारा दोहराईए क्योंकि जो हम आगे बताने जा रहे हैं वह उस पाठ पर निर्भर है।

आप के उपदेशक, प्रशिक्षक और गुरु शिक्षक, केवल लोग नहीं हैं परन्तु आप के स्वपन, पुस्तकें जो आप ने पढ़ी हैं और चलचित्र जो आपने देखी हैं, वह भी आप को शिक्षा देते हैं।

स्वपनों के द्वारा उपदेश :

"मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है, इसलिए की वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊँगा।"

(भजन १६:७)

उपर्युक्त वचन से बाईबल यह साफ बताती है की परमेश्वर हमें रात में स्वपनों के माध्य से उपदेश देता है और बाईबल में उत्पत्ति से ले कर प्रकाशितवाक्य तक ऐसे उदहारण भरे हुए हैं।

प्रेरित १६:६-११ में पौलुस को रात में दर्शन के द्वारा उपदेश मिला। प्रचार की यात्रा में जब वह यह नहीं तैय कर पा रहा था की कहाँ जाए तब उसे रात में एक दर्शन में एक मकिदुनी पुरुष दिखायी दिया जो उसे बुला रहा है। वह सुबाह उठा, उसने पहचाना की यह परमेश्वर का इशार था कि वा मकिदुनिया जाए और वह वहाँ गया।

यूसुफ (जो मरियम का पति था) ने कई बार स्वपनों के द्वारा परमेश्वर के संदेश को सुना। मत्ती १:२० में एक दूत यूसुफ को दिखाई पड़ता है जो उसे उत्तेजित करता है की वह मरियम को अपनी पत्नी बनाले।

मत्ती २:१२ में परमेश्वर ने मजूसीयों को स्वपने में चेतावनी दी की वे हेरोद के पास वापस ना जाए। अगली आयत में परमेश्वर का दूत यूसुफ को स्वपन में दिखाई दे कर यूसुफ को मिस्र छोड़ कर जाने को कहता है और फिर आयत १९ में परमेश्वर का दूत फिर से यूसुफ को दिखाई दे कर कहता है की वह अपने परिवार के साथ इस्राएल को चला जाए। अध्याय के अन्त होने से पहले, २२ आयत में हम फिर से देखते हैं की परमेश्वर यूसुफ को यहूदा न जाने की सलाह देता है।

यह ५० में से कुछ ही उदहारण हैं जो पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं, जहाँ परमेश्वर स्वपनों के द्वारा हमारा उपदेशक बना है। कई लोग इस बात की गवाही देते हैं की उन्होंने परमेश्वर से निर्देश और उपदेश स्वपनों के द्वारा पाया है। एक निर्माण ठेकेदार ने मुझे बताया की जिस दिन वह अपने कार्य के लिए जब बाकी पैसे माँगने जाने वाला था, तब उस रात उसे एक स्वपन आया। उस स्वपन में उसने देखा की जिस व्यापारी से वह पैसे माँगने जा रहा था, उसकी पत्नी उस से गिड़गिड़ा रही थी की वह उस के पती पर गुस्सा न करें। जब वह उस व्यापारी के दफ्तर गया तो, उस व्यक्ति ने, बिना किसी वजाह के, उसे पैसा देने से इन्कार कर दिया। जब उस ठेकेदार ने अपने अन्दर क्रोध को बढ़ते देखा, तो उसे अपना स्वपन याद आया वह केवल यह कह कर वहाँ से निकल गया, "यदी व्यापार करने का तुम्हारा यह तरीका है तो ठिक है।" उस व्यापारी ने तुरन्त उसे रुकने को कहा और बकाया पैसे का एक चैक उसे दिया। उस ठेकेदार ने मुझे बताया की यदि वह गुस्से में आ जाता तो वह व्यापारी उसे पैसे भी नहीं देता और किसी तकनी की मूसीबत में उसे फँसा कर कटघरे तक ले जाती जहाँ ठेकेदार को अपनी जेब से पैसा भरना पड़ता। सच में स्वपन से उपदेश पाकर ठेकेदार ने पैसे भी बचाए और अदालत जाने से भी बचा।

मैं समझता हूँ की आप लोगों ने भी स्वपन में परमेश्वर का संदेश पाकर पालन किय होगा। यदि नहीं, तो आप मसीही स्वपनों को समझने का प्रशिक्षण ले ताकी आप परमेश्वर की अदभुत आवज को और संदेश को स्वपनों के माध्यम से पहचान सकें। निम्न दिए गए कार्य पत्रे पर, आप को मौका देंगे की आप अपने कई स्वपनों को जहाँ परमेश्वर ने संदेश दिया हो सक्षिपत में लिखें।

जो पुस्तकें पढ़ि हैं उन से शिक्षा पाना :

पुस्तकें अच्छी दोस्त, उपदेशक, प्रशिक्षक या कई बार शिक्षक भी बन सकती हैं। शायद हमें में से हर एक जन किसी महान पुस्तक के साथ बिस्तर में दुबक गया हो और अपने जीवन में परमेश्वर को उपदेश देने दिया हो। आप में से कई सैकड़ों ऐसी पुस्तकें बता देंगे जो आप के जीवन के कई क्षेत्रों में आप पर गहरा असर किया होगा। चाहे वह परिवार के रहने के स्तर की उन्नति हो, बातचीत या पसन्दिदा चीज़ों को सीखना या नए कौशल को बढ़ावा देना या आत्मिक उन्नति को बढ़ावा देना। आप कई ऐसी किताबें बता सकते हैं, जिन्होंने आप के जीवन को आकर्षित किया है। निम्न कार्यपत्र पर आप संक्षिप्त में कुछ ऐसी पुस्तकें लिखिए जो आप के जीवन पर गहरा प्रभाव किया हैं।

पुस्तकें मेरे जीवन का खून हैं। यह युगों और महादीपों पर छाई हुई हैं। मैं अब केवल मेरे शहर में बन्द नहीं हूँ, परन्तु अब मैं हजारों वर्षों और सैकड़ों देशों का सफर कर सकता हूँ। मुझे इन किताबों में कई बुद्धिमान और कोमल हृदय और ज्ञानी मित्र मिले। यह मेरे सबसे उत्तम शिक्षक रहे हैं। जब मैं महसूस करता हूँ की परमेश्वर किसी क्षेत्र में मुझे निपुण करना चाहता है तो मैं किताबों से प्रारम्भ करता हूँ। उस विषय पर जितनी भी पुस्तकें मिल जाएं, उन्हें पढ़ना शुरू कर देता हूँ। किताबों की गिनती ५ से २५ तक रहती है परन्तु एक बार तो यह ७० तक पहुँच गयी। जब मेरा मन और आत्मा इन लोगों के जीवन के बारे में पढ़ना प्रारम्भ करता हूँ और समझने लगता हूँ तो मैं पवित्रात्मा की ओर मदद के लिए मुड़ता हूँ, परमेश्वर मेरे विचारों को और समझ को इन विचित्र सच्चाई को समझने में तैयार करने लगता है। यह मेरे जीवन में काफी मायने रखते हैं। मैं अकसर इन अदभुत गुरु शिक्षकों और पवित्रात्मा के कार्यों से बदल जाता हूँ।

जो चलचित्र आप ने देखी हैं उनके द्वारा शिक्षा पाना :

सिनेमा का क्या? कई चलचित्रों में शाक्तिशाली विषय होते हैं, जो हमारे जीवन को कई तरह से चुनौती देते हैं। जो मजकीया (सुखान्त) चलचित्र होते हैं वे हमें अपने आप पर और जीवन पर हँसना सिखाते हैं और सिखते हैं की हमें अपने आप को कठोर नहीं बनाना है यह बाईबल के वचन को मानने जैसा हैं, "एक खुशी मन दवा की तरह काम करता है।" नीचे दिए गए कार्यपत्र पर आप उन चलचित्र के नाम लिखिए जिन से आपका जीवन प्रभावित हुआ है।

कई चलचित्रों ने मेरे जीवन को प्रभावित किया है। एक चलचित्र जो मैं नहीं भूला सकता, वह है "स्टार वारस", जिस में लूक स्कायवाकर अपने अंदर की शक्ति पर विश्वास करना सीखता है, बजाए अपने दिमाग के विवादों के। मैं ने भी अपने दिमाग के विचारों से अधिक अपने अंदर की शक्ति (पवित्रात्मा) पर विश्वास करना सीखा है। उस चलचित्र ने चित्र के रूप में मेरे संघर्ष को दर्शाया है और मुझे प्रोत्साहन दिया की मैं आगे बढ़ते जाऊँ और भी अधिक लगाव के साथ ताकी उस अधभुत पवित्रात्मा को खोजूँ जो मेरे मन में वास करता है।

एक और चल चित्र जो इस पुस्तक के विषय से सम्बंधित है वह है, "द कराटे किड" चित्र में कितनी खुबसूरती से शिक्षा काल के रिश्ते को दर्शाया है। खास कर के मैं उस बारे में सोचता हूँ, करने को कहा जो आवश्यक नहीं थे, जैसे मेड़ को रंग करने को कहना, कार पर मोम लगाना, फर्श चमकाना। ऐसे लग रहा था की उसे किसी नौकर की तलाश थी, जो उस के कठिन कार्यों को कर सके। फिर भी शिक्षार्थी का अपने शिक्षक के प्रति आदर और सीखने की इच्छा के कारण वह उन सब कार्यों को कई घण्टों की कड़ी मेहनत के साथ और बिना शिकायत के करता है। परन्तु जब वह इन सब कार्यों की वजाह पूछता है तो उसे पता चलता है की यह सब केवल कार्य नहीं थे परन्तु जो वह सीखने जो रहा था उस के लिए प्रशिक्षण था।

उसी तरह कोई शिक्षक अपने शिक्षार्थी से ऐसा कार्य करवा सकता है जिसका उस की उसके कौशल से कुछ लेना देना नहीं हैं। हम शिक्षार्थी होने के नाते उन सब कार्यों को पूरी योग्यता के साथ करते है यह मानते हुए की इन में कोई कारण होगा जो हम नहीं देख पा रहे हैं। और हम शिक्षक होने के नाते ऐसा कार्य दें जो न केवल उसकी आज्ञापालन को बताता है परन्तु सच मे प्रशिक्षण अनुभव हो। हमारे पास उन सब के आत्मिक कारण होने चाहिए क्योंकि जो परमेश्वर हमारे निगेराणी में रखता है, उन के लिए जो भी माँगसकें।

जब वे लोग जो यीशु को सुनने आए थे भूके हो गए तो, यीशु ने अपने चेलों से कहा की वे उनकी आवश्यकताओं को पूरा करें। और जब खाने को परोसने का समय आया तो, चेलो ने यह कार्य किया। हो सकता है की वो सोच रहे हों की मैं क्यों खाना परोसूँ? मैं कोई खाना परोसनेवाला या नौकर नहीं हूँ। यीशु को चाहिए था की वे उन लोगों में से ही कुछ स्वयं सेवकों को यह करने को कहते, मैं तो उनका एक चेला हूँ। मुझे चाहिए की मैं यीशु से लोगों की आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के बारे में सवाल करूँ। परन्तु इस कार्य को करवाने के पीछे यीशु के

पास एक कारण था। क्योंकि वे विश्वासी थे, इमानदार थे। इस कार्य को करने में उन्होंने अपने आप को एक चमत्कार को पूरा करने में हाथ बटाया।

कई चलचित्र प्रेम और वफादारी और बलीदान और सच्चाई और हिम्मत और सही और गलत और बदलाव और परिवर्तन और जीवन काल के अनुभवों को चित्र के रूप में बनाते हैं। वे पति पत्नी की बात चीत, टूटे हुए रिश्ते और दुबारा मिले रिश्तों के बारे में बताते हैं। वे हमारे मन को गहराई से छू जाते हैं क्योंकि चित्र हमारे मन की भाषा हैं। चाहे चलचित्र में कुछ गलत बताया जा रहा हो, तौभी हमारे अंदर की आत्मा की मदद, से हम आत्मिक सच्चाई को दूढ़ सकते हैं। हाँ, चलचित्रों ने मेरे अंदर मेरे मन और आत्मा में गहराई से कार्य किया है और मेरे शिक्षकों में से एक रहीं हैं।

उपदेशकों, प्रशिक्षकों और शिक्षकों की कार्य पृष्ठ :

निम्न दिए गए पन्नों पर उपदेशकों, प्रशिक्षकों और शिक्षकों की सूची बनाईए जो आप के जीवन में रहे हैं और आपने उन से क्या सीखा, आपने अध्याय दो में जो सूची बनाई है, उस से प्रारम्भ करें और बाद में जो नाम याद आते जाते हैं, लिखते जाईए, किताबों, चलचित्रों या स्वपनों के भी शीर्षक लिखते जाईए। आप अपने स्वपनों का भी शीर्षक देना चाहते हों और उन से क्या सीखा उसे संक्षिप्त में लिखना चाहते हों तो लिख सकते हो।।

पहले, निम्न आपकी खोज के कुछ सुझाव हैं। हर स्तर को एक उन्नती का माप दीजीए

रिश्तेदारी का स्तर :

- १.उपदेशक
- २.प्रशिक्षक
- ३.शिक्षक

दूसरा, आप निम्न पन्ने की तीन प्रतिलिपीयाँ बनाईए, पहले पन्ने पर आप लोगों की सूची बनाईए, दूसरे पर पुस्तकों और चलचित्रों की सूची और तीसरे पन्ने पर स्वपनों की सूची।

हमने आप को चार पन्ने दिए हैं ताकी पहले पन्ने पर आप आत्मिक शिक्षकों की सूची बनाईए, पारिवारिक शिक्षकों की सूची दूसरे पन्ने पर, कभी कबार सलाह देने वालों की सूची तीसरे पन्ने पर और बाकी सब चौथे पन्ने पर।

प्रार्थना में कुछ समय बिताईए ताकी परमेश्वर आप को उन उपदेशकों, प्रशिक्षकों और शिक्षकों की सूची बता सके जो आप के जीवन मे थे।

मेरे जीवन में उपदेशकों, प्रशिक्षकों और गुरुओं के लिए कार्य पत्रे का एक नमूना

रिश्तेदारी के स्तर :

१ - उपदेशक २ - प्रशिक्षक ३ - गुरु

उपदेशक, प्रशिक्षक, गुरु स्तर	रिश्तेदारी के स्तर	रिश्तेदारी के जो मैं मुझे चाहता हुँ	क्षेत्र जिस में वे शिक्षा देते हैं
रोजर	३	३	सब
पैटी	२	२	सब
मौरिस	३	३	आत्मिक
ऐडी	२	२	निर्माण
वैंडरहुक	१	१	तत्त्वज्ञान
स्टार वारस	१	१	भीतरी बहाव पर विश्वास
की यीशु से मिलूँ	१	१	विश्वास करते रहो तो पाओगे
टौमी	२	२	बड़ा हृदय

मेरे आत्मिक जीवन में उपदेशकों, प्रशिक्षकों और गुरुओं के लिए कार्य पत्रे का एक नमूना

रिश्तेदारी के स्तर :

१ - उपदेशक २ - प्रशिक्षक ३ - गुरु

उपदेशक, प्रशिक्षक, गुरु स्तर	रिश्तेदारी के स्तर	रिश्तेदारी के जो मैं मुझे चाहता हुँ	क्षेत्र जिस में वे शिक्षा देते हैं

मेरे परिवारिक जीवन में उपदेशकों, प्रशिक्षकों और गुरुओं के लिए कार्य पत्रे का एक नमूना

रिश्तेदारी के स्तर :

१ - उपदेशक

२ - प्रशिक्षक

३ - गुरु

उपदेशक, प्रशिक्षक, गुरु स्तर	रिश्तेदारी के स्तर	रिश्तेदारी के जो मैं मुझे चाहता हुँ	क्षेत्र जिस में वे शिक्षा देते हैं

मेरे व्यवसायिक जीवन में उपदेशकों, प्रशिक्षकों और गुरुओं के लिए कार्य पत्रे का एक नमूना

रिश्तेदारी के स्तर :

१ - उपदेशक

२ - प्रशिक्षक

३ - गुरु

उपदेशक, प्रशिक्षक, गुरु स्तर	रिश्तेदारी के स्तर	रिश्तेदारी के जो मैं मुझे चाहता हुँ	क्षेत्र जिस में वे शिक्षा देते हैं

मेरे जीवन के दूसरे क्षेत्रों में उपदेशकों, प्रशिक्षकों और गुरुओं के लिए कार्य पत्रे का एक नमूना

रिश्तेदारी के स्तर :

१ - उपदेशक

२ - प्रशिक्षक

३ - गुरु

उपदेशक, प्रशिक्षक, गुरु स्तर	रिश्तेदारी के स्तर	रिश्तेदारी के जो मैं मुझे चाहता हुँ	क्षेत्र जिस में वे शिक्षा देते हैं

अध्याय आठ

पहचानना की आप कहा हैं जीवन की यात्रा

"मैं कहा हूँ, परमेश्वर ? यह इस समय की पुकार है। आप मुझे कहाँ से लेकर आए, मैं कहाँ हूँ, और आप मुझे कहा ले जा रहे हैं? इस अध्याय में हम यह पहचानने की कोशिश करेंगे की परमेश्वर हमें कहाँ ले कर आया है और अगले अध्याय में यह जानने की कोशिश करेंगे की वह हमें कहाँ भेजना चाहता है। जीवन सच में एक यात्रा है, जिस में कई सच छिपे हुए हैं जिन का प्रारम्भ और अंत है। कई बार हम इस सिने पहाड़ के चक्कर को दुबारा दोहराते हैं ताकी जो सच परमेश्वर साबित करना चाहता है, हमारे जीवन में इस समय, उसे सीख सकें।

जंगल के सबक को सीखना :

कई इस्राएली जंगल से निकल कर नहीं आए। वे कड़कती गर्मी में मर गए। वे यह कभी नहीं सीख पाए की वह क्या है जो परमेश्वर उन्हें सिखाना चाह रहा था, और इस कारण, वह यात्रा जिसे कुछ दिनों में समाप्त हो जाना चाहिए था, उसे ४० वर्ष लग गए। कितनी दर्दनाक संभावना। मैं समझता हूँ की आप के या मेरे साथ ऐसा नहीं होना चाहिए। दूध और शाहद का देश है, यहाँ पृथ्वि पर जिस में हम ने प्रवेश करना है। इस्राएली इस देश में प्रवेश नहीं कर पाए और अब हम नए इस्राएली होने के नाते, हम भी कर सकते हैं। यह श्रेष्ठता की भूमि है, जहाँ दुश्मन की दिवारों को गिरा दिया जाता है और नयी मातृभूमि स्थापित की जाती हैं। यह परमेश्वर की आशीष का देश है जहाँ जिस किसी वस्तु पर परमेश्वर अपना हाथ रख दे वह आशीषित हो जाएगा (व्यवस्था २८:८)। यह वह देश है जहाँ हम सर हैं दुम नहीं, जहाँ हम देते हैं माँगते नहीं, जहाँ हम ऊपर हैं नीचे नहीं। यह वादा किये गए आशीषों का देश है, वादे के श्रापों का नहीं जैसे की व्यवस्थिविवरण २८:१-१४ में वादा किया गया है। यह मसीह जो स्वर्गीय स्थानों में है उस के द्वारा राज्य किया जाता है और देशों को उस के पैरों तले चेला बनाया जाता है। यह प्रोढ़ता का देश है जिसे परमेश्वर ने पहले ही निश्चीत कर लिया है अपनी कलीसीया के लिए की वह उस में चलें। यह दूध और शहद का देश है।

परन्तु, कई लोग ऐसे हैं जो इस देश में प्रवेश नहीं कर पाते। इसलिए हमें अपना रास्ता तैय करनी है ताकि हम स्थिरता से उस पर चलें उस दीपक तक जो हमारे रास्ते में ज्योती जलाता है। हर रास्ता भिन्ना स्थानों से प्रारम्भ होता है भिन्न व्यक्ति के साथ, विभिन्न परिस्थितियों में। परमेश्वर की इच्छा है की हमारे रास्ते उस तक पहुँचे और भरपूर जीवन के साथ, जो उसने हमारे लिए निश्चय किया है।

आग से परीक्षा :

हर पाठ पढ़ाया जाएगा, और फिर आग से परीक्षा की जाएगी, फिर दूसरा आग से परीक्षा, की जाएगी, जब तक हम शुद्ध सोने के पात्र नहीं बन जाते ताकि गुरु हमारा प्रयोग कर सके।

"और यह इसलिए है की तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो आग से तार्ये हुए नाशमान सोने से भी कही अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।"

(१ पतरस १:७)

तो हम सच सीखेंगे, फिर हम आग के बप्तिस्मों का अनुभव करेंगे, परीक्षा के रूप में, ताकि यह पता चल सके की हम सच में कितनी गहराई से विश्वास करते हैं। क्या लड़ाई की गर्मी में हम उसे खो देंगे? या हम अपने विश्वास में स्थापित होंगे, शुद्ध करने वाले की आग में शुद्ध होकर और परीक्षा में सफल हो कर ताकि हम आगे बढ़ सके?

परमेश्वर चाहता है की हम मसीह की प्रारम्भिक, शिक्षा को छोड़कर प्रोढ़ता को अपनाएँ..... और यह हम करेंगे यदि परमेश्वर की इच्छा हो तो (इब्रा ६:१-३) जब परमेश्वर देखता है की नींव अच्छी डाली गयी है, तो वह हमें आज्ञा देगा की हम आगे बढ़ कर निर्माण करें और हमारे जीवन की दिवारे और छत बनाएँ।

यही जीवन की रीती है। यह कोई बनाई गयी कहानी नहीं है। यह वे नियम हैं जिन के द्वारा हम खेल खेलते हैं और यदि हम न्यायपूर्वक लड़ें तो हम मसीह का ताज पा सकते हैं। हमें यह समझना है की यह खेल क्या है और इस के नियम क्या है, ताकि हम न्याय पूर्वक खेल कर जीत पा सकें।

“मैं अच्छे कुप्ति लड चुका हूँ, मैंने अपनी दौड पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवालि की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है जिसे प्रभु जो धर्मि और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं बरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।”

(२ तिमोथीयुस ४:७,८)

कुछ लोग खेल की योचना को नहीं समझ पाते और ना ही जीतने के नियमों को और जब परमेश्वर तीव्र परिक्षा डालता है तो उनका विश्वास हार जाता है और उन का जहाज डूब जाता है।

“हे पुत्र तिमोथियुस उन भविष्यवाणीयों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गयी थी, मैं यह आज्ञा सौप्ता हूँ की तू उन के अनुसार अच्छे लडाई को लडता रहे और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रहे जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। उन्ही में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया की वे निन्दा करना ना सीखें।”

(१ तिमोथीयुस १:१८-२०)

उपर्युक्त आयत से यह साफ हो जाता है की यदि किसी के पास विश्वास नहीं या साफ समझ नहीं तो वह हार सकता है। जब तीव्र वायू बहती है, तो क्या मैं फिर भी परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ? क्या मैं तब भी परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ जब वह इन बातों को होने देता है जो दर्दनाक हैं? क्या मैं वही करता हूँ, जो मेरी समझ मुझे करने को कहती है?

यदी हँ तो मैं जीवन के तूफान को पार करके उस निश्चीत देश में जा पाऊँगा। यदि नहीं, तो मेरा जहाज डूब जाएगा।

तो दिमाग में इस योजना के साथ, हम देखेंगे की इस समय जीवन के किस मोड पर आप खड़े हैं बीते समय के पथ पर परमेश्वर से कहीए की वह आपके साथ चले। जब आप जवान थे तब से प्रारम्भ करीए, साल दर साल देखीए, और परमेश्वर से कहीए की, "परमेश्वर आप मेरे जीवन के इस समय में मुझे क्या शिक्षा देना चाहते थे? आपने जो सीखा है उस से कई पन्ने भर सकते हैं।

कुछ मुक्ति के पहले की बातें होंगी, जो आज तक चली आ रही होंगी। यह बुद्धिमानी होगी यदि आप परमेश्वर से पूछें कि क्या हर सबक आग की परीक्षा से गुजारा है और शुद्ध पाया गया है या अभी और परीक्षा की आवश्यकता है। मट्टी और धातु की वस्तुओं को बनाने से पहले उन्हें आग में तपा कर शुद्ध किया जाता है। और उस पात्र की उपयोगिता के मुताबिक उसे आग का परीक्षण किया जाता है जब तक उसे वह स्तर और शुद्धता नहीं मिल जाती।

उन सच्चाईयों की सूची बनाईए जो परमेश्वर आप को बता रहा है और उन गूणों को जो आप के अन्दर बढ़ाया है निम्न दिए गए प्रकार से बताओ कि वह मानसिक बुद्धि सम्बंधी सच है, केवल जीवन के उस समय के लिए, या अनुभवी सच या आग की परीक्षा से गुजारा हुआ सच।

१. मानसिक बुद्धि सम्बंधी
२. अनुभवी
३. आग में तप हुआ

निजी प्रार्थना पत्र :

अपने जीवन पर ध्यान लगाने के लिए प्रार्थना पूर्वक कई घण्टें लीजीए, साधारण वाक्यों में अपने जीवन के सच को लिखते हुए जो परमेश्वर ने आप को सिखाए हैं और जीवन में इस समय आप कहाँ हैं। निम्न एक उदाहरण है:

वह क्या कर रहा है उसे समझे बिना ही उस पर विश्वास करना सीखा (३)
शारिरिक चंगाई के लिए प्रार्थन करनी सीखी (१)
प्रेम के साथ सच्चाई से बोलना सीखा (२)
यह सीखा कि हमें रज्यों को चेला बनाना है (१)
स्तूती और आराधना में परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करना सीखा (२)
उस की आवाज को सुनना सीखा (१)
परमेश्वर अपने बच्चों के साथ स्वपनों में बात करता है यह सीखा (१)
परमेश्वर अपने बच्चों के साथ स्वपनों में बात करता है यह सीखा (१)
अपने दुश्मन से, प्रेम करना सीखा (१)
पानी के बपतिस्में का अनुभव किया (२)
यह सीखा कि मुझे लेना नहीं, देना है (१)

जब आप इस अभ्यास को करें तो, परमेश्वर के समक्ष प्रार्थनापूर्ण हृदय से आएं और उस पर निर्भरता की भावना के साथ आएं और उस से कहें की वह आप को चीजों को दिखाए। तब स्वैच्छित्ता में जाईए और आप के मन और दिमाग में उस विचारों को भरने दें। आप जो पा रहे हैं उसे लिख लीजीए। आप इस कार्य को कई दिनों तक करना चाहेंगे जब तक आपने जो लिखा है उस में पूर्णता का अनुभव न कर लें। जब आप लिखना बन्द करें, आप परमेश्वर का धन्यवाद देना चाहेंगे, उस ने जो आप के जीवन में इस समय किया है उस के लिए और आनन्द मनाना चाहेंगे।

टिप्पणीयाँ :

अध्याय नौ

आगे परमेश्वर आप को कहाँ ले जाना चाहता है, उसे पहचानना

यदि आप नहीं जानते की आप कहाँ जा रहे हैं, तो कोई भी रास्ता आप को वहाँ ले जाएगा। क्या आप जानते हैं की आप कहाँ जा रहे हैं? क्या आप जानते हैं की परमेश्वर आप को कहाँ ले जाना चाहता है? अगले कदम क्या होंगे, क्या आप जानते हैं? वह क्या चाहता है की आप करें?

हम यह खोजना प्रारम्भ करना चाहते हैं की परमेश्वर हमें कहाँ ले जा रहा है। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए हम दो चिजे करेंगे। पहले, आप उन क्षेत्रों की सूची बनाईए जो आप के सामने हैं की उन क्षेत्रों में उन्नति और शिक्षा की आवश्यकता है। सूची बनाने के बाद आप रूप से प्रार्थना कर के पूछिए की वह क्या चाहता है की किन क्षेत्रों में आप ने अधिक ध्यान देना है इस समय।

मुझे उपदेश, प्रशिक्षण और शिक्षा की आवश्यकता कहाँ हैं?

क्षेत्र एक - आत्मिक जीवन (कुछ मुख्य आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए)

परमेश्वर के रारतों का ज्ञान

.

.....

.....

.....

.....

पवित्रात्मा के फल

.....

.....

.....

.....

पवित्रात्मा के उपहार

.....

.....

.....

.....

प्रचार

.....

.....

.....

.....

कुछ और

.....

.....

.....

.....

क्षेत्र दो - पारिवारिक कला (कुछ मुख्य आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए)

पती/पत्नी के बीच बातचीत की कला

.....

.....

.....

.....

बच्चों के साथ बातचीत की कला

.....

.....

.....

.....

बच्चों का धार्मिक प्रशिक्षण

.....

.....

.....

.....

बच्चों के साथ मनोरंजन का समय

.....

.....

.....

.....

.....

क्षेत्र तीन - व्यापारिक कला (कुछ मुख्य आवश्यकताओं का वर्णन कीजिए)

कुछ मुख्य कला जिसे बढ़ाना है

.....

.....

.....

.....

विशेष अनुशासन योग्यताएँ

.....

.....

.....

.....

विशेष लागत लगाने की आवश्यकता

.....

.....

.....

.....

विशेष हाट की आवश्यकता

.....

.....

.....

.....

कुछ और

.....

.....

.....

.....

कुछ और क्षेत्र जो उपर नहीं दिए गए

.....

.....

.....

.....

एक बार जब आप उन क्षेत्रों को पहचान लेते हैं जिन की आप को आवश्यकता है और भर देते हैं तो आप सूची को दुबारा पढ़ कर उन में लोगों के नाम, किताबें, चलचित्र, प्रचार सभाएं और पाठ्यक्रम को लिख लें जो आप समझते हैं की जो कला आप सीखना चाहते हैं उसके उदाहरण हैं जो कला की सूची है उसके उदाहरण हैं। जो कला की सूची है उसके आगे इन नामों को लिख लें। यह लोग किताबों, चलचित्रों, प्रचार सभाओं और पाठ्यक्रमों को आप अपने उपदेशक, प्रशिक्षक और शिक्षक उन क्षेत्रों के बना सकते हैं

इस बात पर ध्यान लगाने के लिए अब हम परमेश्वर की आज्ञा को सुनने की आवश्यकता है ।

एक साथ पंद्रह क्षेत्रों में उन्नति पाना कठिन हो सकता है। इसलिए हमें परम प्रधान परमेश्वर के संमुख खामोश रहना है और पूछना है की वह क्या चाहता है और पूछना है कि वह क्या चाहता है की हम जीवन के इस समय में हम हमारा ध्यान कहाँ केन्द्रित करें। वह जो कहता है उसे हम लिख लेंगे और फिर उन क्षेत्रों में कार्य करना प्रारम्भ कर देंगे उन लोगों के लिए जो परमेश्वर की आज्ञा को पहचानना सीखना चाहते हैं; उन के लिए यह चार चाबियाँ काम में आएंगी ।

परमेश्वर की आवाज को सुनने के लिए चार चाबियाँ । :

चाबि १ - परमेश्वर की आवाज हमारे मन में स्वैच्छिक विचारों की तरह है इसलिए जब मैं परमेश्वर पर ध्यान लगता हूँ, तो इसका अर्थ यह है की मैं स्वैच्छिकता पर ध्यान लगता है ।

बाईबल कहती है "परमेश्वर ने मुझे जवाब दिया और कहा—" (हबकक 2:2) हबकक परमेश्वर की आवाज पहचानता था बाईबल उसे शांत, धीमी आवाज बताती है। मैंने हमेशा अन्दरूणी आवाज को सुनना चाहा, और यकीनन परमेश्वर कई बार इस तरह से बात करता है ।

फिर भी, कई लोगो के लिए मैंने देखा की परमेश्वर की अंदरूणी आवाज, स्वैच्छिक विचारों दर्शनो स्पर्शज्ञान या प्रभावों के माध्यम से, मिलती है। उदहारण के लिए, क्या हम सामान्य रूप से इसे परमेश्वर की आवाज मानते हैं जो चहता है की हम उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें। मेरा प्रश्न यह है की जब आप कार चलाते हुए जा रहे थे, तो परमेश्वर की आवाज कैसी सूनाई पड़ी? क्या यह सुनने लायक आवाज थी, या यह स्वैच्छिक विचार था जो आप के दिमाग में आया? अधिकतर लोग कहेंगे की परमेश्वर की आवाज उन्हें स्वैच्छिक विचार के रूप में आयी ।

इसलिए मैंने अपने आप में सोचा की "हो सकता है की जब मैं परमेश्वर की आवाज को सुनना चाहूँ तो मुझे स्वैच्छिक विचारों के बहाव की सुनना है। हो सकता है की आत्मा का स्तर की बातचीत, स्वैच्छिक विचारों, प्रभावो, स्पर्श ज्ञान और दर्शनों के रूप में मिलते है। "प्रायोगों के द्वारा और हजारों लोगो के अनुभवो से अब मैं मान गया हूँ कि ऐसा होता है।

इस बात को बाईबल कई तराह से मानती है। पागा' इब्रानी शब्द है इस की परिभाषा है मध्यस्थता यानी "अचानक मुलाकात यह अचानक बातचीत" वह इसे पागा के माध्यम से करता है, यानी अचानक मिलने वाला विचार जो अचानक हमारी विचार धारा से बातचीत करने लगता है। इसलिए जब मैं परमेश्वर की ओर ध्यान लगाता हूँ, तो मैं अचानक मुलाकात या स्वैच्छिक विचार की ओर ध्यान लगता है। जब मैं परमेश्वर के संमुख शांती से प्रार्थना करता हूँ, तो मैंने देखा है की जो स्वैच्छिक विचारो का बहाव प्रारम्भ होता है वह यकीन परमेश्वर की ओर से होता है ।

चाबी २ - मुझे अपने विचारों और भावों को शांत करना सीखना होगा, ताकी मैं परमेश्वर के विचारों और भावों के बहाव को अपने अन्दर अनुभव कर सकूँ/ हबक्कूक कहता है, "मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, और गुम्मतों पर चढ़कर ठहरा रहूँगा।" (हबक्कूक २:१) हबक्कूक यह जानता था कि परमेश्वर की आवाज को सुनने के लिए उसे किसी शांत जगह पर जाना होगा ताकी वह अपने विचारों और भावों को शांत कर सकें। भजन संहिता ४६:१०, हमें प्रोत्साहित देता है कि "चुप हो जाओ, और जान लो की मैं ही परमेश्वर हूँ।" जब हम अपने शरीर और दिमाग को शांत करें तो हम अपने आत्मा में (स्वैच्छिक बहाव) का अनुभव कर सकते हैं ।

मैं न अपने आप को शांत बनाने के लिए कई रास्ते चुन लिए हैं, ताकी मैं परमेश्वर के स्वैच्छिक बहाव को पहचन सकूँ। खामोशी में एक आराधना का गीत गाते हुए परमेश्वर से प्रेम करना कई लोगों के लिए कामयाब होता है (देखिए २ राजा ३:१५) जब मैं शांत होता हूँ, विचार में संमुख आता हूँ, तो दैवी बहाव प्रारम्भ हो जाता है। इसलिए, खामोशी में आराधना करने और शांत होने के बाद, मैं अपने आप को उस स्वैच्छिक बहाव के लिए खोल देता हूँ। यदि मेरे सामने वह विचार आते हैं जिन्हें मैं भूल गया हूँ, तो मैं उनको लिख लेता हूँ और फिर उन्हें छोड़ देता हूँ। यदि अपराध या आयोग्यता के विचार मेरे दिमाग में आते हैं, तो मैं पुनर रूप से पश्चताप करता हूँ, मेमने के खून से साफ किया जाता है और उसके धार्मीकता का चोगा पहन लेता है। और परमेश्वर के समक्ष अपने आप को बैदाग पाता है ।

जब मैं अपनी आँखें यीशु पर लगाता हूँ (इब्रा १२:२) और उसकी उपस्थिती में शांत होकर, अपने मन की बात उसके साथ बाँटता हूँ, तब दो तरफा बातचीत का प्रारम्भ होता है। परमेश्वर के सिंहासन से स्वैच्छिक विचार बहकर मेरे पास आते हैं और मैं देखता हूँ की मैं राजाओं के राजा के साथ सचमुच बात कर रहा हूँ ।

यदि आप परमेश्वर का शुद्ध वचन पाना चाहते हैं तो यह अतिआवश्यक है की आप उसकी उपस्थिती में शांत रहे और केन्द्रित रहें / यदि आप शांत नहीं हैं तो आप केवल अपने ही विचार पाते रहेंगे। यदि आप यीशु पर केन्द्रित नहीं हैं, तो आप अशुद्ध बहाव ही पाएँगे क्योंकि अंदर से बहाव वही से आता है जिस पर आप केंद्रित हैं। इसलिए, यदि आप अपनी आँखों को यीशु पर केन्द्रित करते हैं, तो अंदर का बहाव यीशु की ओर से आता है। यदि आप अपनी दृष्टि को मन की किसी इच्छा पर केन्द्रित करेंगे, तो अंदर का बहाव उसी इच्छा की ओर से आएगा। शुद्ध बहाव के लिए आप को स्थिर होना आवश्यक है और दूसरा, आप को यीशु पर ध्यान पूर्वक

दृष्टि लगानि होगी। मैं यह बात फिर से कहूँगा की यह आसानी से हो सकता है, यदि आप खामोशी से राजा की आराधना करें और खमोशी में, आप पा सकते हैं।

चाबी 3 - जब मैं प्रार्थना करता हूँ, तो मैं मन की आँखों को यीशु पर लगाता हूँ, आत्मा मैं स्वपन और दर्शन पाता हूँ (परम प्रधान परमेश्वर के)।

हमने इस सिद्धान्त के बारे में पिछले परिच्छेदों में संकेत दिया है, हम इसे थोड़ा और आगे बढ़ाते हैं। हबक्कूक ने कहा, "मैं" अपने पहरों पर खाड़ा रहूँगा" और परमेश्वर ने कहा "दर्शन की बातें लिख" (हबक्कूक २:१,२) यह बहुत रोचक बता है की, हबक्कूक प्रार्थना में दर्शन पाने जा रहा था। वह अपने मन की आँखों को खोलकर, आत्मिक दुनिया में, परमेश्वर उसे क्या दिखाना चाहता था, उसे देखने जा रहा था। यह बहुत पड़यंत्री इरादा है।

मैंने कभी अपने मन की आँखों को खोलकर, दर्शन देखने के बारे में नहीं सोचा। मैं जितना आधिक इस के बारे में सोचता, तो मुझे उतना ही यकीन हो जाता की परमेश्वर मुझ से यह चाहता है। उन्होंने मेरे मन में आँखें दीं। इन का प्रयोग आत्मिक दुनिया में परम प्राधना परमेश्वर के कार्यों को दर्शन द्वारा देखने के लिए करना है। मैं जानता हूँ की मेरे चारों ओर एक आत्मिक दुनिया तीव्रता से कार्य कर रही है। इस दुनिया में दूत, शैतान, पवित्रात्मा, एकाकी परमेश्वर और उनका एकलौता पुत्र यीशु हैं। कोई कारण नहीं की मैं इसे न देखूँ। मेरी विचार युक्ती कहती है की इस बात को न मानूँ और मुझे कोई निर्देश भी नहीं देती की इस आत्मिक दुनिया को कैसे देखूँ।

इसे देखने की लिए सबसे मुख्य तत्व यह है की हमें देखना है। दानीयल अपने दिमाग में दर्शन देख रहा था और उन्होंने कहा मैं देख रहा था (दानीयल ७:१,९,१३)। अब जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो मैं देखता हूँ की यीशु मेरे साथ उपस्थित हैं और मैं उन्हें देखता हूँ जब वे मुझ से बात करते हैं, और उन बातों को कहते और करते हैं जो उन के मन में हैं। कई मसीही जब देखेंगे तो वे पाएँगे की यीशु इमानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ। यह बिलकुल आसान है। जिस तरह आप स्वैच्छिक विचार पाते हैं, बिलकुल उसी तरह आप स्वैच्छिक अन्दरुणी दर्शन भी पाते हैं। आप मसीह को एक आत्मादेह स्थिती में उपस्थित देख सकते हैं। उससे मैं अन्दरुणी दर्शन इतनी आसानी से प्राप्त होता हूँ की आप उसे ठुकरा देंगे यह सोच कर की यह आप के विचार हैं। (शक, मसीहों के विरुद्ध मैं शैतान का सब से असरदार औजार है) यदि आप इन दर्शनों को लिखना प्रारम्भ कर देंगे, तो आप का

शक यकीन में बदल जाएगा और आप विश्वास करने लगेंगे की यह विषय परमप्रधान परमेश्वर की ओर से है।

परमेश्वर ने लगातार अपने आप को अपने वचनबध लोगों को स्वपनों और दर्शनो द्वारा दिखाया है। उन्होंने ऐसा उत्पत्ती से लेकर प्रकाशितवाक्य तक किया है और कहा की, क्योकी पवित्रात्मा प्रेरित २ में उण्डेल दिया गया था, इसलिए स्वपनों और दर्शनों द्वारा हमें लगातार बहाव पाना है (प्रेरित २:१-४)। यीशु हमारा पूर्ण उद्धारण, उन्होंने बताया की परमप्रधान परमेश्वर के साथ लगातार कैसे रहा जा सकता है। उन्होंने कहा की वे अपने आप कुछ नहीं करते परन्तु केवल वही करते हैं, जो अपने पिता को करते या कहते सुनते हैं (यूहन्ना ५:१९, २०,३०) क्या ही अदभुत तरीक है जीने का।

क्या हम सच में उस दैवी प्रारम्भ के साथ जी सकते हैं, जैसे यीशु जीते थे? यीशु की मृत्यु का सब से मुख्या कारण यह था की परदा ऊपर से नीचे तक फट गया, ताकी हम परमेश्वर के समक्ष उपस्थित हो सकें और हमें आदेश है की हम उस के करीब आएं (इब्रानियों १०:१९-२२) इसलिए, मैं जो बता रहा हूँ वह तार्कीक बीसवीं सदी के लिए विचित्र हो कसता है परन्तु इसे बाईबल में शिक्षा अनुभव के कन्द्र के रूप में बताया गया है।

उनके गहरे तार्कीक स्वभाव और तार्कीक संस्कृति में रहने के कारण कुछ लोगों को इन सच को समझने के लिए अधिक मदद की आवश्यकता पड़ेगी। उन्हें मदद "परमेश्वर से बंधुत्व" नामक पुस्तक जो की इसी लेखक ने लिखी है, मिल सकती है।

चाबी - ४ पत्राचार करना, हमारी प्रार्थनाओं और परमेश्वर के जवाबों को लिखना, परमेश्वर की आवाज सुनने में महान स्वतंत्रता प्रधान करता है।

परमेश्वर ने हबक्कूक से कहा की वह दर्शन की बातों को लिखे और उन्हें पट्टट्टीयों पर लिखे (हबक्कूक २:२)। यह विचार कभी मेरे दिमाग में नहीं आया की मैं अपनी प्रार्थनाओं और परमेश्वर के जवाबों को हबक्कूक की तरह से लिख लूँ। यह परमेश्वर की ओर से आज्ञा थी। यदि आप इस विचार के लिए पवित्रशास्त्र को खोजेंगे तो आप सैकड़ों ऐसे अध्याय पाएंगे जिन में यह बताया गया है (भजन संहिता, कई भविष्यवक्ता, प्रकाशितवाक्य) फिर मैंने इसके बारे में सोचा तक क्यों नहीं? मैंने इस पर कोई उपदेश तक क्यों नहीं सुना ?

मैंने इस क्रम को पत्राचार नाम दिया है और मैं इस के साथ प्रयोग करने लगा। मैं ने पाया की परमेश्वर की अदभुत आवाज पहचानने में बहुत मदद करता था क्योंकि जब मैं लिखने लगा तो लम्बे समय के लिए विश्वास में लिखता रहा, केवल इस विश्वास के साथ की यह परमेश्वर है। मुझे इसे परखने की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि मैं उसे पा रहा था। (क्योंकि वह प्राप्त करने वाले को जाम कर देता है) क्योंकि मुझे पता था की वापस लौटकर, ध्यान पूर्वक उन का परिक्षण कर सकता हूँ इस बात की पूर्ती करने के लिए की यह पवित्रशास्त्र से है।

यदि आप पत्राचार लिखने लगे, तो आप अचम्बित हो जाएंगे। शक आप को पहले रोकेगा, परन्तु उसे फेंक दीजिए, अपने आप को यह याद दिलाईए की यह बाईबल का विषय है और परमेश्वर उपस्थित है, अपने बच्चों से बात करने के लिए। अपने आप को अधिक गंभीरता से न लें। यदि आप ऐसा करते है, तो आप कसाव अनुभव करेंगे और यह पवित्रात्मा के रास्ते में आ कर उसे चलने नहीं देगा। जब हम अपनी, मेहनत को त्याग कर उस के विश्राम में प्रवेश करते है, तब परमेश्वर स्वतंत्रता से बहता है। (इब्रा ४:१०)। इसलिए, अपने चेहरे पर मुस्कुराहट लाईए, आराम से पीछे हो कर बैठ जाईए, अपनी कलम और कागज ले लीजिए, और स्तुती और आराधना में अपना ध्यान उसके चेहरे को ताकते हुए, परमेश्वर की ओर लगाए। जब परमेश्वर के लिए आप अपना प्रश्न लिखे, तो स्थिर हो जाईए और अपनी दृष्टि यीशु पर लगाईए। वह आप के साथ उपस्थित है। आप को अचानक आप के प्रश्न के जवाब में एक अच्छा विचार आता है। इस पर शक मत करीए, केवल इसे लिख लीजिए। बाद में जब आप अपना पत्राचार पढ़ने लगेंगे तो आप जानेंगे की आप सच में परमेश्वर के साथ वार्तालाप कर रहे थे।

कुछ अन्तिम टिप्पणीयाँ। जब तक आप ने कम से कम नया नियम नहीं पढ़ा हो (पूरी बाईबल पढ़ना, अधिक अच्छा होगा) इसे न करीए, और ना ही जब तक कोई आत्मिकता में किसी के तैहता न हो। हर पत्राचार के निर्देश को कार्य में लाने से पहले, उन्हें बताया जाए।

सारांश में प्रश्न :

इस समय परमेश्वर किस क्षेत्र में आपका ध्यान केन्द्रित करना चाहता है। अपने जवाब को निम्न लिखीए, इन चार चाबियों की मदद से परमेश्वर की आवाज को पहचानते हुए।

अध्याय दस

वे उपदेशक, प्रशिक्षक और शिक्षक कौन हैं, जो परमेश्वर आप को दना चाहता है?

आप यह खोजना शुरू कर दीजिए की आप के आगे के जीवन काल में आप के उपदेशक, प्रशिक्षक और शिक्षक कौन होंगे। हम आप की पिछले अध्याय के पत्राचार पर वापस लोटते हैं और देखते हैं की वे कौन से क्षेत्र हैं जो परमेश्वर चाहता है की आप आने वाले दिनों में उन में उन्नती करें। फिर आप उन नामों पर ध्यान दिजिए जो आप ने उन क्षेत्रों के आगे लिख रखें हैं जो आप के गुरु हो सकते हैं। इन लोगो की सूची निम्न लिखीए। यह हो सकता है की कुछ शिक्षक, किताबें या चलचित्र भी हो सकते हैं, बजाए लोगो के, तो किताबों, चलचित्रों, प्रचार सभाओं पाठयक्रमों और लोगों की सूची बनाईए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

निम्न सूची में से, अब हम उन गुणों को देखेंगे जो शिक्षक काल के रिश्ते के लिए आवश्यक है। आप इस पन्ने की लीपी लेकर आप, हर एक होने वाले शिक्षक की योग्यताओं को जाँचना चाहेंगे। देखीए की कौन सब से अधिक आप की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं ताकी एक अच्छे गुरु, उपदेशक या प्रशिक्षक बन सकें। हर एक को जाँचने के बाद, उन लोगो, की सूची बनाईए जो आप समझते हैं की आप के जीवन में गुरु, गुरु शिक्षक या प्रशिक्षक बन सकते हैं। इस सूची पर प्रार्थना करीए और परमेश्वर से पूछीए की इन में से कौन हैं जो यह चाहता है की आप उसके साथ रिश्ता बनाएं। क्या वह यह चाहता है की आप जा कर उन से बात करें की क्या वे शिक्षा देने के लिए रिश्ते में बंध सकते हैं? या आप ने केवल उन पर अपनी दृष्टि लगा रखनी है, की उन को कार्य करते हुए देखकर सीखना है? वह क्या कह रहा है इसे लिख लीजिए। हाँ, यदी आप ने किताबों और चलचित्रों की

सूची बनाई है जो आप के शिक्षक हो सकते हैं तो इन में से कुछ यहाँ उपयोग में नहीं आएंगे।

मैं यह कहना चाहूँगी की आप आगे बढ़ कर आप के होने वाले शिक्षको के बारे में एक या दो लोगों से सलाह लीजिए की परमेश्वर आप को किस ओर ले जा रहा है और उन की हाँ होने के बाद ही आगे बढ़ीए। कई शिक्षकों के मध्य ही सुरक्षा है। यदी आप शिक्षक के साथ रिश्ता बनाने जा रहे हैं तो इस अध्याय के अंत में जो फार्म है उसे पूर्ण कर लीजिए। आप को एक और फार्म भी भरना होगा जिस का शिर्शक है "शिक्षक शिक्षार्थी समझौता, आपस की रिश्तेदारी के बारे में"।

शिक्षार्थीकाल की उत्तमता नियंत्रण जाँच सूची

शिक्षार्थी के लिए बनाया गया, यदि वह गुरु शिक्षक का खोज में है।

उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसे आप उपदेशक, पिरशिक्षक या शिक्षक बनाना चाहते हैं _____

हाँ / नहीं

- _____ १. जिस क्षेत्र में मैं शिक्षा लेने जा रहा हूँ, उस क्षेत्र में वह व्यक्ति मुझ से आगे है।
- _____ २. मैं इस व्यक्ति के साथ आराम अनुभव करता हूँ।
- _____ ३. ऐसा लगता है की वह इच्छुक है और मेरे लिए समय निकाल पाएगा।
- _____ ४. ऐसा लगता है की वह दूसरों के आत्मिक कवच के नीचे है।
- _____ ५. ऐसा लगता है की वह अपने मन और परमेश्वर की आत्मा को पहचान पा रहा है।
- _____ ६. ऐसा लगता है की वह नम्र और पारदर्शी हूँ।
- _____ ७. ऐसा लगता है की उसने, परमेश्वर को अपनी असुरक्षाओं को चंगा करने दिया है।
- _____ ८. ऐसा लगता है की उनको बाईबल की अच्छी समझ है।
- _____ ९. ऐसा लगता है की उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों पर ध्यान लगाया है और परमेश्वर के मकसद को उन में पाया है।
- _____ १०. ऐसा लगता है की उन पर विश्वास किया जा सकता है।
- _____ ११. मैं समझता हूँ की परमेश्वर चाहता है की मैं इस व्यक्ति के साथ इस समय शिक्षणकाल के रिश्ते में प्रवेश करूँ (रिश्ता बनाए रखूँ)।

यदी रिश्ता अभी चल रहा है तो निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- _____ १. वह मेरे साथ मुलाकात तो नहीं टाल रहा है।
- _____ २. क्या वह अपने कार्यों को मुझ पर थोप तो नहीं रहा है।
- _____ ३. क्या वह मेरा समालोचन तो नहीं कर रहा है।

मेरे (शिक्षार्थी) के स्वभाव सही हैं, इन्हें निम्न वाक्यों से बताईए

- _____ १. मैं नम्र और पढाए जाने लायक हूँ।
- _____ २. मुझ में सिखाने की इच्छा है।
- _____ ३. मैं खुलने को तैयार हूँ और पारदर्शक हूँ।
- _____ ४. मैं समझोते के मार्ग पर चलने के लिए तैयार हूँ।

उपर्युक्त जवाबों के आधार पर मैं समझता हूँ की मुझे इय व्यक्ति को शिक्षा देनी चाहिए / नहीं देनी चाहिए (जो सही है उस हर निशान लगाएँ) या (जारी रखनी चाहिए)।

यदी आप किसी व्यक्ति को प्रशिक्षण दे रहे हैं तो इस बात की संतुष्टी कर लीजिए की दोनों विषयों के सम्बंध में आप के पास चालू करार है (निम्न नमूना देखीए)।

इस पत्रे को छापने की अनुमती, मार्क और पैटी विर्कलर, १४३१, बुल्लिस रोड, एल्मा, न्यू यार्क १४०५९ यू एस ऐ, द्वारा प्राप्त है।

गुरु शिक्षक / शिक्षार्थी रिश्ते के सम्बंध में करार

दिनांक को _____ और _____ के बीच बनाया गया।

१. दोनों में से कोई भी इस रिश्ते को किसी भी समय समाप्त कर सकता है।
२. शिक्षक, शिक्षार्थी के मन से उपहारों, दैवी प्रकाशनों और निर्देशों को निकालने में मदद करेगी।

३. सामान्य रूप से बात की जाए तो, हम _____ बार मिलेंगे (सप्ताह में एक बार, दो सप्ताह में एक बार, महीने में एक बार)।

४. मुख्य क्षेत्र जिस पर हम दोनों मिलकर काम करेंगे _____।

५. १ क्षेत्र जिन में हम प्रवेश नहीं करेंगे _____।

६. इस बात से सहमत हैं की हम अपने रिश्ते में अधिकार को नहीं आने देंगे। फिर भी, यदी विषय से सम्बंधित कार्य, शिक्षार्थी को करने के लिए दिए गए हैं और वह उन्हें नहीं कर पाता है तो, इस रिश्ते को समाप्त करने का यह एक कारण हो सकता है।

७. हम दुबारा _____ दिनांक को मिलकर तैय करेंगे की हमने अपने इस रिश्ते को आगे बढ़ाना है की नहीं।

८.कुछ और _____

हस्ताक्षर _____ दिनांक _____

हस्ताक्षर _____ दिनांक _____

अध्याय ग्याराह

उत्तेजित शिक्षा देने की रिश्तेदारी में प्रवेश करना

आधुनिक जीवन में लगातार रिश्ते बदलते रहते हैं। कई बार हमें नए रिश्ते को शुरू करना मुश्किल हो जाता है और जो रिश्ता है उसे छोड़ना उतना ही मुश्किल। हम संक्षिप्त में उन कठिनाईयों को देखते हैं, जिन का सामना हमें रिश्ते में प्रवेश करते और छोड़ते में करना पड़ सकता है।

रिश्ते में प्रवेश करते समय पुराने दर्द को झेलना :

अकसर जब रिश्ते टूटते हैं, तो दर्द और भ्रम रह जाता है। इस कारण, जब हम नए रिश्ते जोड़ने जाते हैं तो हमारे पिछले रिश्ते के बोझ को उठा कर सामना करते हैं। इस दर्द से हम अविश्वास, गुस्सा, ईर्ष्या, अन्त, परीवर्तन, अस्वीकार, दोष, कलंक लगाना, डाह और हर तरह की बुराई पाते हैं।

इतने सारे भावुक भार के, साथ नए रिश्ते में जाना कठिन है। हम हमेशा अपना नया रिश्ता बिगाड़ सकते हैं और इस तरह विनाश की कड़ी हमेशा के लिए चलती रहती है।

एक नए मन और नयी आत्मा की आवश्यकता है। हमें चाहिए कि हम परमेश्वर से कहे की वे हमारे मनो का खतना करें और उस में जो बुराई है उसे समाप्त करें, ताकी वह शक्ति पाकर हर एक के प्रति हर गुनाह को माफ कर सके, ताकी वह चंगाई पाए और जीवन में आगे बढ़ सके।

इस क्षमा के क्रम को पार करने में हफ्तों, महिनो या वर्षो लग सकते हैं। इस क्रम को जल्दी समाप्त करने के लिए अच्छा होगा यदि आप प्रेम और आपका ध्यान रखने वाले मसीह उपदेशकों के साथ कार्य करीए, जो आप का दुःख और दर्द बिना न्याय दिए स्वीकार करेंगे और जो केवल आप को आप के दर्द, डर और निराश के साथ अपनाए। बिना शर्त का यह प्रेम आपके मन को शांत बना कर आप में फिर से शक्ति भर देगा ताकी आप प्यार देते और लेते रहे।

जब मैं इस तरह की चंगाई खोज रहा हूँ, तो मैं परमेश्वर को यह भी कहूँगा की वह मुझे वह अच्छाई दिखाए जो मेरे पिछले रिश्ते से मुझे मिली है और वह पूरी स्थिती को कैसे देखते हैं। वह जो कहता है मैं उसे ले लेता हूँ और ऐसी जगह चिपका देता हूँ, जहाँ से मैं उसे देख सकता हूँ, ताकी उस पर तब तक विचार करता हूँ जब तक मैं भी उस बात को उसी तरह नहीं मानने लगूँ। यह भी अच्छा होगा की एक नोट बुक लेकर बैठ जाएँ और परमेश्वर से कहें कि वह आप को बताए की वह दूसरा व्यक्ति इस रिश्ते को किस तरह देखता है। क्या उन का दृष्टिकोण आप से अलग है? यदि आप बातों को उनके दृष्टिकोण से देखें तो क्या आप उसी तरह करते जैसा उन्होंने ने किया था? क्या उनके दृष्टिकोण से बातों को देखने से आप समझ कर उन्हें माफ कर सकेंगे व्यक्ति जो उन बातों को लिखते है और क्षमा करते हैं, वे अपने जीवन में अधिक सफल होते हैं।

असुरक्षा और डर को झेलना :

असुरक्षा और डर के कारण कई बार हम नए रिश्ते में नहीं प्रवेश करना चाहते। मैं अच्छा नहीं हूँ। व्यक्ति मुझे धुतकार सकते है। इन, डरों को परमेश्वर के सामने रख कर चंगाई पाना और इन का सामना करना आवश्यक है। जब मैं आराधना करता हूँ और उस की उपस्थिती में रहता हूँ, तो मेरे डर गायब हो जाते है। मैं यह भी देखा है की जब मैं उस के साथ बात करता हूँ उन स्थितीयों और डर के बारे में, तो वह शब्दों और चित्रों को जब मेरे सामने लाता है तो मैं शांत हो जाता हूँ। जब परमेश्वर के शब्द, दर्शन अपस्थिती और शक्ति मेरे मन को भरते है, तो मनुष्य का मन चंगा हो जाता है। इसलिए, कुछ समय परमेश्वर के साथ बातचीत में बिताईए और आप के मन को चंगा करने दें।

घमण्ड को झेलना :

कई बार घमण्ड, रास्ते का रोड़ा बन कर परमेश्वर की आवाज को सुनने से रोकता है। आप को उपदेशक या गुरु उतने अच्छे नहीं लगते की वे आप को शिक्षा दे सकें। यहाँ यह जान लेना अच्छा है की घमण्ड आता है तो मनुष्य गिरता है। यदी आप समझते है की आप को शिक्षा देने के लिए कोई भी अच्छा नहीं है, इसका अर्थ यह निकलता है की अपनी खुद की आँखों में आप सबसे अच्छे है। मैं चाहूँगा की आप नम्र हो जाए, (इससे पहले की परमेश्वर आप को ऐसा करे) और इस बात को पहचान लीजिए की कई शिक्षकों के मध्य ही सुरक्षा है और यह की वह बच्चों से भी सीख सकते है और गदोंह से भी (बलान के साथ हुआ था- गिनतीयों २२)।

समाजिक कला की कमी को झेलना :

यदि मैं ने समाजिक कला नहीं सीकी है तो मैं बात चित या रिश्ते में बंधने में डरूँगा। इस समस्या के कुछ हल हैं। एक बात यह है की हर कोई अपने बारे में बात करना चाहता है या चाहता है की लोग उसके जीवन के बारे में पूँछें। वे बोलते ही जाएंगे और प्रसन्न होंगे। पहले आप इधर उधर की बातें कर सकते हैं फिर उस क्षेत्र में जिग्यासा दिखें जो दोनों के लिए दिलचस्प हो और उस पर विवाद करीए। बातचीत की कला पर किताबें मिलती हैं। हम हमारे विश्वविद्यालय में एक पाठ्यक्रम सिखाते हैं जिस का शीर्षक है "बातचीत के कोने के पत्थर (कॉर्नरस्टोन ऑफ कम्यूनिकेशन")

रिश्ते को छोड़ते समये पहचाना की कब छोड़ना है :

यह सब से कठिन कला है। मैंने यह बहुत कम सोचा, की रिश्ते को छोड़ने का समय आता है, और सामान्य तौर से लम्बे समय तक टिका रहा। इस का नतीजा यह हुआ की, मुझे प्रचण्डता से फेंका गया। यह मुझे उस बात की याद दिलाता है की जब बाज़ जबरदस्ती अपने बच्चों को घोंसले से फेंकती है। मुझे यकीन है की वे बच्चे इस बात को नहीं जानते परन्तु माँ जानती है की यही समय है? हमें ऐसा लगता है की हम अपनी सुरक्षा की चादर को पकड़े रहें और सामान्य रूप में नयी चुनौतियों को लेने को भी तैयार नहीं हैं, जब तक हमें धक्का ना दिया जाए। मैंने देखा है की यह मेरे साथ सच है। इसलिए, हमें छोड़ने के संकेतों के प्रति सतर्क हो जाना चाहिए। संकेत यह हो सकते हैं,

- १) इस बात पर ध्यान देना की जो पाठ पढ़ने आए थे वह पूर्ण हो गया है या पढ़ा नहीं जा सकता
- २) इस बात पर ध्यान देना की रिश्ते के सूत्र बदल रहे हैं अधिक उलटा जवाब है और कम सीधे।
- ३) अपनी आत्मा में यह मान लेना की परमेश्वर कह रहा है की जाने का समय आ गया है। इन संकेतों को मान कर अलग हो जाने से अधिक दर्द या दुःख नहीं होता।

पहचानना की कैसे छोड़ना है

बिछुड़ने का जो सब से अच्छा तरीका है, वह यह है की दूसरे व्यक्ति को लोगों के बीच में आदर दें और बिछुड़े। यदि आप सबके सामने आदर नहीं दे सकते तो अकेले आदर दीजिए। उन्हें खास महसूस करने दें और जो अच्छे समय आप ने बिताए हैं उन्हें याद करीए और इस रिश्ते में जो अधभुत उपहार मिले हैं उन्हें बाँटीए। इस से आप का मन शांत होगा और उनका भी और इस से बेकार की गपशप और बुराई कम हो जाएगी। एक अलविदा की पार्टी अच्छा बहाना होगी।

एक दूसरे से उम्मीद का अन्त करना जब गुरु शिष्य का रिश्ता समाप्त हो जाता है तो यह उम्मीद मत करीए की वही बहाव आप दोनों के मध्य बहेगा। हर एक जा कर एक नया रिश्ता बनाएगा और आप का समय दूसरो के मध्य बीतेगा और आप के बीच फोन पे बातें और आप से की मुलाकातें समाप्त हो जाएँगी। यह ऐसा ही होना चाहिए क्योंकि यह रिश्ता कुछ समय और कुछ अवश्यता के लिए था। यदी आप अपनी दोस्ती को बरकरार रखना चाहे तो यह हो सकता है और आप आपस में सम्पर्क रख सकते हैं। परन्तु वही घनिष्टता की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए वरना दर्द और विफलता लगेगी जब आप उसे नहीं पाएँगे।

प्रेम में बिछड़ना और कडवाहट में नहीं :

यदी आप की आत्मा इस बिछुड़ने से झूझ रही है तो आप को चाहिए की आप परमेश्वर से कहे की वह उसे चंगा करे ताकी आप आगे बढ़ सकें। इस रिश्ते से परमेश्वर के हाथ को देखीए और यह जानीए की हर कार्य उन के लिए अच्छा होता है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके मकसद के मुताबिक किए जाते हैं। एक दूसरे के साथ और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करीए, उत्साह और उम्मीद के शब्दों के साथ। आपके अन्तिम शब्द दया और गुण ग्रहण के होने चाहिए बजाए दर्द और दुःख के।

निजी प्रार्थना पत्र :

इस अध्याय को दुबारा देखीए उन विषयों पर प्रार्थना करीए जिस पर करना चाहते हैं। परमेश्वर से आप के मन और आत्मा के लिए चंगाई, वापसी और शक्ति को माँगते हुए ।

यदि आवश्यक हो तो गुण ग्रहण के कार्ड भेजीए, धन्यवाद के शब्दों के साथ और आगे देखीए की परमेश्वर ने आप के सामने क्या रखा है ।

अध्याय बाराह

अच्छा शिक्षिक बनना

हम इस अध्याय में अच्छे शिक्षक के गुणों के बारे में देखेंगे/हम ध्यानपूर्वक यीशु के तरीके को देखेंगे की जिन लोगों को उन्हें दिया गया था, उन्होंने उन्हें शिक्षा कैसे दी । अच्छे गुरुओं के निम्न गुण होते हैं प्रश्न पूछ ने की योग्यता बजाए आदेश देने के ।

प्रश्न क्यों पूछे ? क्यों न सीधे आदेश दे दें ? क्या यह आसान नहीं की हम केवल लोगों को कुछ करने को कह दें, बजाए उस बात को प्रश्नों द्वारा उन के मन में से निकालने के?

यीशु, अन्तिम, गुरु है, उन्होंने प्रश्न कर के लोगों के मन से सच उगलवाया है ? लोग क्या कहते हैं की मैं कौन हूँ ? तुम इसे कैसे समझते हो ?" (लूका 10:26) "आप क्या समझते हैं, की उस चोरों के हाथ लगे व्याक्ति का इन तीनों में कौन उसका पडोसी था?" (लूखा 10:36) आप जंगल में क्या देखने गए थे? एक नरकट को हवा में लहराते हुए देखने के लिए? आप क्या देखने गए थे? एक व्यक्ति को जिसने नर्म कपड़े पहने हुए थे? देखो, जो बहुमूल्य कपड़े पहनते हैं और विलास में जीते है वे राजकीय

“महलों में रहते है। परन्तु आप क्या देखने गए थे? एक भविष्यवक्ता (लूका 7:24-26) तुम मुझे प्रभु क्यों कहते हो और वह नहीं करते जो मैं कहता हूँ? (लूका 7:24-26) तुम मुझे प्रभु प्रभु क्यों कहते हो और वह नहीं करते जो मैं कहता हूँ ? (लूका 6:46) हे निर्बुद्धियो, जिस ने बाहर का भाग बनाया, क्या उस ने भीतर का भाग नहीं बनाया? (लूका 11:40)। हे मनुष्य। किस ने मुझे तुम्हारा न्यायी या बाँटनेवाला नियुक्त किया है? (लूका 12:14) वह विश्वास योग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिस का स्वामी इस नोकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा दे?”

(लूका 12:42)

उपर्युक्त केवल कुछ ही प्रश्न हैं जो यीशु ने लूका के तीन अध्यायों ने पूछ कर शिक्षा देना यीशु का मुख्य केंद्र था जो की आज के मसीही स्कूलों में नहीं है। यह ऐसे क्यों है? यह इसलिए है क्योंकि विद्यार्थी के प्रति हमारा दृष्टिकोण यीशु बिल्कुल अलग है। क्या हमारा दृष्टिकोण यह नहीं की शिक्षा पानेवाला वह है जिस में सच की आत्मा वास करती है ? इस कारण श्रेष्ठता से प्रश्न पूछ कर सच्चाई को बाहर निकाला जा रहा है। क्या हम परमेश्वर के स्वरूप में नहीं बनें ? यह नहीं है की यीशु ने स्वयं निर्देश न दिए हों, परन्तु अधिकतर प्रश्नों पर निरभर रहते थे और मनुष्य के मन में क्या है उसे बाहर निकालते थे जो की हम पाश्चिमी संस्कृति में नहीं कर पाते ।

शायद हमें शिक्षा काल का बाईबल नमूने की आवश्यकता है। शायद हमें अधिक समय आत्मा से अभिषिक्त प्रश्न पूछने में लगाना चाहिए, बजाए इसके की जिन्हें शिक्षा दीज़ा रही है, उसे केवल निर्देशा देने के। लोगों को आदेश देते जाना, यीशु का तरीका नहीं था। उन में से निकलवाना था ।

या पाश्चिमी तीरके से कितना अलग है, जहाँ हम सीखने के लिए सच को प्रस्तुत कर आदेश देते हैं। हम समझते हैं की विधार्थी एक धातू का बकसा है जिसे हमने अपनी छाप लगानी है। यीशु ने विध्यार्थी को एक अनोखे व्यक्ति के रूप में देखा जिस में विशिष्ट उपहार और दैवी बुलावा है। वह कहाँ उसके इन अनोखे उपहारों और गुणों को बताने और उसके रास्ते में उसे प्रोत्साहित करने के लिए उपस्थित था ।

यीशु के शिक्षा के तरीके को अपनाना हमारे लिए पुनर पूर्वीय स्थिती में सच की शिक्षा क्या है उसे जानना है। सच की शिक्षा केवल इधर उधर की सूचना को याद करना नहीं है परन्तु अपने मन के अन्दर की पवित्रात्मा की दैवी प्रेरणा को पहचानना और जवाब देना। शिक्षक होने के नाते, आप को जहाँ आवश्यक है वहाँ अनुभव बताने होंगे। एक शांत वातावरण जिस में आनन्द और जिगयासा भरी हुई होने से विधार्थी को अपने मन को खोज कर, वहाँ क्या हो रहा है देखने के लिए अच्छा मचान है। दूसरी ओर आदेश देकर दबाव डालने से इसका उलटा होता है। अन्दरूणी इच्छा और खोज को बन्द कर देता है ।

प्रश्न पूछ कर जो दूसरे के मन से सच को निकालता है, वह एक कला है जिस में गुरु को प्रार्थना पूर्वक, विचारो को दर्शाना होगा। उसे स्वयं से पूछना है, "परमेश्वर इस समय इस व्यक्ति को क्या देना चाहता है ? वे निजि तौर से कहाँ हैं?

उन्होंने क्या अन्दरूनी दृष्टि को खोजना है? कौन से प्रश्न उनको यह अंदरूनी दृष्टि को खोजने में मदद करेंगे ?

शिद्धार्थी के उपहारों को बाहर निकाला सीखना :

जैसा की हम ने कहा, दूसरे के मन की बात जानने के लिए यीशु ने प्रश्नों का प्रयोग किया और इस से उन्हो ने उनके आन्दर क्या है उसे पहचानने में उनकी मदद करी। इस के अलावा, कई पार्श्व दृष्य के प्रश्न हैं जिन्हें पिछले कुछ वर्षों में तैयार किया गया है, जिन की मदद से विद्धार्थी अपने मन को समझ सकता है। कई अच्छे पार्श्व दृष्यों की मदद से और सही उपयोग से आप स्वयं को खोज सकते है। दोनों शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए उपयोगी है। संयुक्त प्रदेश की कुछ कम्पनीयों अपने नए कर्मचारीयों को चुनने के लिए एक सप्ताह के लिए उन्हे पार्श्व दृष्य प्रश्नों द्वारा स्वयंको जाँचने का प्रशीक्षण देते है, इस से पहले की उन्हे कोई काम दिया जाए। इस तरहा वह व्यक्ति को उपयुक्त जगह पर नौकरी दी जाती है। ताकी उनके गुणों को पूर्ण रुप से प्रयोग कर सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने उन के अन्दर रखा है।

आप जिसे शिक्षा देना चाहते है उन के साथ कई पार्श्व दृष्य का प्रयोग करीए। कई सुझावों में हम हार्ट मोटीवेशन प्रोपाईल पर्सनल हेम्परामेन्ट प्रोफाईल, लेफ्ट एण्ड राईठ ब्रेन प्रिफरेन्सीस इण्डीकेटर, और कई जिन्हे हमारी पुस्तक गीपतेड टू सक्तीड में पद सकते है। इस पुस्तक में बारह भिन्न निजी पार्श्व दृष्य हैं।

कहानीयाँ बोलना सीखना :

"यह सब बातें यीशु ने दृष्टांतों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टांत वह उन से कुछ न कहता था।" (मत्ती १३:३४)

आदेश और निर्देश देने के बजाए यीशु ने अकसर कहानीयाँ बताईं। कहानीयाँ दिल को छू जाती हैं, विचार, दिमाग को छूते हैं। किसी व्यक्ति को बदलने के लिए उसके दिल को झूना होगा, क्योंकि जीवन के विषय दिल से बहाकर निकलते हैं। इसलिए एक अच्छा शिक्षक एक अच्छी कहानी, सुनाने वाला होगा। वह ऐसी कहानीयाँ सुनाएगा जो उस व्यक्ति के जीवन से मेल खाती हों, जिस स्थिती का सामना वह कर रहा है, उस से और पवित्रात्मा उस से क्या कहना चाहता है। एक

बार फिर, प्रार्थना की आवश्यकता पड़ेगी यह जानने के लिए की उस की स्थिति के लिए कौन सी कहानी ठीक रहेगी।

जब नाथन भविष्यवक्ता राजा दाऊद को उसके पाप के बारे में बताना चाहता था, तो उसने सीधे नहीं कहा परन्तु दाऊद को एक कहानी सुनाई। इस तरह आखिर कार वह दाऊद को समझा पाया की कहानी में उस व्यक्ति ने पाप किया है। जब नाथन ने बताया की वह व्यक्ति दाऊद है, तब दाऊद ने पश्चताप किया। सीधी डाँट से लड़ाई हो सकती थी, परन्तु एक कहानी ने पश्चताप और बदलाव को लाया।

केवल मत्ती १३ में ही यीशु ने सात वृत्तांत और चित्रांकित कहानियाँ सुनाई। उन में बीज बोने वाले का वृत्तान्त, गैहूँ में घास, राई का बीज, खमीर, छिपा खजाना, कीमती मोती और मछली का जाल।

पहाड़ी पर उपदेश में (मत्ती ५-७) यीशु ने कई वृत्तांत और कहानीयाँ सुनाई। उन में कुछ है, पृथ्वी के नमक, जगत की ज्योती, पाखण्डी की तरह व्यवहार, उड़ने वाले पंछी, खोतो में लिली, आँख में तीली और लकड़ी, सुअर के सामने मोती डालना, रोटी, पत्थर, मछली और साँप, सकरा और चौड़ा मार्ग, काँटों की झाड़ी से अंगूर बटोरना और काँटों से अंजीर और अपना घर पत्थर पर बनाना बजाए रेती के। यह बहुत कहानीयाँ और वृत्तान्त हैं और दृष्टांत है एक संक्षिप्त उपदेश के लिए जो की दस या पंद्रह मिनटों में पढाया जा सकता है। क्या दुनिया के अधिकतर शिक्षक इतनी कहाँनीयों का प्रयोग करते हैं? यदि नहीं। तो क्यों नहीं? मेरा विचार है की हम दिमाग को प्रशिक्षण देते हैं, और यीशु मन के प्रशिक्षण पर केन्द्रित थे। हम भी यह बदलाव लाना चाहिए, यदि हम शिक्षा, प्रशिक्षण या उपदेश देते हैं तो हमारी प्रार्थना यह होनी चाहिए, प्रभु, हमें अच्छे कहानी बताने वाले बना"।

दैवी प्रारम्भ पर ध्यान लगाना सीखना :

"इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीती से करता है। मैं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता जैसे सुनता हूँ वैसा न्याय करता हूँ और मेरा न्याय सच्चा है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।"

(यूहन्ना ५:१९,३०)

यीशु स्वयं से नहीं जी रहे थे, अपने विचारों से और स्वयं के निर्णयों से नहीं परन्तु जो पवित्रात्मा उन में था उस पर निर्भर हो कर जो उन्हें पिता की इच्छा बताती थी वही करते थे। क्यों यह हमारा उदहारण नहीं है? जब हम अपने शिक्षार्थियों के साथ काम करते हैं, तो क्या यह उचित नहीं की हम जान ले की इस स्थिति के बारे में पिता की क्या इच्छा है? क्या हमारे पास उतनी बुद्धि है की हम उस व्यक्ति के रास्तो को बता सकें? क्या हमारे विचार परमेश्वर के विचार हैं और हमारे रास्ते परमेश्वर के रास्ते?

उन शिक्षकों द्वारा बहुत नुकसान होता है जो परमेश्वर की बुद्धि के बजाए अपनी बुद्धि से शिक्षा देते हैं। लोगों के जीवन नाश हो जाते हैं जब कोई शिक्षक उन्हें आदेश देने लगता है। घर बिक गए हैं। इस असंतुलित शिक्षा के कारण, जीवन उलट पलट हो गए और धन समाप्त हो गया। इसलिए हम दोहराते हैं की शिक्षाकाल के रिश्ते में अधिकार की आवश्यकता नहीं और हर गुरु को चाहिए की वह दैवी प्रारंभ को अपनाए (न केवल बाईबल के आदेश) परन्तु कहानीयाँ, प्रश्न, चित्र, और विचारों की मदद से हर शिक्षार्थी को अगला कदम लेने में सहायता कर सकते हैं।

अपनी सीमाओं को पहचानना :

शिक्षक होने के नाते यह आवश्यक है की आप अपनी सीमाओं को पहचान ले। यदि मेरे शिक्षार्थी को व्यापार बढ़ाने में और अपने नवयुवा बच्चों को सम्भालने में मदद चाहिए तो मैं उसे, अपने निजी जीवन के अनुभव के अनुसार, किसी एक क्षेत्र में मदद कर सकता हूँ। मुझे अपने जीवन से ही उसे शिक्षा देनी है। यदि मुझे उस क्षेत्र में कोई अनुभव नहीं है, तो मुझे मेरे शिक्षार्थी को बता देना चाहिए की मैं उन क्षेत्रों में उस की अधिक मदद नहीं कर सकूँगा और मुझे उसे सलाह देनी चाहिए की वह (या हम) कुछ और शिक्षकों को खोजे जो उसे उन क्षेत्रों में प्रशिक्षण दे सकते हैं। यदि मैं व्यापार बढ़ाना चाहता हूँ, तो मुझे ऐसे व्यक्ति की तलाश है जिसने स्वयं एक व्यापार खड़ा किया हो और वह मुझे सिखा सके की कैसे किया जाए। यदि मुझे मेरे नव यूवकों को जवानी के दौर से सहि सलामत ले जाना है तो मुझे ऐसे व्यक्ति की तलाश होगी, जिसने ऐसा किया है और मुझे बता सके की मुझे क्या करना है।

एक गुरु वह शिक्षा देता है जो उसे निजी मुकाबलों से प्राप्त होती है (यानी इब्रानी तरीका सीखाने का) बजाए इधर उधर की सूचना के (यानी यूनानी तरीका

सीखने के)। इसलिए अपनी सीमाओं को पहचान लीजिए। यह जान लीजिए की आप ने सफलता से क्या अनुभव किया है और दूसरों को आसानी से बता सकते हो। और नम्र हो कर अपने शिक्षार्थी को प्रोत्साहन दीजिए की वह दूसरे शिक्षको के पास जाए, जब आप यह जान जाते हैं की आप के पास उस क्षेत्र में उपयुक्त कला नहीं है की आप उसके जीवन को बदल सके।

अपने शिक्षार्थी को रत्न समझीए जिसे थोड़े समय के लिए आप को दिया गया है।

शिक्षार्थी वह है जिसे थोड़े समय के लिए परमेश्वर ने आप को दिया है। उन बारह चेलो ने भी केवल डेढ साल यीशु के साथ बिताए थे, जिस समय उन की शिक्षा पूरी हुई। तो यह रिश्ते जो एक से तीन साल तक रहते हैं। जीवन भर के नहीं है, परन्तु ऐसे रिश्ते जो एक से तीन साल तक रहते हैं। जब एक बार उन का मकसद पूरा हो जाता है, हर एक ने दूसरे कार्य की ओर कदम बढ़ाना है जिसे परमेश्वर ने उन के लिए चुना है। वह समय जब वह शिक्षार्थी आप की छत्रोछाया में है, वह आप का नहीं है, वह परमेश्वर का है। परमेश्वर ने थोड़े समय के लिए उसे आप को दिया है, ताकी आप उस में कोई उपहार उत्पन्ना कर सकें, बुलावा या योग्याता जो उस में है उसे प्रोत्साहन दे, ताकी वह दूसरों के साथ जीवन की राह पर चल सके, कई दुक्ड़ो को बटोरते हुए और पवित्रात्मा की शक्ती से प्रचार करते हुए। इसलिए उसे सावधानी से रखीए और दैवी नम्रता के साथ और थोड़ी देर बाद उसे छोड़ने के लिए तैयार रहीए। इस तरह प्रशिक्षण कला कार्य करता है। विद्यार्थी रत्न है जिन्हें थोड़े समय के लिए आप को सौंपा गया है, दूसरों को देने से पहले। इसका यह अर्थ नहीं की आप हमेशा दोस्त नहीं बने रह सकते, परन्तु जो प्रशिक्षण काल की तीव्रता है वह समाप्त हो जाएगी। अपने बीते जीवन पर एक नज़र डालीए और देखीए की आप के शिक्षक कौन थे और कितने समय तक वे इस कार्य को करते रहे, इस से पहले की हम अलग हुए।

पकड़े रहने के बजाए छोड़ देना :

अब यह बात समझ में आई है की हमें एक दूसरे को छोड़ देना है तो गुरु और चेला दोना जीवन की रहा पर चल पढ़ेंगे और उन का रिश्ता आप दोस्ति में बदल जाता है, जैसे की हम में पहले बताया। यह दोनों व्यक्तियों को जान लेना चाहिए की शिक्षक काल का रिश्ता सरवदा का नहीं है, परन्तु कुछ समय का है, सामान्यत एक से तीन वर्षों तक और जब पाठ सीख लिए जातै है तो हम दूसरे रिश्ते में नयी दीशा पाने के लिए प्रवेश करते है।

रिश्ते को समाप्त करने के लिए परमेश्वर से समय माँगीये। अलगाव क्रम पीड़ा से भरा होता है, चाहे माँ का बच्चा पैदा करना या पॉल और जॉन मार्क का बिछुडना और दो अलग चार समीती बनाना या गुरु और चेले का अलग होना। इस लिए जब प्रभाव बढने लगे तो अलग होने का एक अच्छा अनुभव बनाईए, जो आप के साथ चला है, उस का आदर कर के और उन बातों को याद कर के जो आप लोगों ने इस रिश्ते में एक साथ अच्छा समय बिताया था ।

निजी प्रार्थना पत्र :

परमेश्वर से पूछीए की इस अध्याय के द्वारा वह आप को क्या बताना चाहता है और उसे नीचे लिख लीजीए। आप इस तरह के प्रश्न पूछना चाहते होंगे, "क्या मैं प्रशिक्षण काल के रिश्ते में अधिक समय तक रहा? क्या मैं अच्छी आत्मा में अलग हो रहा हूँ? मेरा प्रिक्षण काल का अनुभव कम से कम कितना लम्बा होना चाहिए? क्या मैं अपने निजी जीवन में अच्छे शिक्षक होने के गुणों को अपना रहा हूँ?"

शिक्षक का पुनर जाँच कार्यपत्रा

शिक्षक का नाम _____ दिनांक _____

शिक्षार्थी का नाम _____

निम्न के मुताबिक स्वयं को अंक दें

१. बुरा
२. अच्छा
३. बहुत अच्छा

मैं आदेश देने के बजाए प्रश्न पूछ रहा हूँ	१	२	३
मैं शिक्षार्थी के उपहारों को उभार रहा हूँ	१	२	३
मैं कहानियाँ बता रहा हूँ	१	२	३
मैं दैवी प्रारम्भ पर निर्भर हूँ	१	२	३
मैं अपनी सीमाओं से सचेत हूँ	१	२	३
मैं इस व्यक्ति को एक नग के रूप में देखता हूँ,			
जिसे कुछ समय के लिए मुझे दिया गया है।	१	२	३

यदी आप यह पाते हैं की आप को किसी क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो आप परमेश्वर के साथ कुछ समय बिताए और उससे मदद मांगें, या अपने शिक्षक के पास जाकर मदद माँगें।

इस पत्रे को छापने की अनुमती मार्क और पैटी से प्राप्त है।

परिशिष्ट 'अ'

शिक्षा देने की रीती का एक नमूना कार्यक्रम

सामान्य रूप में शिक्षा देना, उपदेश देना, प्रशिक्षण देना या चेला बनाना हर एक के जीवन का एक भाग है चाहे वे उसे पहचानें या न पहचान पाए। सामान्य शिक्षा में यह अवश्य है की आप कई सामान्य गुरुओं का अनुभव करें जो आप को कई क्षेत्रों में प्रशिक्षण दें और तब आप शिक्षा पूर्ण करेंगे। इस समय अमरीकी शिक्षा इतिहास में अनुभव सम्बंधी हैं, बजाए असली जीवन कला की शिक्षा के। मैं समझता हूँ की यह बदल रहा है।

शिक्षा काल का एक नमूना कार्यक्रम :

आप के साथ एक शिक्षा देने के क्रम का नमूना बाँटना चाहता हूँ जिसे मसीही नायकत्व विश्वविद्यालय, कहा जाता है जहाँ प्रथम पध्वी, बड़ी पध्वी, सर्वश्रेष्ठ उपाधी प्राप्त होती है, यह शिक्षा का उपयोग कर निजी खोज पर अधिक ध्यान देती है, जीवन को बदल देती है, कहानी पर केन्द्रीत है। पवित्रात्मा से दैवी मुलाकात के लिए मार्गदर्शन करती है। आप इसे बाहर से प्रथम पध्वी द्वारा प्राप्त कर सकते हैं या इससे जुड़े किसी गिरजाघर में आयोजित कार्यक्रमों के द्वारा, जिसे वहाँ के पादरी चलाते हैं।

यदि आप इस शिक्षा सम्बंधी कार्यक्रम से प्रभावित हैं और इस में भाग लेना चाहते हैं, तो सम्पर्क करीए मसीही नायकत्व विश्वविद्यालय १४३१ बुल्लिस रोड, एलमा, न्यू चार्क १४०५९, ७१६-६५२-६९९०, ई-मेल सी एल पूनी @ एओ एल, काम आप पूरी सूची को देख सकते हैं > एच टीटी पी//डब्लू (3), सीएल यबनीव.एडु<

कुछ और शब्द नहीं :

प्रशिक्षण काल निम्न कहानी को बताते हुए इस प्रशिक्षण काल पर आधारित पुस्तक को समाप्त करना अच्छा होगा। यह कहानी है आबा फेलिक्स की, जो एक विराण पादरी थे।

कुछ भाई मिलर आब्बा फेलिक्स के पास गए और उन से कहने, लगे की वह उन से कुछ बोलें, पन्तु वह वृद्ध आदमी मौन ही रहा। जब उन्होंने कई बार उन से बोलने को कहा, तो वे उनसे बोले, "क्या तुमा सच में कुछ सुनना चाहत हो?" उन्होंने ने कहा, "हाँ, अब्बा" और वह वृद्ध उन से बोला, "आजकल कुछ कहने को बचा ही नहीं है। जब भाई वृद्ध व्यक्तियों से सलाह लते थे तो वही करते थे जो उन से करने को कहा जाए, परमेश्वर ने उन्हें बताया की कैसे बोला जाए। परन्तु अब क्योंकि वे जो सुनते हैं उसे करते नहीं, इसलिए परमेश्वर के शब्दों की कृपा वृद्धों से हटा ली है इसलिए उनके पास कहने को कुछ रहा ही नहीं, क्योंकि अब उनकी बात मानने वाला कोई नहीं रहा।" इन बातों को सुन कर भाईयों ने दर्दभरी आवाज निकाली और कहा, "आब्बा, हमारे लिए प्रार्थना कर"।

काश हम उनमें से हों जो सुन कर करते है, ताकी रौशनी और भी तेज़ चमंके जब तक की मसीह की पूरी रौशनी हमारे मनो में नहीं डूब जाती। शलोम।

निजी प्रार्थना पत्र

इस पढाई से परमेश्वर आप को क्या सिखाता है और यहाँ से वह कहाँ लेजाना चाहता है?

टिप्पणियां

आज की दुनिया में प्रशिक्षणकाल सब से आदर्णीय रास्ता है शिक्षाका। यह पूरे इतिहास में साबित हो चुका है, यीशु नासरी द्वारा प्रयोग में लाया गया जब उन्होंने बारह चेलों को शिक्षा दी और अब अमरीका में उन्नती प्राप्त शिक्षको द्वारा दुबारा लाया जा रहा है।

ऐसे समय में जब परिक्षा के फल गिरावट पर हैं और पाठ्यक्रम ऐसे हैं जिन का आज के जीवन के लिए आवश्यक कला से कोई रिश्ता नहीं है, तो गुरु द्वारा शिक्षा पाना शिक्षा के क्रम में सब से आवश्यक है।

डॉ मार्क विर्कलर और उनकी पत्नी डॉ पैटी विर्कलर दोनो नायकत्व के लिए शिक्षार्थी बने ते कई तरीको से और कई क्षत्रो में। उन्होंने ५० पुस्तके लिखी है और इस वक्त मसीही नायकत्व विश्ववीद्यालय के अध्यक्ष है, जहाँ से वे इटरनैट व्दारा कईयों को शिक्षा देते है (पुस्तकों और कैस्टों और निजी बात चीत द्वारा)। उन्होंने ने अपने दोनो बच्चो, चैरीटी और जोशुआ को शिक्षा देकर शक्तिशाली, प्रोढ नेता, परमेश्वर के लिए बनाए है।

नायकत्व के लिए शिक्षार्थी बनना

- उपदेशकों, प्रशिक्षकों और गुरुओं में भेद देखीए
- सीखीए, एक अच्छे गुरु में क्या होना चाहिए वह
- सीखीए, शिक्षार्थी काल के रिश्तों में किस तरह प्रवेश करना है और किस तरह निकलना है
- जानीए, की यह रिश्ते दारी कितनी लम्बी होती है
- जानीए, की कितने तरीकों से आप शिक्षा पा सकते हैं ।
- अपने जीवन को जाँचकर देखीए की आप के गुरु कौन थे
- वह अगला क्षेत्र पहचानीए जिस में परमेश्वर आप को गुरु देना चाहता है।